

मार्गिक-सम्यक्तत्त्व किसी-प्रकार में-भेषमें-किरिया में या दौग में नहीं है परन्तु एक यथार्थ श्रद्धानाम है. जो जीवादि पदार्थोंका निश्चयिक व्यवहारिक द्रव्यादि सामग्रीके प्राप्ति के योग्य-पथार्थ (जेमहि वैसाही) श्रद्धान (ज्ञान पने युक्त परितित) करतेहै वोही सच्चे स सम्यक्त्वी कहलातेहैं. कि जिनोकी आत्मा रागद्वेष विषय कषाय मत मतान्तरके झगडेसे विमुक्त हो कृष्ण नगन्दवत एकांत गुण संग्रह मेही तत्पर रहती है.

“ओम्” यनीपर धाडे पडतेहैं” इस कहवत मुझवही ऐसेजो सम्यक्तत्त्व स्वरूप महा नि यानके धाम्यक होतेहैं, उनके माल का हरण करने नाश करने विना कारणही मिथ्यात्वीयों प र्य न कमनेहैं. उनका सर्व स्वय हरण कर मरणान्तक पहुँचा देतेहैं, परन्तु जिनोंने एहिक मुक्त मामर्गकों श्रौण भंगूर-विनश्वर जानलीहै, वो ऐसे परम सुखदायि सम्यक्त्वका नाश कमनाते. इस महा परन्तु किंचित मात्र बदामी नहीं लगने देतेहैं. इन गुणोंका हूबहु स्वरूप ई म सम्यक्तत्त्वामय” राममें जयसेण विजयसेणके कयनकर दर्शाया गयाहै. इसके दो विभा गोंमें सप्रथम भागमें तो पुण्य परतापके दर्शाने वाली धर्म मिश्रित कौतुक रूप कथाकी क थनीहै. और दूसरे भाग में-सम्यक्त्वी के लक्षण आचरण और उनकी सम्यक्तत्त्व धर्मसे च लित करने मिथ्यात्वीयों कैसी योजना पर्यन्त करतेहैं, उससे सम्यक्त्वियों अपने प्राप्त र-

- ११) धाराभी भी पुरुषोत्तमपञ्चमी अथवा त्रयी द्वीपमग (विगयेर उत्तरी)
- १२) धाराभी भी बलभारतपञ्चमी धारीशान्क इनदीसने (हैद्राबाद)
- १३) धाराभी भी औचपञ्चमी पुरुषोत्तमपञ्चमी, रुद्रर-मोरापूर (हैद्राबाद)
- १४) धाराभी भी भास्करपञ्चमी तांतेड कुचंग-पारचोड गांव (हैद्राबाद)
- १५) धाराभी भी पुरुषोत्तमपञ्चमी द्वीपमग-विगयेरकी उत्तरी
- १६) धाराभी भी मगनोरमपञ्चमी रावचैदजो, पांतेचो, (हैद्राबाद)
- १७) धाराभी भी दोयनगदकी छोरीपञ्चमी घोंटे (हैद्राबाद)
- १८) धाराभी भी दोननचानकी चन्द्रपञ्चमी, पांतेचो, (हैद्राबाद)
- १९) धाराभी भी दोयनगदकी कंठरीचरकी नदचड, पारचोरी- (हैद्राबाद)
- २०) धाराभी भी कासगदकी शिवमहापञ्चमी, पेरोरगंच (हैद्राबाद)

इस सदसद्वरधोंकी तर्फ से यह ग्रन्थ अमूल्य भेट कर कलजता हूँ ममजनाहूँ-

रत्नव्य पापपता का इच्छक

भजानन्ददास व्यास महेंद्र महापञ्चमी ज्ञाना प्रसाद जोहरी,

(दक्षिण) हैद्राबाद चामकमान, बीगड २४२१ दीपचान्द्रा.

प्रथम
पेठें प्यारे
तणी
पामस्यु
लग
बंदे
तनुता
मग
पुठ
भणी
नगद
बिग्या
अपणो
बंदे
तजे
गगन
युगत्रिया

०
पेठें मे घारे
तणो
पामस्यु
लग
बंदे
तनुता
मग
पुठ
भणी
नगद
बिग्या
अपणो
बंदे
तजे
गगन
युगत्रिया

नयनां श्रुत
हर्यन्त
धोवे पाछे
आया
अरीमो
नाम
दीये
पुक्ति
यहां
अत्ताने
०
मंकीर्ण
धारे
वयो
मोहरो
०
माने

मेमांश्रुत
मोयें स्पन्द
पाछे
आया
आदि सो
नम
दीये
पुक्ति
वरो
अत्ता जे
मेहल
मंकीर्ण
धारे
कयो
मोहरो
॥४॥
मान

२ ४ ० १ ८ ॥ ८ १२ ९ ८ १२ ९ ९ ८ ॥ १० ५

११ १८ १२ ८० ॥ ११ ११ ११ ११ ८२ ८४ ८८ ८९ ९० ९२ ९३ ११ ९४

| | | | | | |
|-----------|------------|-----|----|----------|---------|
| कर गय | करराय | ११५ | १० | स्यात | स्थान |
| पञ्चग्वी | मध्यवर्गभी | १२१ | ६ | आशा | आशा |
| अय | आया | १२८ | ६ | द्रुडाइ | द्रुडाइ |
| पञ्चपन | मेनरपन | १३१ | २ | यो जेतो | आजतो |
| तोषीया | तोषीया | " | ५ | ॥डेरे॥ | ॥ओंकडी॥ |
| मणीद्र | मध्यस्त | " | ६ | नेटा | नेटा |
| त्रय | ० | १३२ | १ | कहो | कहां |
| त्रयरीर | नयरीर | " | २ | करसो | करसो |
| नय हुवा | मंग हुवा | १३३ | १ | आयो | आयो |
| नक | नाक | " | ६ | यह | ० |
| परमानन्दी | परमानन्दी | १३४ | १ | ॥१॥१॥ | ॥१॥ |
| मंश | मंश | " | २ | पाय | पाप |
| ताक | ताका | " | ६ | पाश्चर्य | आश्चर्य |
| लाय | लाया | " | ७ | द्रु | ० |
| मान्नी | मान्ना | " | ८ | के | ० |
| भगड | भगसाइ | १३५ | " | मिती | मिती |
| द्रुवायो | द्रुवायो | " | " | मेख्या | मेख्या |

दो० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
 ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
 ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
 ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
 ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥
 ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥
 ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

रायम् ॥ १५ ॥ ०४ ॥ मांडलिकः प्राता पात । मम ॥ १६ ॥ चतुष्पद नृप मिह
॥ १७ ॥ ०५ ॥ राय नन्दन हांय । शूरवीर अरी गंजना । मञ्जन धर्मी मन मोय ॥
॥ १८ ॥ ०६ ॥ दशान्वहा कहे महीपति । विज्ञानी वयण प्रमाण । पीडियों लग स्वा-
॥ १९ ॥ ०७ ॥ आ नाचका गजान । मम ॥ २० ॥ भुशी हुई परिहित गया । नृप
॥ २१ ॥ ०८ ॥ अभ उगाय । गर्भपाले दोष टालती । रहा नित्यानन्द धृताय । मम ॥
॥ २२ ॥ ०९ ॥ गन पुण्यान्ध पमाय से । राज लक्ष्मी वृद्धिपाय । तीन मान्य यों बीतीयो ।
॥ २३ ॥ १० ॥ शन दाहिनी प्रगटाय । मम ॥ २४ ॥ पुरुष देश शस्त्र सजी । करी मैना मंग
॥ २५ ॥ ११ ॥ कीदा रू खने बिबे । शरमी अरति घरे ते बार । मम ॥ २६ ॥ झंग र-
॥ २७ ॥ १२ ॥ नृप जाणा डोहल का भेद । दी आज्ञा शीघ्र पूरिये । जो उपनी
मन समझ । मम ॥ २८ ॥ डोहलो पूयो हृष्ट्या मह । जाण्या उदर में पुण्य हाल ।
साथ यमान समझिनो तस्ये । ये पभणी पहिली ढाल । मम ॥ २९ ॥ दुहा ॥ मु-
पान निन्य सायनी । दे चउदह(१४) प्रकारे दान । धर्मोन्नतो करनी मदा । धर्मात्मा को

मदा गते मस्य नीलो । मोक्षो जगन्न देख ॥ इपं ॥ १ ॥ श्रीमति नामे हो राणी
नागर्ग । दुर्भानि रानि मदाय ॥ इपं ॥ रूपे मोहामणी हो गुण अलखामणी । कपट
दण्ड में रमाय ॥ इपं ॥ २ ॥ निज २ मंचित हो पुण्य प्रमाण से । सुख, यश, धन
जन पाय ॥ इ० ॥ मर्त्य मिदावे हो देखी सुख पारके । पुण्य विना कैसे सो थाय ॥ इ०
॥ ३ ॥ तर्कद्वन्द्व सृती हो सुखे निज मेज में । स्वप्न लियो सुखदाय । शभा भराणी
हा मार्ल । राणी निण विपे । विषम नीचब्धोजी न्याय ॥ इपं ॥ ४ ॥ यों देख हर्षि
हा जार्ग तन्विण । प्रीतम पाम जो आय । मधुर वचन से हो नृप को जगाविया ।
मरप्र विगनन जणाय ॥ इपं ॥ ५ ॥ सुणी आनन्दि हो राजाजी यों कहे । पुत्र होवे-
गा गुणवन्त । न्याय विशारद हो मजलस रंजणों । प्रजा तात महन्त ॥ इपं ॥ ६ ॥
श्रीमर्नि दरीं हो आइं निज स्थान के । करे गर्भ प्रतिपाल । सुखे २ वीत्या हो माम
मया नौ नदा । जन्म्यों पुण्यवन्त बाल ॥ इपं ॥ ७ ॥ जैसे पंक से हो कमलज
नीपजे । मूर्तिका में उमे हेम ॥ चार समुद्र में हो मुक्ताफल हुवे । ए पुण्यात्म

हुवा नेम ॥ ८५ ॥ ८ ॥ पारिजन जीमाह हो स्थापे नामने । गुण निग्यत्र 'न्याय-
 मेण' ॥ चंपकन्तता हो मुक्त गणी परे । वृद्धि होवे हर्ष भेण ॥ ८६ ॥ विज्ञावय मे
 हो पढाह सवो कला । धर्म ज्ञान मन्मंग ॥ प्रवीन भया मो हो स्वल्प ही कालमे ।
 करे किडा उदरग ॥ ८७ ॥ जय विजयने हो माथ रमे मदा । लघु जाणी ते
 धर प्रेम ॥ परन्तु पुग्याह हो जुदी २ नरतणी । पवि उतनो ही खेम ॥ ८८ ॥
 जय विजय का हा पुग्य प्रचल अति । ते लगे दाम समान ॥ देखी श्रीमति हो
 चित्त म प्रचने । आन गेट ध्यावे ध्यान ॥ ८९ ॥ राजाधिपती हो होसी
 दोनो चन्ध्या । मुक्त पुन जन्म दुःख पाय ॥ काह उपावे हो हणानु दोनो भणी ।
 ना मुक्त पुत्र मुग्धा थाय ॥ ९० ॥ बल छिद्र बहु विष हो देखे दोहका । करे
 काह मागण उपाव ॥ पुग्य बली जह जेहो जय विजय घणा । लागे नहीं एकी
 दाव ॥ ९१ ॥ ९१ ॥ चिन्तानुर्ग हो हुं श्रीमति घणी । अन्नादक नहीं भाय ॥
 निद्रा रीशानी हो विशाणी मदा रहे । नयने नीर बहाय ॥ ९२ ॥ एकदा

आड हा एक जोगर्णी निहां । जाणेंत विद्या अनेक ॥ श्रीमति पेखी हो लखी
 चित नन्विणें । बोलें मा धरती विवेक ॥ इपं ॥ १६ ॥ विद्या बल से हो जाणी
 में आपेकें । चित में चिन्ता हे पूर ॥ मो प्रकाशों हो महारें सन्मुखें । करुं चिण-
 में दुःख दूर ॥ इपं ॥ १७ ॥ इन्द्रवशा आणू हो दीपक रवी करुं । हरुं चिणें शत्रु
 का प्राण ॥ मृत्यु मर्वा मानों हो कहनी माहरी । करुं तुम कहा प्रमाण ॥ इपं ॥
 ॥ १८ ॥ निशंक कोड हो कहों मुझ पन तर्या । तुम हम बीच भगवान ॥ तुम
 दुःख देखी हो मुझ मन दुःख घेरें । दी हे तिण्ठ्या जवान ॥ इपं ॥ १९ ॥ गुणी-
 जन तुमवा हो धर्माया हम भारी । तबही कही मन बात ॥ प्रभा न रखा हो
 हम जगमें कोड का । हम गर्णी ने प्रचात ॥ इपं ॥ २० ॥ इच्छित मिलीयो हो
 राणी ने आयनं । ढाल दृमर्ग मांय ॥ अरुि अमोल कहो पुण्य प्रतापसे । चि-
 घन मर्वा विरलाय ॥ इपं ॥ २१ ॥ दोहा ॥ श्रीमति हर्षी अति । सुणी जोगण
 ना वण । नुधिन भोजन लह हुये । त्यो फुल्या राणी नेण ॥ २ ॥ करामातण

जोगण भणी । जोगी अनि होश्याग ॥ भाग्ये आइ माहिरे । द्विजे चिंतित करु
 पार ॥ २ ॥ मन्माना घणी जोगणी । आगन ऊंच वेठाय । अन्न चमन इच्छित
 देह । माना तय उपजाय ॥ ३ ॥ नरसी कहे थे ज्ञानी हो । जाग्यो महारा दुःख ॥
 त्रिम बोल्या तिमही दर्ग । अती मुक्ते मुख ॥ ४ ॥ दुःख मव दाख्यो मन तणा ।
 सुणी जोगणी ह्याय ॥ किंचित फिकर न कीजिये । यह तो महज उपाय ॥ ५ ॥
 दान ३ गं ॥ चार नृपान अन्यदा ममय ॥ ये देशी ॥ श्रीमति हर्षित हुडे ।
 जोगी जोगण करामान ॥ हो भाइ ॥ जोगण पण हर्षित हुडे । जन्म को
 अश्रय चदान ॥ हो भाइ श्री ॥ १ ॥ कहे गणीजी देखिये । थोडा ही दिन
 के मांय ॥ हो चाड ॥ मारुं दोनों बन्धवा । करुं भें गुप्त उपाय ॥ हो भाइ ॥
 श्री ॥ २ ॥ एकान्त जाय ग्या भणी । दांनी तन सुखकार ॥ हो भाइ ॥
 और मामग्री मव दावा । विद्या माधन तोय हो भाई । श्री ॥ ३ ॥ जोगणी आ-
 गधन जोगण क्यो देवा प्रगल्भ होय हो भाई । क्यो चितारी मुक्त भणी । कहे

कायं तर्हि योग हा बाई । श्री ॥ ४ ॥ नमन करी कर जोड़ के । जोगण कर अ-
 रदास हा भाई । गुरु मित्राणी श्रीमति तर्णी । पुरे शीघ्र तुम आस हो माई ।
 श्री ॥ ५ ॥ गन भग मन फेरी करी । जय विजय की घात कराव हो माई । राज
 पिता . या पद्मनाभ न । तेमो करो उपाय हो माई । श्री ॥ ६ ॥ ज्वाला भणे इण
 काये स . भामान दुःख पाय हो बाई । कुमर दोनों महा पुण्यवन्त है । मार्यो कि-
 मयो . न नाय हा बाई । श्री ॥ ७ ॥ दुख सुख रूप तन होवमी । तोपण राखण
 तम . मन हा बाड । उपाय रनुं ऐसो हिवे । होय श्रीमति चिन्तन हो बाई । श्री ॥
 - ॥ ८ ॥ इस पभली मरी गंद । जोगण राणी पाम द्याय हो भाई । कहे चिन्तित
 रामे . तम नणा । मिट हुबो कियो उपाय हो बाई । श्री ॥ ९ ॥ दोनों हर्षी सुखे
 रद । गन मंग . मय मांय हो भाई । कहे नृप को मावय हुबो । भ्याने घरो मुक्त
 नाय हा भाई । श्री ॥ १० ॥ मे कुलदेवी तुम तणी । चाहे कुल को स्वम हो
 भाई । या योग होतव जाणुं कोइ । तो चेतावुं घर प्रेम हो भाई । श्री ॥ ११ ॥

त्रय विजय तुम ननु जनों । होभी तुमको दुःख कार हो भाई । निग कारण दोनों
मर्णा । जीव न्दखायो मार हो भाई । श्री ॥ १२ ॥ बेरी और व्याधी अंकुर मे ।
करनी नान्निग नाग हो भाई । तो आगल वधे नहीं । यह नीति वनन विना
हो भाई । श्री ॥ १३ ॥ मन्य बात ये मान जे । कजे जो दिन चलाग हे
नही वग फिर हे मांहगे । यों कही देवी जाय हो भाई । श्री ॥ १४ ॥
नव हो भर्पति । चिन्ता व्यापी अपार हो भाई । अमंभव बात केंमे वणे । देव मि-
थ्या न कर उचार हो भाई । श्री ॥ १५ ॥ कहे श्रीमति ने जगाय ने । स्वप्न तणो
प्रितनंत हो भाई । श्रीमति कहे मुक्त ने यदा । ये ही स्वप्न आवंत हो राजा । श्री
॥ १६ ॥ नृ कहे अमंभव बात ये । दोनों कुंवर विनयवंत हो राणी । कुल भूषण
दयाग विना । किम मुक्त दुःख करंत हो राणी । श्री ॥ १७ ॥ राणी कहे अहो
नाथ जी । लोभ पाप को वाप हो राजा । होती आई अनादि मे । जाणो ओ
गान्ध ने आप हो राजा । श्री ॥ १८ ॥ स्नेह मगण लोभी न गिणे । राज

लक्ष्मी के काज हो राजा । केई मर्या मरसी केई । जो गफलत में रह्या
हो राजा । श्री ॥ १६ ॥ मन्देह नहीं अम्बा वयण में । चेता गई हित काम
हो राजा । कालिज मुक धूजी रह्यो । कुशल रख्यो अहो राम हो राजा ।
श्री ॥ २० ॥ मानव रह्यो नाथजी । करो योग्य शीघ्र उपाय हो राज । तृतीय
ढाल अमोलक भर्णा । राणी का चिन्तित थाय हो भाई । श्री ॥ २१ ॥ दोहा ॥
राणी सुरी का वयण मुण । नृत्यति अति विस्माय । कूल भूषण मुक नानख्या ।
किण विध मार्या जाय । ॥ १ ॥ विप वृज हथे लगाविया । ते पिण नहीं कटाय ।
कल्प वृज मम ननु न दो । धिन गुन्दे किम मराय ॥ २ ॥ जन्म से आज दिवस
लगै कयो न कोई अन्याय । आण न उल्लंघी माहेरी । ते किम होवे दुःख दाय ।
३ ॥ कदा राणी मांक मार मे । बोले भिथ्या वेण । पण देवी कयो भिथ्या लवे ।
आश्रय अधिक पकेण ॥ ४ ॥ यो चिन्ता मागर विषे । राय गोता रह्या खाय ।
ग्याड कूप के मय रह्या । सुचे ना कोई उपाय ॥ ५ ॥ ढाल ४ थी ॥ चैदरवी मे

मन वस्यो ॥ यह देखी ॥ उचम अपमान मेहे नहीं । नीच न लाज न आय हो ॥
लाल । केजरी जावे एक वचन मे । शान धुकरी बहु आय हो लाल ॥ उत्तम ॥ १ ॥
निश्रय मन मदीपनि कीयो । मारण में नहीं मार हो लाल । वस्यवृत्ति महारे
कहं । ज्यों न होवे कोढ़ विगाड हो लाल ॥ २ ॥ निजर कैदी कर के रखूं ।
बाहिर न जान पाय हो लाल । बिना चेतायां विन हुकम मे । महारे पास न आय
हो लाल ॥ ३ ॥ फिर किम दुःख देखी मुक्त भणी । जर्चियो एही उपाय
हो लाल ॥ बोलायो दगवान ने । शक्त हुकम यों फरपांय हो लाल ॥ ४ ॥
कुमरो ने मेरे हुकम दिना । जाने न देना बाहर हो लाल ॥ तैसे न आवे मेरे कने ।
वान मन करना जाहिर हो लाल ॥ ५ ॥ यों पुहो वन्दोवस्त करी । निश्रिन्त
रहे गजान हो लाल । प्रांने तात चरण वन्दवा । कुंवर आया दोडी स्थान हो
लाल ॥ ६ ॥ दगवान रोक्या तरिछिण । कहे पूछ आवूं इणवार हो लाल ।
फिर आप अन्दर पधारजा । हुकम कियो दरवार हो लाल ॥ ७ ॥ खेदाश्रय

अनि पाइया । दोनों कुमर तत्काल हो लाल । किम आजही रोमया जावता । हुवा
कांड हवाल हो लाल ॥ ३० ॥ ८ ॥ आपण जाण अजाण में । कीनो नहीं को
कमर हो लाल । बिना गुन्हें आज अपणने । नृपति राख्या दूर हो लाल ॥ पुएयें आया
६ ॥ अपमान ग्यान ज्ञाण एकही । रहणा जुगता नाय हो लाल ॥ ३० ॥ १० ॥ अटन किया
राजकुल विप । आगे भा पुण्य संग आय हो लाल । चातुरी बल बुद्धि बढे । यों चिन्तव
अन्य दंग में । भाग्य परिचा होय हो लाल । चातुरी बल बुद्धि बढे । यह तो मोटो दुःख हो
ने दाय हो लाल ॥ ३० ॥ ११ ॥ परवश पणे इहां रहवो । यह तो मोटो दुःख हो
लाल । परंदेशे फिर आपण दिवा । भोगों स्वेच्छा को सुख हो लाल । निति वचन ए है
निगम अमान सही करी । पडबा रहें तेही ठाम हो लाल । निति वचन ए है
खरो । सुन्न तर्जा लहे आराम हो लाल ॥ ३० ॥ १२ ॥ ॥ श्लोक ॥ त्रय स्थान
न मुन्यन । काका का पुरा मूगा । अपमान त्रयो यांति । मिह सत्पुरुष गजः ।
॥ ३० ॥ १३ ॥ दाल ॥ इस मोची माहम घरी । आया मेहल के दार हो लाल ।

लाल ॥ मुरत्व घरसिंह सारस्वा । चले दोनों कुमार हो लाल ॥ उ० ॥ १८ ॥
 शकुन श्रेयकार तव भया । अद्धि सिद्धी दातार हो लाल ॥ समझा हर्षाया
 घणा । मीन्या कला के मझार हो लाल ॥ उ० ॥ १९ ॥ निश्चयवादी चन्नि
 कुली । उर सोच नहीं को लगार हो लाल ॥ विश्वास्या सुशकुन से ।
 चलिया उत्महा अपार हो लाल ॥ उ० ॥ २० ॥ पुण्यात्म पगले पगले । पावे सुख
 विशाल हो लाल । अपि अगोल ने यह कही । रसीली चौथी ढाल हो लाल ॥
 उ० ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दुहा ॥ जामान्तर नरपति तदा । संभार्यो कुमार । बोलाया
 मिलिया नहीं । तव भय पायो अगार ॥ १ ॥ रखे किहां ही गुप्त रही । करे अ-
 चिन्ती घात । ढुंढावे अति खंत से । दारपाल तव आत ॥ २ ॥ दार पत्र जे
 लगावियो । कहा सहु समानार । नृप सामंत साये लही । तत्क्षण आया द्वार
 ॥ ३ ॥ पाँदिया श्लोक तिहुं प्रकट तहां । अर्थ समझा सब भूप । परसंस्ये खुल्ले
 मुखे । हाहा बुद्धि अनूप ॥ ४ ॥ चिन्ते नृपति श्रेय भयो । सहजे टलियो पाप ।

में भी यहां निश्चित रहूँ । तेभी न पाया त्रास ॥ ५ ॥ दोनों कुमार की मात सुण ।
 दुःख ते पाठ अपार । श्रीमति हर्षि घणी । करण पुत्र सिरदार ॥ ६ ॥ चिन्तित
 न हुये कोढ़ को । होवे जो हाण हार । श्रोताजन आगल सुणों । जय विजय
 अधिकार ॥ ७ ॥ छ ॥ ढाल ५ मी ॥ चालुठा तूं संग न जाजेरे । पाछो घर
 बेगो आजेरे ॥ यह चाल ॥ पुण्य फल भव्य जन जोजो जी । पुण्य करवा उ-
 त्पन्न होजो जी ॥ टेर ॥ जिम २ कुमार आगल वधे । तिम २ शकुन श्रेय थाय ।
 चिन्ते ठण वन नें विपे । महा लाभ मिले किस्यो आय ॥ पु० ॥ १ ॥ आगल
 विषम रम्य वन में । शीघ्र जावे देखत विनोद । मथ्यानें लुधित भया । लियो
 विश्राम धरी प्रमोद ॥ पुण्य ॥ २ ॥ मिष्ट निरोग फल भोगव्या । पीयो शीतल
 मृगणा को नीर । वात वनावे प्रेम की । बैठा तरु तल दोनों वीर ॥ पुण्य ॥ ३ ॥
 दृपटो वीर्याइयो । भुज उसीस्थो तल देय । थाक प्रमाद निवारने । तहां भूमी पे
 मृना नेय ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ जैसे वक्क आइ पडे । सुज्ञा होवे उसी प्रमाण । खेद न

२८ निमग्न । पल गेही पाया विलान ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ लघु बन्धव निद्रित भया
॥ ६ ॥ अंग निशित ॥ जय जी पड़े विचार में । पूर्व पश्चात् कंठ चिन्तित ॥
७ ॥ ८ ॥ तैर्हाज बट ना वृत्त पे जी । यक्ष दुगल मुखे रेय । देखी दोनों
९ ॥ १० ॥ ११ ॥ दक्षणी कर जोड़ी कंद ॥ पु० ॥ ७ ॥ प्राणेश आज अपने घरे ।
१२ ॥ १३ ॥ रात्र दुसार । तानी गुणी पर्मात्मा । योग्य करो यारो मत्कार ॥
१४ ॥ १५ ॥ यक्ष कहें सुगुणी प्रिया । वक्त भली चेताइ मोय । घर आया मा
१६ ॥ १७ ॥ हूं तोपु दिवशा दोग ॥ पु० ॥ ६ ॥ त्रिजगे मिलणी दोहली ।
१८ ॥ १९ ॥ हूं तोपु दाम । ते इनके अर्पण करी । हूं तो पूरुं गहारी आस ॥ पु०
२० ॥ २१ ॥ हवां दम्पति मानव रूपे । प्रकटे जदनी ने पास । नमन कियो प्रेमातुरा ।
२२ ॥ २३ ॥ कर अस्मदा ॥ पु० ॥ ११ ॥ भले पदार्थ प्राहुणा । आज पवित्र आंगण
२४ ॥ २५ ॥ अंगली भित्री करों । तुम भुक्ता हो राज रिय ॥ पु० ॥ १२ ॥ अम-
२६ ॥ वस्तु त्रिहं मुक्त कने । कृपा करो करो अंगीकार । आप लैसा पुण्यात्म के

ढाल पंचम अमोलक भणी । आगे रसीली कया मुख ॥ पु० ॥ २१ ॥ ॐ ॥
 दुहा ॥ जय जी मन आणंदिया । पा लाभ अपरंपार । सूता लघु बंधव कने ।
 रही न चिन्ता लगार ॥ १ ॥ महा औषधी प्रभाव से । उपसर्ग न जरा होय ।
 निशी मर्व तहां ही रहा । सुखयी कुमार दोय ॥ २ ॥ प्रात जय जी जागीया ।
 विजय भाणी जगाय । नित्य नियम स्थिरचित्त कियो । तेतले रवी प्रगटाय ॥ ३ ॥
 प्रेमानुर जयजी हुई । लघु बन्धव को जणाय । पूर्व सुकृत्य यहां फले । अमूल्य
 त्रिवन्तु पाय ॥ ४ ॥ यत्न युगल की भक्ति को । कल्यो सर्व विरतान्त । देखाई
 तानों वस्तु ते । विजय भी अति हर्षत ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल ६ द्वा ॥ पियाजी
 यांरा चित्त मांटे कांइ वसी ॥ यह चाल ॥ देखोजी भाइ भाइतणी प्रीति । कहां
 देखिये जग में रीति ॥ देखो ॥ ६ ॥ राजमन्त्र विधि सहित बताया । आण
 के प्रेम अति । अति अग्रह कर ताम सिखाया । देने राज चीति ॥ देखो ॥ ७ ॥
 कपट रहित सो मन्त्र यादकर । करता विचार चिति । राजघणी जेष्ट बन्धव

होय यह शास्त्र की नीति ॥ देखो० ॥ २ ॥ अति नम्र हो मिष्टव्ययण से । यों
 करना विनोनि । पिना मम जेष्ट राज योग्य तुम । अनादि यह वृत्ति ॥ देखो० ॥
 ३ ॥ मे नुम मन्मुख भेवक सो रहं । ज्यों लक्ष्मण सीतापति । इसीलिये विद्या यह
 प्राप मिदकर । होवो भू इन्द्ररति ॥ देखो० ॥ ४ ॥ जय कुमर लघु वन्धव
 नाह । बोलै करण भूपति । बोलै नूं किम् नहीं राज जोगो । न बोली जे अघटति
 ॥ देखो० ॥ ५ ॥ अपन दोनों राज योग्य हां । लक्ष्मण गुण आहृति । दोनों मिल
 मिदकर गह मिद्री । रहकर पुक्त यति ॥ देखो० ॥ ६ ॥ विजय वचन प्रमाण
 करी ये । चेदा जयनटिनि । लघु वन्धव के विश्वास काजे । जयकरे हांग रीति ॥
 देखो० ॥ ७ ॥ मन्त्र जाय तो न करे किंचित । मुख हिलावे निति । देखो प्रेम
 जेष्ट वन्धव का । निलोभी ज्यों जति ॥ देखो० ॥ ८ ॥ तात ज्यों प्रात की आज्ञा
 पानन । विजय गदा स्थिरचिति । यथा विधि साधे साविद्या । देखो लघुत्व वी
 नीति ॥ देखो० ॥ ९ ॥ पग फिरण क्यों परिश्रम कीजिये । जो हे वस्तु अति ।

मर्णा प्रार्थी उडिये गगन में । चलिया शीघ्र गति ॥ देखो० ॥ १० ॥ विद्याधर
 नम निर्गुण प्रकारे । क्रीडा करत चीति । संत सर्तियों के दर्शन करते । सुने
 व्याख्यान गीति ॥ देखो० ॥ ११ ॥ छुधित हुवे तेहि मणी पसाये । नीपाय भोजन
 इच्छान । शाल दाल पकान व्यंजन तोय । सरस सुखद बहुभांति ॥ देखो० ॥
 १२ ॥ उचम भूषण वस्त्र मजे सदा । दान पुण्य करते विति । देवसमा यों सुख
 भोगवों । जाय आनन्दे मिति ॥ ॥ देखो० ॥ १३ ॥ यों फिरता ते दिवस
 साते । रामपुर न थंकरति । उत्तरे आइ वाग मांही । हों जो नगरा कृति ॥
 खों ॥ १४ ॥ साक्षात् जाने स्वर्गपुरी ये । दिव्य ज्योति भलकति । चिन्ते चित
 मे जय जाते वारे । आज भाइ ले राजप्राति ॥ देखो० ॥ १५ ॥ पण यह तो गृहण
 न करमा । महारी लज्जावति । इण कारण भेजू इणने ही पुर में । में यहां ही
 लेवुं श्रिति ॥ देखो० ॥ १६ ॥ कहे भाइ मे विश्राम यहां लेवुं । तुम जायो नगर
 प्रति । अनोन्मा यस्तु मिले सो लाज्यो । ना कह जो थे मति ॥ देखो० ॥ १७ ॥

थोड़ी बार मे में भी आवांगा । विजय सरल प्रकृति । मानी वयण चाल कामपुर
 में । विमर्ग बात चिति ॥ देखो० ॥ १८ ॥ आये पुर में तापे घवराये । बैठे पकंति
 जीनि । मार्ग प्रेक्षा करे बड़े भाइ की । प्रेक्षे नगर प्रति ॥ देखो० ॥ १९ ॥ पुण्य
 फले ये दर्मा नगर के । होंवे अन्वी ही पति । कह अमोल सुणो अहो श्रोता ।
 पश्री दान दनि ॥ देखो० ॥ २० ॥ दुहा ॥ ते अवगरे ते पुरपति । अपुत्र्यो मरण
 पाय । अन्यते गार्दी दिया विना । दहन क्रिया न थाय ॥ १ ॥ सामान्त मिल
 मर्मति कर्ष । पंच द्रव्य मंग लेय । फिरे तदा राजपुर विपे । पुण्यात्म कोइ श्रेय
 ॥ २ ॥ राज लालमा बहुत घर । द्रव्य मनुष्य बैठे आय । मंचित विन किम
 पार्मये । द्रव्य अपृठा जाय ॥ ३ ॥ फिरता २ आविया । जहां बैठे विजय कुमार ।
 देव जोग तम ऊपर । बृठा द्रव्य श्रेयकार ॥ ४ ॥ गज गरज्यो हयवर हिंस्यो ।
 कलश दुता निर आय । अत्र अयो चामर हुले । सब सानन्द देख पाय ॥ ५ ॥
 हाल ५ वी ॥ आज आनन्द घन जोगीश्वर आया ॥ यह चाल ॥ पुण्यात्म को

मुम्य मवाया । गज विजय पुण्य पर सायारे लो ॥ सूंडे से गीरी कुंभ स्थले
 वेठाया । उंच उंचो पद पायारे लो ॥ पुण्या० ॥ १ ॥ कुसुम वृष्टि सुर करी कुमर
 पर । गज भूषण मजायारे लो । प्रत्यक्ष देव प्रभाव यह देख के । सज्जन सहु
 हर्षायारे लो ॥ पु० ॥ २ ॥ पुण्य पोरपा जाणी विजयते । जय २ शब्दे वधायारे
 लो । पंच शब्द वाजिन्न वाजे । विरुदा वली बोलायारे लो ॥ पु० ॥ ३ ॥ रूप
 तेज बल आकृति निहाली । नम्या सामांत भूपालीरेलो । हर्षी प्रजा मुखे
 चडीलाली । भांगी चिन्ता कंकालीरे लो ॥ पु० ॥ ४ ॥ आकाश में बोले
 देव वाणी । यह छे उत्तम प्राणीरेलो । सहजन पाल जो राहनी आणा । जो
 चावो मुम्य म्वाणीरे लो ॥ पु० ॥ ५ ॥ यो सुण अरिजन त्रास जो पाया । नमीया
 तरसीण पायारे लो । पुरेन्द्र सम प्रताप जग्यो तस । मेहले चालण सज थायारे
 लो ॥ पु० ॥ ६ ॥ तव कहे विजये म्व धैर्य धरीये । एक महारी कही करियेरे
 लो । मुक्त जेप्र चन्द्र गण गण ठरिये । ताम हकमें धनमरी येरेलो ॥ पु० ॥

१२५५ ॥ १० ॥ १० ॥ जय भाटने जरा विनरे नाही । चीण २ चिने आइर
 ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ लयाड । पण रक्षा घामे फमाइरे लो ॥ पु० ॥ १५ ॥ पुत्र
 ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ नोनि प्रमाणे चालिरे लो । मज्जन जन न घणाही सुहावे ।
 ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ निज राज में हिमा चन्य कराड । कु
 ॥ १४ ॥ १४ ॥ १४ ॥ न्याय चाले ने सहने चलाइ । यो सुन्नी करी प्रजा
 ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ दान शाब्ज विद्या शाब्ज स्वापाइ । अनाथालय की
 ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ धीनि विश्व फैलाइरे लो ॥ पु० ॥ १६ ॥
 ॥ १७ ॥ १७ ॥ १७ ॥ पुनः ते पुण्य में लगाइरे लो । पुण्य में पुण्य की
 ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥ दाइरे लो ॥ पु० ॥ १६ ॥ यों रहे इहां सदा सुख
 ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ सुख मदा' मुन्य दाइरे लो ॥ पु० ॥ १६ ॥ यों रहे इहां सदा सुख
 ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥ सग्यस्त्व उल्लेखे ढाल यह सप्तमी । ऋषी
 ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥ दोहा ॥ जयजी रही अत लिख विषे । देख्या
 ॥ २२ ॥ २२ ॥ २२ ॥ वध भू ह्यो लगी । हुआ मुशी ने अत्यन्त ॥ १ ॥ पण दृष्टे

नदी मितल को । रंगे न्हावे फंद मांय । विदेश कोतक देखन की ।
दृष्ट्या निष्कल थाय ॥ २ ॥ हम चिन्ती मिल्या विना । चाल्या गगन ममार ।
कानक रगिया ज्ञायडा । आनम न कर लगार ॥ ३ ॥ उचमपुरे उतंग गीरे । गह
न यन मर पात्र । उदाधि आदि स्थान के । विचरे हृच्छे त्यांज ॥ ४ ॥ मणी प्र-
भाय पुरंगे । मनोथ मन का मय । पुगयात्माने पगपगे । वरते सदा ही पर्व ॥ ५ ॥
॥ टाल - वी ॥ श्रीगकगय हूं अनार्थी निग्रंथ ॥ यह ॥ श्रोताजन सुणिग्यो
पुगय विरनन । अयंगण कुमर पुगयवन्त ॥ श्रोता ॥ टर ॥ तिण अवसर मही
मटण। ती । अयपर नगर प्रधान । गढ मढ मन्दिर मालीयाजी । अलकापुरी
न ममान ॥ श्रोता ॥ १ ॥ जंत्रमल नाम शोभतो जी । न्यायी तहां को नरेश ।
दाता भूता गुणनिर्नांती । मुग्ध सहु ने हमेश ॥ श्रो० ॥ २ ॥ जेत्री आदि
नानिमाती । अगना रूप शीलवान । पुत्र पांचमो ऊरेजी । एक पुत्री गुण
ग्यान ॥ श्रो० ॥ ३ ॥ जंत्रश्री जीती लक्ष्मी जी । रूप कला बुद्धि तेज । शशी-

वटनी ज्यों मुरंगना जी । पेखत उपजावे हेज ॥ ओ० ॥ ४ ॥ तिणही पुर माहिं
 रंहे जी । कामलता वैश्या अनूप । रुपे लजाइ अयत्तरा जी । तेजे दीपे जेसे धूप
 ॥ ओ० ॥ ५ ॥ चन्द्राननी कुरंग लोचनी जी । शुक प्राण धरुणोष्ट । कम्बू ग्रीवा
 उर उन्नरी जी । सुवर्ण वरण अंगोष्ट ॥ ओ० ॥ ६ ॥ गजगमनी दंतदामनी जी ।
 कामनी माहन बेल । पांचमो दिनार देवे सोही जी । भोगवे ताको खेल ॥ ओ०
 ॥ ७ ॥ जयकुमार आया पुर विपे जी । ऊभा तस घर द्वार । नयन वयन लटका
 कर्गजी । मांहीन काया कुमार ॥ ओ० ॥ ८ ॥ वांची पट मांही गया जी । द्रव्य
 अथार तम दंय । विलंभ सुख पांच इन्द्रिका जी । सदा तहां सुखे रेय ॥ ओ०
 ॥ ९ ॥ मर्णा ताणें प्रशाद से जी । नित्य प्रत वहू मोलमाल । वस्त्र भूषण भोजन
 दिंदे जी । द्रव्य इच्छित तत्काल ॥ ओ० ॥ १० ॥ माता कामलता तणी जी ।
 कपट कला की भण्डार । अक्का वृद्ध वये हुइ जी । जाग्यो लोभ अगार ॥ ओ०
 ॥ ११ ॥ एकदा सा चित चिन्तवे जी । मूर्ख पुत्री मुक्त । लुब्ध एक ही नर संगे

श्री । जाणे न कुल को गुप्त ॥ ओ० ॥ १३ ॥ बोलाइ कहे पुत्री ने जी । अनिष्ट
 वयण करु । ते एक नर धारण कियोरी । फूली योवन के गरुर ॥ ओ० ॥ १३ ॥
 कुलाचार किम थै नज्योरी । भंग कियो लियो नेम । पांचभो मोर नित्य तुम
 दिवरी । नाम्ने ही काजोय प्रेम ॥ ओ० ॥ १४ ॥ कामलता देखीया जी ।
 मर्णा भूय वह मोल । अका खुशी हुइ घणी जी । लोभित हो करे तोल ॥ ओ०
 ॥ १४ ॥ ग्वार्ता हाथ आर्यायो जी । कि हाथी लावे यह माल । विश्वासी पूछे
 पुत्री को जी । कहं न दंढ्या जे हाल ॥ ओ० ॥ १५ ॥ सा कहै छोटा बटवा थकी ।
 कोटटी मांही जाय । वस्त्र भूषण भोजन दिये जी । क्षीण मांही ते लाय ॥ ओ०
 ॥ १६ ॥ नन कहै अका पूछजे तूं । ताम मोह उपजाय । यह करमात हाथे लगे
 तो । दागट आणो विरलाय ॥ ओ० ॥ १७ ॥ तनुजा कहे कांई अछ्यो जी ।
 पद पिन प चान । अनिष्ट लगे जावे तजी तो । मुक्त से विरह न खमात ॥
 ओ० ॥ १८ ॥ नियम से अधिको देवे जी । द्रव्य आपण नित्य तेय ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ न लीजे कोइ को द्वेष ॥ श्री० ॥ १६ ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अह कुमरजी पास । अन्तर नहीं जणवतीजी नित्य
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री० ॥ २० ॥ सुसंयोग्य पुण्ये लहेजी । लोभे मूलही
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ टाल अमोलकेजी । जो वो अफा का उपाय ॥ श्री० ॥ २१ ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अफाने लागो भूतडो । लोभ तणो विकराल । बारम्बार कहे पुत्री
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ १ ॥ अग्रह अति जाणी मात को । एकदा अवसर
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ पड़े जय भणी । फरमावो गुप्त मोय ॥ २ ॥ इच्छित वस्तु
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ जो अतो हम तांय । कहां से लावो स्वामीजी । सबी दो फरमाय ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ किन चिन्तये । जो राखूं मैं दियाय । तो तो भंग पड़े मेम में ।
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ४ ॥ गुप्त कह्यो नहीं कोइने । नारी ने तो विशेष । उत्पात
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ४ ॥ ॥ श्लोक ॥ न कस्यापि प्रकाशितः ।
 गुप्त स्त्रीणां विशेषतः । नस्यै तस्यापि ममोच । मीवस्य किं कुर्वेत ॥ २ ॥ ॥ ॥

दोहा ॥ पण यह वचन ने बीमरी । मोहमद छकी कुमार । वीतक बात दाखी
 मह । अखण्ड निनावा प्यार ॥ ५ ॥ छ ॥ डाल ६ मी ॥ मोन पद पावे हो
 जिनन्द गुण गावनां ॥ यह ० ॥ कपट कला देखोर चतुर वस्यातणी ॥ टेर ॥
 कामनता नित्र मानन मंग । कही मगली बात मांड । अक्रा सुणी हपी घणी
 मंग । ज्यो ज्योनि नोर ग्यांड ॥ क० ॥ १ ॥ तेह मणीने हरण करण को । उत्सुक
 थयो नम मन । कपट कला केलववा कारण । करवा लागी यतन ॥ क० ॥ २ ॥
 छन छिट नित्य देखे विजय का । मूशक मंजारी जेम । परन्तु मणी-हाथ नहीं
 आवे । थंग चिन अखेम ॥ क० ॥ ३ ॥ तव समझी हों शार घणोये । मणी रखे
 नित्र पाम । विणगीने मुझ हात ए लागे । करूं कैसो प्रयास ॥ कप० ॥ ४ ॥
 अवनरे नित्य कुमर पाम आइ । भक्ति करे बहु कोउ । कला केलवी वस्य किया
 नम । कृण करे कपटी होउ ॥ क० ॥ ५ ॥ चन्द्रहांस मदिरा तम पाइ । डाली
 मरम के मांग । जिण में प्रवस्य हुवा कुमरजी । तव हपी दिग आय ॥ क० ॥

६ ॥ १ ॥ १ ॥ मर्णा गुप्त स्थान मे । तव पाइ चिन सेम । द्विपा रखी तप्त गुप्त
 ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ न लागे जेम ॥ क० ॥ ७ ॥ कालन्तर ते नयाँ उतरायो । कुमर
 ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ ममलता डिग मणी न पाइ । सेद पाया असमान ॥ क० ॥ ८ ॥
 ममलता मन धर । मम, हलीयो । डाली ने मोह फास । मणी हरी कंकर घयो से
 पद ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ ऐसी मन्दिरा वस्य में डाली । कापिले
 ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ लह मुक्त छोड्यो । करी आत्म वकसीस ॥ क० ॥
 ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ आन उवजा चित माही । चिन्ता से प्रज्वले अंग । स्नेह बंध पड्यो
 ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ तयो न जावें संग ॥ क० ॥ ११ ॥ निर्द्वय नर कुमर ने जाणी ।
 धरा ननुजा बालाय । कहें दारिद्री कहाड घर बाहिर । रहे कुल कृतव्य मांय ॥
 ॥ क० ॥ १२ ॥ निर्धन्या से नेह करण को । नहीं अपणो आचार । मान मि-
 टान में वाणी महारी । दे निकाल घर बहार ॥ क० ॥ १३ ॥ कामलता मा चचन
 दुर्षीने । मुरभार्षी मन मांय । उत्तम कुमर के गुण में लोभाणी । चोले यों नर

रुद्र निगग अर्ति दुःख धरती । अन्य नर नहीं चित चाया ॥ क० ॥ २२ ॥ वीच
 घर उत्तम आचरणा । यो पुण्यात्म पावे । ढाल यह नवमी गाइ अभोलक । शीघ्र
 जाने भुव आये ॥ क० ॥ २ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ गुप्त स्थान जयजी चिते ।
 याव आर्त जान । नीच नारी संगत करो । पायो में अपमान ॥ १ ॥
 अमृत्य महा मर्ण । गड । छुट्यो प्रमला संग ॥ नीच परमा हेरो । कियो मन इन
 भग ॥ २ ॥ किहां जाव किणने कहू । कलं अब कांद उपाय ॥ आफस्यो कर्म
 जाल में । हे प्र ३ अब दलं कांय ॥ ३ ॥ विश्वासी मणी संगथी । छोट्या बंधव
 मग । ते गड मव मुम्य नड मुफ । अब होसी किस्वो डंग ॥ ४ ॥ कर कपोल
 हाष्टि मही । नयण नरि बहाय ॥ देखो पुण्यात्म प्राणीया । शीघ्र ही सब सुख
 पाय ॥ ५ ॥ ढाल १० वी ॥ ब्राह्मी ने सुंदरी दोनों वाइ । यह ॥ हिंवेतिण अवसर
 ने मांइ । जत्रमल गजारी जेत श्री वाइ । खेले सखीयो ने मभारो ॥ पुण्य चन्त
 ॥ ने सुव मिले श्रेयकारो ॥ १ ॥ खेलती नदी ने तट थाइ । सखीयो साथ ते पण

देवो नगर में दोँडा पीटाड । इनाम श्रेष्ठ कीजे जहारो ॥ पु ॥ १३ ॥ जो खुटी
 नहीं होमी आयुगामी । तो पुण्यात्म कोइक आसी । और तो वस्य नहीं लगारो
 ॥ पु ॥ १४ ॥ नरेश रे वान पंमद आइ । तत्त्वीण हुकम सो फरमाइ । शीघ्र
 करों प्रमिद्ध नगर मभारों ॥ पु ॥ १५ ॥ जो वाइ का दुःख गमावे । तेहने वाइ
 यह पगणावे । दायजे दे कोड दर्नारो ॥ पु ॥ १६ ॥ योही तव पउह बजावाइ ।
 सुर्गा ललचाइ घणा आयाड । पण पुण्य विन किम मिले ऐसी नारो ॥ पु ॥ १७ ॥
 जयर्ज उदयोंपणा श्रवण सुर्गा । तत्त्वीण हर्ष्यो चिन्ताधुणी । मुक्त पास औपधी
 श्रयकारों ॥ पु ॥ १८ ॥ पउह द्वी राज में आया । केइ तरह ढोंग जमाया ।
 आडम्बर होंवे मनवारों ॥ पु ॥ १९ ॥ औपधी पखाली पाणी मांही । दीनी कमरी
 ने पीलाड । भाग्यो व्यन्त्र पाडी किलकारो ॥ पु ॥ २० ॥ तत्त्वीण कुमरी सावय
 होइ । देखी परिवार मच हर्षोंइ । प्रत्यक्ष देख्यो चमत्कारो ॥ पु ॥ २१ ॥ महा पुण्य
 वन्त जय जीने जाण्या । लक्षण संस्थान रूपे यह छाण्या । जोगी जोडीये करो

॥ नदी ॥ चाल ॥ नदी तिहो पंथी न पाइ । पम्माइ पवरागीया । कहाँ गइ
 ॥ १६ ॥ शोक हम चहुँ आर्या । न देख्यो भट जोयायो तब । तान
 ॥ १७ ॥ सुणो धोना कहै वक्ता । धूर्त तेहेने देगवियो ॥ १ ॥ कुमार
 ॥ १८ ॥ चितने । धिक्कर २ होजोना कर्यो मितने ॥ चाल ॥ कर्योमित
 ॥ १९ ॥ भामंड पित आपणो । सेवा नाथे वयाण आराधे करे कार्ये बहुल
 ॥ २० ॥ आभार घातक करके चित्ता ज्वाला मिलगाचई । कहै वक्ता सुणो
 ॥ २१ ॥ शोक दियो मे हो पाद्यो न पामीये । मम-
 ॥ २२ ॥ नामी फल मिले समता से । आर्या
 ॥ २३ ॥ यह गुणवन्ति राज कन्या । पाणी ग्रहण इण से भयो । गयो
 ॥ २४ ॥ यह लाभ मे हर्ष आवइ । कहै वक्ता सुणो ओता । समता से
 ॥ २५ ॥ देव जो दोषी हो दिव्य मणी आपस । सो कैले जावे हो ।
 ॥ २६ ॥ चाल ॥ दोशक जोइन जावे कवहु । दोडो मिलेगा पुण्य धी ।

पाउंगे । गुर्गा अस्का डरी दिल में । धमकी राय जमाउनी । कहे वक्ता सुणो
श्रोता । जयजी के पुण्य सहाही ने ॥ ७ ॥ देविक वस्तु हो धर्मी प्राणी ने । इ-
न्द्रित थाये । न थापे अन्नाणी ने ॥ चाल ॥ अन्नाणी बैस्या ने तिस्कारी । कहे
सम एकटा मिली । जावो देवो कुमरनेमणी । जो तूम चावो मनरली । नहीं तो
पूगें विचार करजो । बं हुवा राज अधिपति । कहे वक्ता सुणो श्रोता । जेष्ट दु-
स्वार्थ कुर्गति ॥ ८ ॥ अस्का घावरी थाइ कुमर कने । रुदन करती हो कर
जोडी भाणे ॥ चाल ॥ जोडी कर कहे कुमर से समो अपराध देव मा-
हरो । एगवम्ह हुड में मदिरा जोगे कियो गुन्हो बहु पांयरो । अहो नाथ हमं ने
थाप अन्दी । मन्दी प्रीति राज वाइसे । कहे वक्ता सुणो श्रोता । कौन हमारो
महाड छे ॥ ९ ॥ राज प्रताप से आप मोहित भया । गरीब की सेवा और सुख
भूला गया ॥ चाल ॥ भूलिया ज्यों स्वर्ग जाइ निज कुटुम्ब भूले सही । त्यों हमा
री मारन लार्थी घणी किसी जावेकही ॥ पण हमारे आप एक हो । आधार दूजा

दर दीर्जीये ॥ १३ ॥ उत्तम नर ते, प्रार्थना भंगे नहीं । आप हम इच्छा, यह
 पूर्ण करो मर्दा ॥ चाल ॥ पूर्ण करो सब इच्छा महारी, मणी आप यह लीजीये ।
 मणी मेर्ला कुमर पांस हम घर पावन कीजीये । लेइ मणी कुमर हर्ष्या परख्यो
 कपट अक्का तणो । कहे वक्ता सुणो श्रोता । कुमर विचक्षण है घणो ॥ १४ ॥
 प्रीति मंभारी हो कामलता तणी । कोप न कीघो हो हुलस्यो मिलवा भणी ॥
 चाल ॥ मणी मिली प्यारी हिली । सुख सहू चिन्त्यो पावलो । कहे अवसर देख
 आम्हुं । तुम प्यारो निज स्थलो । अक्का घर गई खुशी यह ॥ ढाल एका-
 दश विपं । कहे वक्ता सुणो श्रोता । जोडी यह अमोलक स्थि ॥ १५ ॥ दोहा ॥
 अक्का गया नदनंतरे । कुमर पब्बा मोह फंद । कामलता मन में वसी । धिक्क
 काम मतिमंद ॥ १ ॥ स्वसुर पच निज कुल की । लज्जा मर्यादा तोड । काम
 लता मंदने चल्या । राज कन्या को छोड ॥ २ ॥ जयजी आया देख के । ह-
 र्ष्यो गणिका परिवार । अति सन्मान दीघो सभी । आज तूठा किरतार ॥ ३ ॥

नित्य नवना सुख भोगे । स्नान पान ने स्नान । गान तान गुलनान में । मगन-
ना मोने राजान ॥ ४ ॥ जय जी की आज्ञा मुजब । महू रहे एक दिन । पुण्यास ने
कर्मा किर्मा । आनन्द मंगल नित्य ॥ ५ ॥ ढाल श्वी ॥ रे लाला निन्दीयो म-
हागे वाजणां ॥ यह ० ॥ रे भाइ कुमरी सुणी यों चारता । तुम पनि गया चेरया
घोरं भाई । सुरदाह धरणां चढनी । यातां आरत करे बहू पेर रे भाई । धिक्क
० व्यश्ना जीवने ॥ टंर ॥ १ ॥ रे भाइ शीतल पवन जले करी । ते जीण अन्तर
ने मायं भाई । मावथ हो गंती कहं । हिने महारी गति मी थायरे भाइ ॥ पि-
क्क ॥ ० ॥ रे भाइ चंडया व्यश्ना मुझगति । पड़यो कामलता ने फन्द रे भाइ ।
लाज रग्यो नहीं कुन नार्णा । थया मोहोदय से अन्ध रे भाइ ॥ धि ॥ ३ ॥ रे
भाइ टंर कंटं भिर आथंडे बंहे नेत्रे नीर परनाल रे भाइ । दामा दोडी गड़ भूष
प । कछा चाट का महू हाल रे भाइ ॥ ४ ॥ रे भाइ नृप शोकानुर गयो
अनि । वर्ना लज्जाणो धणो मन रे भार । मुझ जमात नागिका धरे । कुननिन्द से अत्र

जग जनरं भाइ ॥ धि ० ५ ॥ रे भाइ शीघ्र आया कुमरी कने । लीनी खोला
मं चेटायेरं भाइ ॥ कर से आश्रू पूँछने । बुचकारी कहे इमवायरे वाइ ॥ धि ॥
६ ॥ रे चाड फाँकर किंचित करे मति । तुँछे मुक्त जीवन प्राणरे वाइ ॥ पर्यंत
करी तुक्त पनि भणी । देखूं थोडा दिने ठाम आनरे वाइ ॥ धि ॥ ७ ॥ प्रपरे भाइ
सर्चावनं कहे भूपति । शीघ्र जाचो वैश्या आवसरं भाइ ॥ तेडो धिक्कारी जमातने ।
लागे हम कुल नं कालासरे भाइ ॥ धि ॥ ८ ॥ रे भाइ पायक लेइ प्रधाजनी ।
गया कामलतनं घर रे भाइ ॥ वाहिर रही मोटा साद से । कहे जयजीने यों
देर रे भाइ ॥ धि ॥ ९ ॥ अहो भाइ भट्ट निकलो घर वारणे । छोडी नीच नारी
ना संग रे भाइ ॥ लज्जा धरो जरा कुल तणी । यों कैसे भइ मति भंगरे भाइ
॥ धि ॥ १० ॥ रे भाइ सुण के कुमर अति लाजीया । पड्या फिर समुद्र के
मांयरे भाइ ॥ धिक् धिक् मुक्त व्यथी भणी । राय चाकर साथ बोलायरे भाइ
॥ धि ॥ ११ ॥ रे भाइ इण जणि से मरणो भलो । कैसे जाके देखावं मय

भाट ॥ मय नर्जनी में बनायमी । हुयो कुपर मने अति दुःख रे भाट ॥ धि ॥
 १२ ॥ रे भाट मही बाग दे अची मुक्त भणी । तो पेटूं में प्यारे उदरे भाट ॥ रा-
 नाजी किम्यो ज्ञाणमी । निकल्यो महारो जमाट छुट्टे रे भाट ॥ धि ॥ १३ ॥ रे
 भाट रात्र घरे ज्ञाणो नही । बली ठहां पाण रहणो नथायेरे भाट ॥ लज्जा जीविन
 दोह रहे । पंगो करूं में द्विजे उपाय रे भाट ॥ धि ॥ १४ ॥ मणी तणे प्रभाव मे ।
 गया गगने उड़ी देसत्र रे भाट ॥ स्वदेश की चोरी थकी । भिजा भली कहे
 अन्यत्र रे भाट ॥ धि ॥ १५ ॥ रे भाट आश्रयो गणिका जुष रही । जुष चाण गया
 प्रधान भाट । दान दीनी कही जयतणी । ते सुण विमया राजान रे भाट
 ॥ धि ॥ १६ ॥ रे भाट कुलवन्त कुपर लाजी गयो । हे पुणवन्त विद्या भरपुर
 रे भाट ॥ विद्वानन कर मुक्त लाडनी । तुम ने कन्त मिलमी जरूरे भाट ॥
 धि ॥ १७ ॥ भाट गुणवन्त मञ्जन दीगरे नही । दुर्गुणी ने नही पले प्रमेरे भाट । इत्या-
 दि यार वचन थी । कुरी पाउ चित खेमेरे भाट ॥ धि ॥ १८ ॥ रे भाट राजा

नै भयाने गगना । इ री। एडि। मोच माय रे भाइ । वियोग भाले पनि तणी । पण
 मणि नाणा ह्य यर नःइ ॥ थि० ॥ १६ ॥ वह सन्तराय कभी दृष्टमी मुक्त । मि-
 लेना आदः नः । नर नः । शील पसाये सुख पावस्युं । रही दृढ पतिव्रत धाररे
 भाइ ॥ १७ ॥ २ गट भूरी समयन आहार एक टंक । तज सिणगार धर्म ध्यान
 व्यापक भाइ । अमा । कह । ढाल वारमी । कांड विश्व तज्यां सुख पायरे भाइ
 ॥ थि ॥ २ ॥ डाटा ॥ मणी प्रभावे कुमारजी । रूप परावती कीध । वृद्धवयी
 जोगी दगया । माम्भ्री मव मिथ ॥ १ ॥ जटा कुट दीर्घ कावरी । अंबर भगवां
 अग । भम्भी रमी भाले निलक । बैराग्य नेत्र रक्त रंग ॥ २ ॥ गले दाम कर स्मर-
 णा । बुधिर भोली कांस्य । चिमटा दंड करमे घरा । ईस नाम मुख भास्व ॥
 ३ ॥ लंगोट , तग अनंग जय । पगमें ऊंच खडाव । पुष्ट ऊंच तन
 भाल दिव्य । कर मो रण में पडाव ॥ ४ ॥ स्वेच्छा भूत्सग फिरे । पेम्ने पुर वर
 ठाम ॥ आनन्द बाल निर्गमे । अच कह पुण्य परिणाम ॥ ५ ॥ ॐ ॥ टाल १३

वी ॥ निन्दक नृ मति मरजरे ॥ यह ॥ भविका पुण्य बल देखेजी । गत वस्तु
 प्रापति होय ॥ रेग ॥ एकदा एक वनके विययली । शकुन हुआ श्रेय कार । अर्थ
 समर्प । आश्रय लहा । हण महा अटवी ने मफार ॥ भ ॥ १ ॥ गत वस्तु कैसे मिले ।
 ये जम्न न निष्फल जाय ॥ म्यान मनोरम देखके चेठा तहां ध्यान लगाय ॥ भ ॥
 ॥ २ ॥ अचिन्त्य निहां आया तदा जी कपटी अवधूत वेप । जय जी जोगी
 जो हर्षाया । नमन क्रिया विशेष ॥ भ ॥ ३ ॥ मेवा मायेंव आते हितजी । कुमर
 ओलखाया नाग ॥ वान प्रगट करी नहीं । नहीं पूगे जिहां लण आम ॥ भ ॥
 ४ ॥ दिग गद्यो शिष्य होय के जी । भक्ति करे अपार । जयजी भीतम पोपताजी ।
 भोजनार्ति मन्कार ॥ भ ॥ ५ ॥ अण निपजाया नित्य दिये जी । इच्छित भोजन
 पान । करामति जोगी जाणनेजी । धूर्त हृद्यों असमान ॥ भ ॥ ६ ॥ एकदा का-
 र्य माधवाजी । करं गुरु ने प्रमन्न । कुमर मन तस ओलखी । निज श्लाघा करे
 कथन ॥ भ ॥ ७ ॥ मंत्र जंत्र मणी ओषधी जय । मुफ से छिपी न लगार ।

जो चर्हाये मो ही कहे । धूर्त हर्षी करे उचार ॥ भ ॥ ८ ॥ श्रीमतीजी मुझ पास
 देखे जी । औपध एक अमूल । गुण विधि तस प्रकासीये । ते किम होवे मुझ अनु-
 कूल ॥ भ ॥ ९ ॥ कहाडी दी जोगी करेजी । कुमर देख हर्षाय । प्रत्यक्ष शकुन
 फलित थया । गइ औपधी मिली पुनः आय ॥ भ ॥ १० ॥ जय पूछे सत्य की
 जाय । यह कहाँ मे आइ तुझ पास धूर्त अति नरमी करी । कर जोडी करे अ-
 रदाम ॥ भ ॥ ११ ॥ श्रीमती इहां से, सत योजने जी । रहे एक जोगी राज । मे
 सेवा तम साचवी । ते प्रसन्न हुवा घणाय ॥ भ ॥ १२ ॥ तिण ए औपध मुझ दीवी
 जी । गुण पूछ्या कहाँ एम । जा तूं शीघ्र उत्तर दिशा । महा जोगी मिलेगा प्रभु
 प्रेम ॥ भ ॥ १३ ॥ ते कहेगा तुमने सहू । इस बूटी मे गुण अपार । मे आयो
 आप चरण मे । परमावो गुण जे सार ॥ भ ॥ १४ ॥ एक प्रभाव तो इण तणेजी
 अनुभव हुवा हे मोय । जव से आइ मुझ कने । तब से मुझ मन स्थिर होय ॥ भ ॥
 १५ ॥ अरुण नयणे जय जी वहे रे दष्ट ते दिसता चोर । तब ही दुख यह तुझ

दिये । ये एक गुण हममें कटोर ॥ भ० ॥ १६ ॥ दगावाज तस्कर भणी गह ।
 मंतापे दिन गन । तू निश्रय महाधूर्त है । कर आयो किमकी बात ॥ भ० ॥ १७ ॥
 यहां फल हम पाप का में, तुम्हें बतावु आज । फिर आगे तू नहीं करे । पेसो
 महा कोह अकाज ॥ भ० ॥ १८ ॥ हम माची सुण विगम्यो अति । मये थरथरी
 छड़ी अंग । औषधी ओह भारी गयो । कुमर न कियो तग संग ॥ भ० ॥ १९ ॥
 यारी पापोदय कर्माजी पीडा महज पाय । धर्म के धर्म प्रसाद से जी । महज जाय
 बलाय ॥ भ० ॥ २० ॥ मणी औषधी गह पुनः मिलीजी । जयजी अति हर्षाय । पुण्य
 फल दर्शावणी । दाल तंग अमोलक गाय ॥ भ० ॥ २१ ॥ दाहा ॥ प्रदेश
 के प्रयाग को । दुःख नहीं बंद लगार । सार हुयो फिरवा तणो । वस्तु पाया अय-
 कार ॥ १ ॥ जो कार्य पापिष्ट को । दुःख का कर्त्ता होय । सोही कार्य पुण्यवन्त
 के । मुख कारक लो जाय ॥ २ ॥ निकले थे अपमान से । लज्जित हो दुःखपाय ।
 कारण से कार्य पक्यो । महा औषधी मिली आय ॥ ३ ॥ हर्षित हो आगे चले ।

पिशा । प्रभार । देमन होँस्य पूरी करी । मिटा मन उल्हास ॥ ४ ॥ स्थिर रहने
 ॥ ५ ॥ हृद । सोही वने उपाय । इच्छित फले पुण्यात्म के । मुण्डो विच लगाय
 ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

हुनिमित्त अंग कामर्णी ॥ होसु० ॥ हुल ॥ ३ ॥ मज मोलेह सिणगार । भार वम्भ
भूषणो ॥ होसु० ॥ भार ॥ मात पठाह तात पास । वर दो सुलक्षणो ॥ होसु० ॥
वर ॥ कन्या रूप यय जांग । गय चिन्तातुर भया ॥ होसु० ॥ राय ॥ किमको
परणाच धोण । सर्व गुण गणमया ॥ हो० ॥ मर्व ॥ ४ ॥ जो गुणवन्त मिले जांग ।
भोग मय पावट ॥ होसु० ॥ भोग ॥ अण लक्षणो मंगोण । जन्म दुःखे जावड ॥
होसु० ॥ जन्म ॥ पुत्री को देह मीस । मचीव बोलाहया ॥ होसु० ॥ मर्चा ॥ धूया वर
विचार । पकन्त चोटाविया ॥ होसु० ॥ पक्क ॥ ५ ॥ तेतले अचिन्त्य व्याल । वि-
कगल नहो आर्याया ॥ होसु० ॥ विक ॥ कुमरी जाती श्री मेहल मांय । रस्ते में
मांचाविया ॥ होसु० ॥ रस्ते ॥ मुरझाह पडी भूपूठ । टूटे ज्यो तरलता ॥ होसु० ॥
टूटे ॥ दोड दार्मी भूष पास । दाखी कुमरी कथा ॥ होसु० ॥ दाखी ॥ ६ ॥ सुण
भण आश्रय पाय । खंद अति लावीयो ॥ होसु० ॥ खेद ॥ तत्तिण आया तहां
जाय । दीयो थरगर्वायो ॥ होसु० ॥ हीयो ॥ सब आया तहीं दोड । ओड काम

राज ने ॥ होसु० ॥ छोड ॥ बोलाया भोपा वैद्य । लेइ सब साज ने ॥ होसु० ॥
 लेइ ॥ ७ ॥ मंत्र जंत्र जडी जाण । वैद्यादि घणा आवीया ॥ होसु० ॥ वैद्य ॥
 आपणी मव करामात । उमंग अजमावीया ॥ होसु० ॥ उमं ॥ किया बहुत उपचार ।
 लगार लगे नहीं ॥ होसु० ॥ लगा ॥ आये उनकी उमंग । मेहनत निष्फल गइ ॥
 होसु० ॥ मेह ॥ ८ ॥ आत अति करे राय । निरासा धारी मन ॥ होसु० ॥
 निरा ॥ चिन्त में क्या होय । सचीव नरमी भने ॥ होसु० ॥ सची ॥ कोई
 यत्न करो शीघ्र राय । ज्यों रत्न यह रहावाइ ॥ होसु० ॥ ज्यो ॥ बहु रत्न
 वसुंधरामाय । उपकारी को पावई ॥ होसु ॥ उप ॥ ९ ॥ उद्घोषणापुरमाय ।
 राय करावई ॥ होसु ॥ राय ॥ करे मुक्त तनुना खुशाला तास परणावइ ॥ होसु ॥
 ताम ॥ पडह बाजायो पुर मांय । आय उमंगी घणा ॥ होसु ॥ ते तले जयजी तहाँ
 आय । शब्द सुण पडा तणा ॥ होसु ॥ शब्द ॥ १० ॥ देखाने चमत्कार । रूप वाचनो
 कियो ॥ होसु ॥ रूप ॥ लघु देही दीपे पुष्ट । वरणे सांचलियो ॥ होसु ॥ वरणे ॥

शुभ वस्त्र मजा तन । जेप्रिका कर विधे ॥ होसु ॥ जेप्रि ॥ चंदन तिलक लिलाट ।
 माल गल में दिगें ॥ होसु ॥ माल ॥ ११ ॥ एक हाथे करताल । वजावे चंपूसे
 ॥ होसु ॥ वजा ॥ दूजें हाथे फिरे माल । चले भक्त रूप से ॥ होसु चले ॥ आये मध्य
 वजार । देखल लोक वहू जम्पा ॥ होसु ॥ देख ॥ हंस हंसावे सब तांय । वावन
 जी मन रम्या ॥ होसु ॥ वाव ॥ १२ ॥ पडह वाजंतो सुण । कारण सब प्रव्रिया
 ॥ होसु ॥ कार ॥ विम्तारी हुड वात । भक्त ने जन किया होसु ॥ भक्त ॥ वावनो
 कह कर आगम । जिनैक के मायने ॥ होसु ॥ दीण ॥ देखो करामात सुभ । सर्व
 तहां आयन ॥ होसु ॥ मर्व ॥ १३ ॥ सबी कहे भक्तजी मन । भक्तणी चाविया ॥
 होसु ॥ भक्त ॥ गय कन्य जांग जोडा । येही जग पाविया ॥ होसु ॥ येही ॥
 वर्गिया यिन केमं ग्य । सुख्या इन सारखा ॥ होसु ॥ सुरू ॥ यों हंस सब लोक ।
 क्या जान पाख्या ॥ होसु ॥ क्या ॥ १४ ॥ कितनेक दाने शाणे आय । शिन्ना
 दंव हर्मी ॥ होसु ॥ शिन्ना ॥ गय करामाति बहुत हार । तो थारी चली किसी

॥ होसु ॥ पाणी ॥ मत कर फोकेट फंद । अशमान तू पावमी ॥ होसु ॥ अय ॥
 राय न ॥ १२ नभ. पुत्री । पळे पस्तावमो ॥ होसु ॥ पळे ॥ १५ ॥ तव कंह हंसनि
 राय । ॥ १३ राय न कीजिये ॥ होसु ॥ अन्त ॥ जरूर परणमी एह । इच्छा पूर्ण
 दा ॥ १४ ॥ होसु ॥ यों हंसता आया राय पाम । अरदास वावनो करे ॥
 ॥ १५ ॥ अर ॥ म वरु धर्वा विप दूर । वचने दृढ रीजिये ॥ होसु ॥ वच ॥ १६ ॥
 दा आता नदी । आया कुमरी कने ॥ होसु ॥ आया ॥ बंदी ली कर मांय ।
 राग नन । होसु ॥ ॥ १७ ॥ मोठे स्थान आदर डोंग से पावइ ॥ होसु ॥
 दाग ॥ १८ ॥ पुर दाग अचन । आदि मंगावइ ॥ होसु ॥ आदि ॥ १९ ॥ उदक मिश्र
 न थापन ॥ २० ॥ पड़े भूयमे तिहां ॥ होसु ॥ पड़े ॥ उद्घोषण पुर मांय । किता
 आपन । राय ॥ होसु ॥ किता ॥ भूप कहे करो आराम । जरूर परणवस्युं । होसु ॥
 जरूर ॥ रागन कंह दृढ स्थां वचन । बदे जिन भावस्युं ॥ होसु ॥ बरे ॥ २२ ॥
 बड ॥ ता मनु मंत्र । पाणी मो पासियो ॥ होसु ॥ पाणी ॥ ताही चीण के मांय ।

विष मह विरलावियो ॥ होसु ॥ विष ॥ निद्रागत की पेर कुमरी सावध हुइ ॥ होसु ॥
 कुम ॥ हल्यों मव परिचार । चिन्ता आरत गइ ॥ होसु ॥ चिन्ता ॥ १६ ॥ नरवर
 पुरजन मर्वा । आश्रय अति पाविया ॥ होसु ॥ आ ॥ वावनजी की करामात ।
 मर्वा मरमार्वाया ॥ होसु ॥ मर्वा ॥ करामाती वावना भक्त । विरला जग तुम
 मम ॥ होसु ॥ वि० ॥ चमत्कार प्रत्यक्ष । देख सब मन रमा ॥ होसु ॥ देख ॥
 २० ॥ पद्मा फेर्नी पुर माय । हंमक शर्मार्वाया ॥ होसु ॥ हंस ॥ पुण्य पसाये
 जयजी का हुवा चार्वाया ॥ होसु ॥ हुवा ॥ यह हुइ तेरवी ढाल । रसाल कोतक
 नर्वा ॥ होसु ॥ गया ॥ कहे अमोल अणगार । आगे भीठी घली ॥ होसु ॥
 आगे ॥ २१ ॥ ३० ॥ दोहा ॥ नव जीवन कन्या लियो । हल्यों सब परिवार ॥
 वावन भक्त नांग मर्वा । मान्यों अति उपकार ॥ १ ॥ आर्ति टली आँखो खुली ।
 हुयो गग न विचार ॥ अहो प्रभु इण स्थान के । वचन पडे कैसे पार ॥ २ ॥
 चन्द्र कला मम वाड मुक्त । यह राहु प्रत्यक्ष ॥ गुण अन्तर मही अन्त लिख ।

कैमें जांडे ण दत्त ॥ ३ ॥ अजब गति करतार की । विरूप अपों गुण ॥ गुणी
 यह रत्न अमोल है । चिन्ता में पडयो निपुण ॥ ४ ॥ बोल्या भी पलटे नहीं ।
 जे लक्ष्मी मुम्ब वेण ॥ खाड आड विच में पड्यो । कीजो किस्यो अव सेण ॥ ५ ॥
 ॐ ॥ ढाल १४ की ॥ तावडो धीमो सो पडजे ॥ यह ० ॥ बड़े नर वचन को निभावे
 हो ॥ बड़े नर ० ॥ पुण्यवन्त तो नाना कहता । अलम्ब लाभ पावे ॥ टेर ॥ वचन
 भंग से यश भंग होवे । परतीति नहीं राही ॥ विन प्रतीति अपयानी बने । ते मुरदा
 तुल्य धाढ ॥ बडा ॥ १ ॥ कन्या का संचित प्रमाणे । पति मिल्यो यह आइ ॥
 यत्न महारा बलें किसा यहां । होत बसो थाइ ॥ बडा ॥ २ ॥ आतुर होइ बोले
 वाक्मो । वचन पार पाडों ॥ नहीं तो में जावुं निज स्थाने । मन की बाहिर
 काडों ॥ बडा ॥ ३ ॥ राजाजी दिग मुढ हो रहीया । हां ना नहीं बोले ॥ चिन्ता
 सागरे गांता खावे । केइ विचार तोले ॥ बडा ॥ ४ ॥ तब वाचन कहे चिन्ता
 मत करो । में भी योंही जाणू ॥ सुभने राज कन्या नहीं सोभे । कुरूप तन न्हा-

नु ॥ वडा ॥ ५ ॥ में दुर्भागी हीण अंगी ने । रंभा किम दीजे ॥ हंसली प्रीचा
 वायस बन्धन । अन्याय किम कीजे ॥ वडा ॥ ६ ॥ जो कदापि आप जवरी से ।
 पुत्री मुक्त देशो ॥ अह्नीकार सो नहीं कियो तो । क्या शोभा लेशो ॥ वडा ॥ ७ ॥
 मायन्त परजा आवरण बालेगा । ते सहा न जाये ॥ इस कारण मुक्त ना कहो
 ना । सब जन सुख पाये ॥ वडा ॥ ८ ॥ सुन्दर मुक्त से प्रही न जाये । कारण
 सब जाण ॥ चतुर मोड ओडण को जितनी । तित ना पग ताणे ॥ वडा ॥ ९ ॥
 भाग्य पार जो वन्तु हन्ने । सो मूर्ख जग मांड ॥ इसलिये में परणु नाहीं । फिर
 नजो गड ॥ वडा ॥ १० ॥ वचन सुगड यों सुन वाचन का । सब आश्चर्य पाया ॥
 प्रत्यक्ष चमत्कार यह देखो । निर्विषयी निर्माया ॥ वडा ॥ ११ ॥ ॐ ॥ श्लोक ॥
 कंचिन गुणः रागी नरा । तत् गुणवन्त क्वचित् ॥ तत्वा गुणवन्त गुणे रक्ता । स्व
 गुण प्रज्ञा कंचिन ॥ १ ॥ ॐ ॥ ढाल ॥ गुणानुरागी होकर धरा धव । नरमी यों
 बाले ॥ नुम मम गुणवन्ता निलोभी । न मिले जग खोले ॥ वडा ॥ १२ ॥ निश्चय

पुत्री नुपुसों ही दयंगा । वचन म्हारा पालूं ॥ प्राण जावो पण वचन न जावो ।
 उत्तम रंगि चालूं ॥ वडा ॥ १३ ॥ राम लक्ष्मण वचन पालन । वन में वास कीना ॥
 हरिश्चन्द्र दाग तनुज वेंच कर । मेहतर घर लीना ॥ वडा ॥ १४ ॥ यों अनेक
 दृष्टान्त दे भएन । व्याचन हट करीयो ॥ तव सामान्त कुटुम्ब बदल कर । ना
 कागे भर्गयो ॥ वडा ॥ १५ ॥ सवही वयण सुणी असुन कर । लगनोत्सव मंडा
 यो ॥ वाचनजी को मोक्षव काजे । द्रव्य अति दीलायो ॥ वडा ॥ १६ ॥ नवरंग
 मेहल दाया रंग को । हय गय आदि सारा । उत्तम लग्न महूत देखायो । आवो
 मजी प्यारा ॥ वडा ॥ १७ ॥ द्रव्य तहां सर्व जोग आ मिले । वने सज्जन केइ ।
 मिली मेहली मङ्गल गावे । गगन गरजेइ ॥ वडा ॥ १८ ॥ वाजित्र वाजे विविध
 प्रकार । वन्दोला फिरता । देख विद्रूप हंस्ये बहू कौतकी । केइ आश्चर्य धरता ॥
 वडा ॥ १९ ॥ यों आनन्दे लगन दिन आया । सजी अति सजाइ । गजारूढ हो
 चलीये वागन्जी । मन्गल वर्णित ॥ वडा ॥ २० ॥ लगन मंडपे आया भराया ।

मञ्जन पुरजन माग । दाल चतुर्दश कही अगोलक । अब देखो चमन्काग ॥
 बहा ॥ २० ॥ • ॥ दोहा ॥ राजकन्या भी मन हुइ । आइ मंडाग सोय । वाचन
 कर मयें नई । मच रह आश्रय पाय ॥ १ ॥ पाणी ग्रहण करो नग कहे । नन
 वाचन कहे गाय । भ नही जांगो मुन्दरी । क्यों जचरीये परगाय ॥ २ ॥ महीपन
 कहे जागा लम्बा । मेने दी तुम नाय । अटल क्याण मुक्त ना फिर । जो कभी मेरु
 कणाय ॥ ३ ॥ पद नर निज अंगना । कहो देनी के नाय । ना कहे आग हुक्म
 फिर । महीग गाना गाय ॥ ४ ॥ कुमरी को पड़े कहे । यह मुक्त मोड समान ।
 दन ॥ दिन नन्द जगनरा । आप मगा लिया जान ॥ ५ ॥ छ ॥ दाल १५ भी ॥
 या न महीरा मभय जिनका ॥ यह ॥ अहो मुज्जन आज आनन्द धन । नगर
 म दप्य चहाइ राज । मन्य मे मय मुख जन पावे । दिन २ क्यों पुग्याइ राज ॥
 अहा ॥ ७ ॥ या दर्मा अनि जय हर्षाया । परीक्षा पूरी थाइ । महा गत्यवन्तो
 निर्तापान जाग्या । नेर्याहीराणी थाइ राज ॥ अहो ॥ ८ ॥ निज स्वर नग प्रगट

करनै के । वाचनजी धोल्याह । अहो भूषादि सुणियो मर्वजन । कहुं मुझ मन जे
 साइ राज ॥ अहा ॥ १ ॥ कुरूप कन्या रत्न ग्रहयो । नीति मे युक्तो नाहीं । इम-
 लिय म । विद्याधर म वनु नलकुंवर साइराज ॥ अहो ॥ ४ ॥ सत्य प्रभाव तुमारो
 पहाइव भुन विद्या ॥ मव मिले कुव कर मको नहीं । पण मेरे मे कैसे
 पाइ राज ॥ अहा ॥ ५ ॥ नर देही वांछित फलदाना । जो कर जाने कमाइ ।
 भूल रूप अघ दुखा भरा । महू भ्रमना विरलाइ होराज ॥ अहो ॥ ६ ॥ नगर
 साहर धरु लब्धी चोडी । दो एक खाड मिणाइ । वाचनो चन्दन चन्ही प्रजालो ।
 साधन वरा पर नजाइ होराज ॥ अहो ॥ ७ ॥ ज्वाला स्नान किया मुझ तनका ।
 रूप धन इन्द्रमाइ । फिर तुम वाइ सुशी ते परखूं । इममे शंका नाही होराज ॥
 अहा ॥ ८ ॥ नवी कंद यह मरणो चहावे । अग्नि मे कौन उचर्याइ । मव ममभायो
 पर न मानी । साइ मे अनल दीपाइ होराज ॥ अहो ॥ ९ ॥ न्हाइ धोइ गन्ध
 लगाइ । उम भूषण मजाइ । कन्जरा रुद हो वाजित्र नादे । मव जन मे परवयो

६ होगा न ॥ अहो ॥ १० ॥ अपूर्व आश्रय जन देखन को । आगे २ पाइ । कोटो
 गम नगो चन्दो कटो । कोनक कोन न चहाइ होगज ॥ अहो ॥ ११ ॥ आला
 गगन नग अजनाग । दिग ऊभो न रहाइ । केइ अचंगे केइ मेदाश्रय । देखे दृष्टी
 नगना होग ॥ अहो ॥ १२ ॥ मर्ग गंत्र मय देखना । जाइ पड्यो कुंड मांड ।
 हा । हाग म या पान नय नहां । किस जीवन यह आइ होगज ॥ अहो ॥ १३ ॥
 । । । । । म दग नगा वन । बाहिर आऊ भाई । गानन्दाश्रय मह पाइ । इमे
 । । । । । नगना होगज ॥ अहो ॥ १४ ॥ औषधी महिमाण । विश्रानल की । ना-
 । । । । । मचि नगना । मजा भूषण मूल रूपे तव । अधिक रत्ना मो भाई होगज
 ॥ अहो ॥ १५ ॥ नृपति नम अति मन्कर्ग । पूछकर दृष्टी लाइ । वाचनजी च-
 नोया किण वरण । मार्यो देवो हरमाइ होगज ॥ अहो ॥ १६ ॥ मूल मंडाल मे
 यागी हर्मागन यथा नय्य दीनी मुनाइ । मंत्र औषधी मणी प्रभावे । निन्निन
 कान निवाट हागज ॥ अहो ॥ १७ ॥ मुणी वाणी अति विममय मानी । जग २

॥ १५ ॥ ॥ ॥ धन्य २ नर महापुण्यात्मा । धन्य चाइ की पुण्याइ होराज ॥ अहो
 ॥ ॥ ॥ अति उत्तमै पुनः शहर में लाया । दिया तेही मेहले उतराइ । सर्व जन
 गगनोत्तम ॥ ॥ ॥ वायुजों कीर्ती फैलाइ होराज ॥ अहो ॥ १६ ॥ तैनों रत्न
 दह गगनोत्तम जय । रस्ये फिर जाय खोवाइ । रहे आनन्दे मज्जन सम्यन्धे ।
 ॥ १७ ॥ ॥ ॥ गिरलाइ होराज ॥ अहो ॥ २० ॥ ढाल दश पर पांच शिरोमणी ।
 ॥ १८ ॥ ॥ ॥ भोजन गाइ । भोजन भरीये सुकृत्य स्वजाने । पुण्याइ काम आइ होराज
 ॥ १९ ॥ ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ पुनः अति आइंघर कियो । जयती और पुराय ।
 नागना पत्रा जय भगी । शुभ लगने परणाय ॥ १ ॥ शतगज तुरंग सहश्रदश ।
 दायजा म दिये गय । गाम जागीर दीया घणा । हाथ खरच के तांघ ॥ २ ॥
 महापुण्य दम्पति । जोड़ी जांगी मिली आय । स्वामी नहीं कोई मुसुकी ।
 ननिन मम फल पाय ॥ ३ ॥ नित्य नखला मुग्य भोगये । दागुंदक सुरमार । मणी
 पनाये सामुप्री । होये मय तैयार ॥ ४ ॥ भोगये तोये अन्यने । देइ इच्छित दान ।

होनहार आगे सुनो । श्रोता लगाइ ध्यान ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल १६ मी ॥ महार
 आन आनन्दनो दिन छेजी ॥ यह ॥ पुगयवन्त कुं बोल महे नहरि । चानुर ने
 चिन्ता होये महीर ॥ पुगय ॥ १ ॥ एकदिन मजाइ उत्तम मजीर । निकल्या फिरवा
 नयनी पुरमा गर्भार ॥ पुगय ॥ २ ॥ हय गय पायक बाजा बहुर । शोभे राज
 माहर्षी तम महुर ॥ पुगय ॥ ३ ॥ मध्य वजार जव मो आधी यार । पुरजन देख्य
 आनि लोभाची यां ॥ पु ॥ ४ ॥ ठठ जम्यो वजार के मांयनेर । जोव गोरडीयो
 गांज्य आया नेर ॥ पु ॥ ५ ॥ तामें नारी एक बोली जों रामभीरे । ऊंचे श्वर करी
 ज्यो सुने मर्चार ॥ पु ॥ ६ ॥ क्या देख्यो मवी ऊपर चडीरे । अपणा राय जमाइ
 ये स्वचर पडीर ॥ पु ॥ ७ ॥ घर जमाइ सदाइ रहे इहारे । किम्यो देख्यो यह जांच
 किहारे ॥ पु ॥ ८ ॥ शब्द स्पर्शोण जय कानमार । लज्जा पाया चिन्ते नीति
 मानमार ॥ पु ॥ ९ ॥ ॐ ॥ श्लोक ॥ उत्तमा स्वगुणे ख्याता मध्यमा स्तुतिगुणे ।
 अधमा मानुने ख्याता स्वसुरे धमाधमा ॥ १ ॥ ॐ ॥ ढाल ॥ यों विचार सुख

नीचो कियोग । किडा उत्सहा सव भागी गयोरे ॥ पु ॥ १० ॥ धिक् २मुभ
 बुद्धि ने अरु रिद्धि नेरे । में तो गमाइ लाज काज सिद्धिनेरे ॥ पु ॥ ११ ॥ जैसा
 हर्ष मे गया था म्वेनमारे । तैसा शोग से आया पाछा मेहलमारे ॥ पु ॥ १२ ॥
 पकान्त बेठा चिन्ता मागरे पड्यारे । अपमान दुःख अति तस मन नख्यारे ॥ पु
 ॥ १३ ॥ इहां रहणो मुभने जुगतो नहीरे । जावूं कामपुर विजय पासे सहीरे ॥
 पु ॥ १४ ॥ पुन. चिन्ने नहां कैसे जाइयेरे । ते है राजा किम दास होय राहीयेरे
 ॥ पु ॥ १५ ॥ मर्त्ता मार्धा में भी वणुं राजीयोरे । स्वेच्छाए रहूं चिन लाजीयोरे ॥
 पु ॥ १६ ॥ यों विचारी मंत्र संभारीयोरे । पण हृदय तास विसारीयोरे ॥ पु ॥
 १७ ॥ भूल्या प्रमाद याद आवे नहीरे । पश्चाताप अति पावे तवहीरे ॥ पु ॥ १८
 ॥ हाहा अनर्थ यह में मोटो कियोरे । महाराज दाता मंत्र भूली गयोरे ॥ पु ॥
 १९ ॥ विजय विना यह तंत्र मिले नहीरे । जाणो भाइ पास अवततो सहीरे ॥ पु
 ॥ २० ॥ मुभ प्रमाद युभने नीचो कयोरे । पळो व्यश्न वश तेहथी स्ववश हयोरे

[illegible]

॥ १ ॥ यद्येवं मंत्रपुत्राय होराजिन्द ॥ सुणी ॥ २ ॥ जेष्ट भाइ दण्डे गया ।
 ॥ ३ ॥ यद्येवं यद्येवं राजहोराजिन्द ॥ कहे में कहूं मो मत्त है । राख्या नीत-
 ॥ ४ ॥ होराजिन्द ॥ सुणी ॥ ३ ॥ सुणी विजय वीतक कथा । आश्चर्य अधिको
 ॥ ५ ॥ होराजिन्द ॥ अहो ज्ञानी ये पूरा गुनो । भाइ गुन चित आय होराजिन्द ॥
 ॥ ६ ॥ हृदय भरणो मोह वसे । नेत्रे नीर वर्षाय होराजिन्द । पूछे अति नर-
 ॥ ७ ॥ ॥ भय वधव ले विण्ठाय होराजिन्द ॥ सु ॥ ४ ॥ कव दिन ऐसो ऊगसी ।
 ॥ ८ ॥ यद्येवं यद्येवं मन्त्रपुत्राय होराजिन्द ॥ शीघ्र चतायो मुक्त भणी । अति उपकार मोये
 ॥ ९ ॥ होराजिन्द ॥ सु ॥ ५ ॥ कहे नीमति फीकर तजो । जयसेण सदा जय माय
 ॥ १० ॥ होराजिन्द ॥ विदग मणी के प्रसाद से । ताम कमी कछु नाय होराजिन्द ॥ सु ॥ ७ ॥
 ॥ ११ ॥ यद्येवं यद्येवं मन्त्रपुत्राय होराजिन्द ॥ दुष्कर मिलण तुम तांय होराजिन्द ॥ स्या करोगा तिणसे मिली
 ॥ १२ ॥ यद्येवं यद्येवं मन्त्रपुत्राय होराजिन्द ॥ सु ॥ ८ ॥ यो सुण दिलगीर हुवा अति । कहे तम विन
 ॥ १३ ॥ यद्येवं यद्येवं मन्त्रपुत्राय होराजिन्द ॥ मफल दिन ते लाणस्यूं देमस्यूं यंय मुम्य होराजिन्द ॥ सु ॥ ९ ॥

निर्मलिन भण विद्या चले । देवता को ले गहाय हो गजिन्द ॥ कहो तो चुलाचु
रण जगा । नम चन्धव जीण माय हो गजिन्द ॥ सु० ॥ १० ॥ परन्तु उनके
जाय म । नमन हायगा दुःख हो गजिन्द ॥ कारण जेष्ट ते तुमथकी । इन्ध्या
चागी यो नम मन्द हो गजिन्द ॥ सु० ॥ ११ ॥ तुम हित भणी पहिला कहें ।
नो अयम म्ब चहाय हो गजिन्द ॥ नो दोनों रहा चुक्या । जिनमे विद्यन नहीं
आय हो गजिन्द ॥ सु० ॥ १२ ॥ यह प्रश्न ने झटके । अन्य पृश्नो मुम्ब उपाय
हो गजिन्द ॥ या मृणकर विजय जी देव किम यो बोले विद्युराय हो जानी ॥
मु० ॥ १३ ॥ मनलवी प्रीति विपे । इन चर्चने पड हे विरोध हो जानी ॥ मत्स्य
प्रीति जिनक मने । नाम न कीजिये बोध हो जानी ॥ सु० ॥ १४ ॥ यह मंगति
मध भाट को । अर्पण करण ने तैयार हो जानी ॥ पण बाँझ नहीं मुफ चन्धयो ।
निनोभी गुण आगार हो जानी ॥ सु० ॥ १५ ॥ जेमे तात लघु बाल को सुखडी
म भग्माट जाय हो जानी ॥ त्यो इन राज में भोलिया । गया मुफ छिटकाय हो

ज्ञानी सु० ॥ १६ ॥ यह राज नहीं महेरो । में नहीं मालक पास हो ज्ञानी ॥ मि-
लिया नही भाई मुक्त भणी । जो वाया घणा ताम हो ज्ञानी ॥ सु० ॥ १७ ॥
निगमा हट मुक्त अति । तव परवश करने काम हो ज्ञानी ॥ बैठो में राजगादीये ।
अभिग्रहधारा तामहो ज्ञानी ॥ तु० ॥ १८ ॥ जहांलंग भाइजी नहीं मिले । छत्र
धरु नहीं रोग हो ज्ञानी । चामर बीजायो नहीं । राज चिन्ह तजते दीस हो ज्ञानी
॥ सु० ॥ १९ ॥ उमंग घर्णा मन मिलण की । पण नहीं सुण्या समाचार हो ज्ञानी ।
जो तुम जाणा नो शीघ्र कहो । मानुगा अति उपकार हो ज्ञानी ॥ सु० ॥ २० ॥
यो सुण जयजी खुशी हुवा । अष्टादशमी यह ढाल हो ज्ञानी ॥ अमोल ऋषि
कहे आगे सुणा । दोनों प्रगट मिले उजमाल हो ज्ञानी ॥ सु० ॥ २१ ॥ दोहा ॥
निर्मानिक कहे विजय को । आकर्षण विद्या चल ॥ जयजी चन्धव तुमारडा । आवे
सीण में चल ॥ सु० ॥ १ ॥ भूप कहे शीघ्र ते करो । देखुगा वांछित इनाम ॥
इममुण ताई निमन्त्रियों । अटश्य होगयो ताम ॥ २ ॥ नेमन्त्रि रूप छोडी करी ।

मूलंगे रूपे थाय ॥ वस्त्र भूषण दीपता । माज्ञात इन्द्रमाय ॥ ३ ॥ मगन में उचर के
आर्चिया । विजय मभा के मभार । अचंगे महजन अति । देख के यह चमन्कार
॥ ४ ॥ विजय पैछानी आत को । आनन्द अंग न माय ॥ उमंगी आ पञ्चा चरण में ।
आंश्रुयें ते धोवाय ॥ ५ ॥ छ ॥ हल ॥ १६ वी ॥ पोप दशर्षा दिन आनन्दकारी
॥ यह ॥ मञ्जन मुपात्र मिल सुख हावें भारी ॥ ते जानें ज्ञानी के तम आत्मा ॥ ६ ॥
उह कांटी गेम गया विक्रमारी । नेत्रमें वों हों का वारी । धन्य दिन बडी आज
हमारी । कुशले भेट्य जेह आतारी ॥ मञ्जन ॥ १ ॥ दोनों उचमाम ने बैठा बरोबर ।
अनिमेष रहें आपस में निहारी । जय कुपर निज बीती हकीकत । गया उचित
भाह आगे उचारी ॥ म० ॥ २ ॥ विजय नरमी कहें राज मंगलों । में तो गया
में रहंगा तुमारी ॥ जो जोग मो तम स्थान ही सोहे । दाल विचार न कीजें ल-
गारी ॥ म० ॥ ३ ॥ जय कहें तुम उपार्जित मुक्त । योग्य नहीं लेयो नीति नि-
चारी । भूत्यो मन्त्र पुनः याद करावो । यह भक्ति मादो हिये थारी ॥ म० ॥ ४ ॥

अति अग्रदूत कीयो राज लियो नहीं । तब राज मन्त्र दीयो तस सुनारी ॥ धारी
 मन्त्र भाड कुशल पूछता । तत्क्षीण उडगया गगन मझारी ॥ स० ॥ ५ ॥ भोग-
 वर्ती नगरी में आया । जहां मेहेल हे निज इक्ष्वारी ॥ एकान्त रही ते मन्त्र ने
 माद्यो । जेमी विधी यक्ष पास से धारी ॥ स० ॥ ६ ॥ भोगवति पुरषति की सभा
 में । आया निमित्त झा । का धारी ॥ कहे नृपति से सुणो होवो सावध । बात
 चेनांचु एक चमत्कारी ॥ स० ७ ॥ इसी यक्ष तुफ पाटवी कुंजर । उन्मत होवें जो
 मद छक छारी ॥ तो तुम बात मानो मुक्त साची । आज सेही दिन सात मझारी
 ॥ स० ॥ ८ ॥ थारां आयुर्वल पूर्ण होवेगा । इसमें संशय नहीं लगारी ॥ होए-
 दार टले नही टाल्यो । पुक्त देखो में ज्ञान लगारी ॥ स० ॥ ९ ॥ हितेच्छु हो
 शांघ आंचो यहां । ले निजात्म काज सुधारी ॥ दान धर्म सुकृत्य सु करणी ।
 करना सो करले वक्त हे यारी ॥ स० ॥ १० ॥ इतने में तो सुगयो सहाय करो
 शांघ । गज मद छक करे जुलम अपारी ॥ सुणपर तोंत्या वयण ज्ञानी का ।

ज्ञागया नाम परम उपकारी ॥ स० ॥ ११ ॥ निश्रय में अब दिन सात में । पर
 वश्य छोड़ जाम्यं अर्द्धि मारी ॥ जो कुछ करना होवे सो करलें । जो पर भव
 मग यावे धरार्ग ॥ स० ॥ १२ ॥ निमन्त ज्ञानी को मनुष्ट कीना । ततो गया स्व-
 रवान दारार्ग ॥ रायजी ज्ञान दया धर्म उन्नति । कीनी लीनी खरचो टकारी ॥
 स० ॥ १३ ॥ जयजी को बोलिकें पर्यं । हियं मुक्त अर्द्धि सह तुमारी ॥ द्रव्य मं-
 भाना प्रजा पालो । आज्ञा मुक्त देवो इन वारी ॥ स० ॥ १४ ॥ अचंभी नरमी
 जयजी उचारं । अर्थचिन्त यह क्या आप विचारि ॥ रायजी जान प्रकाशी निम-
 न्तनी । तव निग राज अर्द्धि स्वीकारी ॥ स० ॥ १५ ॥ पुरपति तव अर्द्धि त्या-
 गी । जिनेंद्र परूपित दीक्षा धारी ॥ एकान्त स्थान आसन द्रढ स्थापी । हुवा
 ध्यानमन मंरुर्गरी मारी ॥ स० ॥ १६ ॥ पदस्थ से पिण्डस्थ में पेठा । रूपस्थ ध्या-
 ता रूपानी नारी ॥ यों धर्म ध्यान रमे वर्या शुक्ल । लपक श्रेणी चंडे शीघ्रतारी
 ॥ स० ॥ १७ ॥ वेद कपाय कीया जीणमें लय । सयोगी केवल ज्ञानी भयारी ॥

[illegible]

संयोग में । कौन नहीं हर्षित ॥ ५ ॥ उल्लेखे लाया पुर विणे । मिल दम्पति सुखी
होय ॥ रंहे मुख में जयजी इहां । हिवे धर्म कथा सुणो लाय ॥ ६ ॥ छ ॥ ढाल
२० जी ॥ दन्ताली लालन की ॥ यह ॥ पुण्याइ जयजीकी । सुणो २ हो भवीका
चिन लाय ॥ पुण्य ॥ रंर ॥ तिण अवसर पथारीयाजी । जयपुर बाग मझार ॥
चरण करण गुण मागरुजी । मुनिवर बहु परिवार ॥ पु० ॥ १ ॥ वनपालक सज
हाय के जी । राज शभा में आय ॥ दी वधाइ मुनि आर्यायाजी । सुणी सब अति
हर्षाय ॥ पु० ॥ २ ॥ मजी साजाइ राजवीजी । ले संग मेना सज्जन ॥ बंधा आ
मुनिवर भर्णाजी । नेमे ही बहु पुरजन ॥ पु० ॥ ३ ॥ परिपद बैठी भरायके जी ।
जग नारण मुनि गय । वाग्यों धर्म उपदेशने जी । अहो सुणो भव्य चित्त लाय
॥ पु० ॥ ४ ॥ अनित्य अमार संसार में । मिल्यो मतलबी सब परिवार ॥ चीण
भेगर गरीर यह जी । मुरजाहो किसे ही विचार ॥ पु० ॥ ५ ॥ पुण्य संचातो
मिनी मायवीये । पुण्य खुटे विरलाय ॥ पुण्य अचे सुकरणी करे तो । अजरामर

वन जाग ॥ पु० ॥ ६ ॥ वनी वक्र में सभी वने जी । विगड्या वने न कांय ॥
 ॥ ५ ॥ ७ ॥ इत्यादि गुरु देश-
 ना ॥ १ ॥ अमृत वृष्टि सम ॥ मुरजा मिथ्यात्मी जवामीया जी । भव्य वंपक गड रम
 ॥ ५ ॥ ८ ॥ सम्यस्त व्रत केइ वर्षाजी । बैराग्या नृपाल ॥ वंदी मुनि मव निज
 गड ॥ १ ॥ आया फिरी तत्काल ॥ पु ॥ ६ ॥ चिन्ने पुत्र सो होय के जी । एकही
 नेहा ॥ १ ॥ जोग ॥ जयजी सहू गुण मंपनार्ज । देवुं गजगुण बोग ॥ पु ॥ १० ॥
 शांभु गुलाड जय भणीजी । दर्शायो ते विचार ॥ मो कहे सहू सला लेइजी । करो
 राम सम्यहार ॥ पु ॥ ११ ॥ राणी पुत्रों मंत्रीने जी । कही उपजी सो बात ।
 जने। मर्वा के मन विरेजी । जयजी ने गार्दी बैठत ॥ पु ॥ १२ ॥ जेत्रमल राजे-
 भर । कर महोत्सव दिक्षा लेय ॥ अंग एकादश मीन्रिया । फिर तय हुकर मा-
 द्यो नेय ॥ पु ॥ १३ ॥ मोचित कर्म सुपाय के जी । पाया केवल ज्ञान ॥ घणा
 ॥ १ ॥ भर्वा को तारके जी । पायापद निर्वाण ॥ पु ॥ १४ ॥ जन्य प्रमाण ते नस्तर्षोजी ।

अथमेरु कर उद्धार ॥ जेत्रमल ऋषिराज त्यों ते । पावे सुख श्रेयंकार ॥ पु ॥ १५ ॥
॥ जयपुर पनि जयजी भयार्जी । मंभाली राज लगाम ॥ संतोष्या सब साजना
नी । अरि युक्त जे ठाम ॥ पु ॥ १६ ॥ धर्म कामार्थ साधताजी । सुख से रहे ॥
जयगय ॥ दाल वीम अमोलक कहेजी । पुण्ये सुख मवाय ॥ पु ॥ १७ ॥ ॐ ॥
दोहा ॥ त्रिग दिन मे जय कुमारजी । तज्यो कामलता गेह । तिसदिन से पति-
व्रता मम । अभिग्रह धरही तेह ॥ १ ॥ स्नान भूषण मही वस्त्र तज्या । न कियो
मगम आहार ॥ एकान्त वाम मयन धरा । अल्पभाषी आचार ॥ २ ॥ अक्का सम-
जाये घर्णा । ते माने नलगार । मांस द्वादश वीतीया । तव सुणीया समाचार ॥
३ ॥ जयजी जयपुर पति भया । उमंगी मिलण तेवार ॥ आक्का लाह वेठाय के ।
गिचिका में दग्धार ॥ ४ ॥ वीती वात कही भूपने । सत्यवन्ती तस जाण ।
गर्वा अन्नेउगी बिये । प्रेम पोषी प्राण ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल २१ वी ॥
वीमंमर्ति नाम जिनंदजी को ॥ यह ॥ जय विजय नृपति का पुण्य भारी ॥ जय ॥

दर ॥ दो देश अधिपति भया जयसेनजी । गुणवन्ती मिली तीन नारी ॥ जय ॥
 ॥ १ ॥ तीन मिट्टी तीन लोक में अपर बल । बिलसे सुखसो सुरसारी ॥ जय ॥
 ॥ २ ॥ एक दिवस बन्धु याद आयो । अदि युत मिलणो हिवे जारी ॥ जय ॥
 ॥ ३ ॥ बहूत चिन्तोहा रत्ना इत्ता दिन । अवतो रेवां एक ठारी ॥ जय ॥ ४ ॥
 आमंचन तब गज भोलायो । नीति रीति सब चेतारी ॥ जय ॥ ५ ॥ जौर
 याग्य बन्दोवन्त मय करीयो । कराइ सेना सज सारी ॥ जय ॥ ६ ॥ तीनों राणी
 न माथही लीना । और अदि बहू श्रेय कारी ॥ जय ॥ ७ ॥ शुभ महूर्त प्रयाण
 कर्यो तब । हयगय रथ दल परिवारी ॥ जय ॥ ८ ॥ प्राहूणाचारी करता मार्ग में ।
 पुर २ पत्नी घर मनवारी ॥ जय ॥ ९ ॥ सुखे २ यों मुकाम करंता । आया काम
 पुर मीम मांगी ॥ जय ॥ १० ॥ समाचार ये पाया विजयजी । अनन्द पाया अ-
 पारी ॥ जय ॥ ११ ॥ शाघ हुकम कीयो करो सजाइ । नगरी स्वर्ग मी सिणगारी
 जय ॥ १२ ॥ आप सबी परिवार संघाते । मन्मुख आया पाय चारी ॥ जय ॥

॥ १३ ॥ देख जेष्ट भाट उमंग भराइ । जा पड्या चरणों मझारी ॥ जय ॥ १४ ॥
 उठाट जय हृदय में भाइया । गर्क प्रेमस्त गुलतारी ॥ जय ॥ १५ ॥ मेमांशुत कहे
 अचिन्य गया तनी । में दुःख पाया अपारी ॥ जय ॥ १६ ॥ आज कृतार्थ
 मुन न दोनो । आह नन्मुख दयालारी ॥ जय ॥ १७ ॥ दोनों आरुद्ध हुवा एकही
 मन पर । रवी जर्गा गम शोभतारी ॥ जय ॥ १८ ॥ सब परीवारे चल मध्य
 वज्रार ॥ अत्र गर्ज चमर दुनारी ॥ जय ॥ १९ ॥ सहकारों मोती मेह वर्षाया ।
 मानागर्गा लिया न धारी ॥ जय ॥ २० ॥ आया मेहल में राज सभा में । मिहा-
 मण दीप दोनो चटारी ॥ जय ॥ २१ ॥ सुखे २ दोनों रहे एक स्थाने । लघु जेष्ट
 अन्तर्गत मझारी ॥ जय ॥ २२ ॥ देख भक्ति तुष्ट्या जयजी विजय पर । मणी ओषध
 तम मम यारी ॥ जय ॥ २३ ॥ निश्चिन्त रहे सुख भोगे इच्छित । राज तिहुं को
 संयारी ॥ जय ॥ २४ ॥ ढाल इक्कीसी गाढ़ अमोलक । पुण्य फल सदा सुखकारी
 ॥ जय ॥ २५ ॥ दोहा ॥ एकदा विजय रायजी । सुख सेजा के माय । सूता

नोपान पार्श्वम निरा । स्वप्न अचिन्त्यो आया ॥ १ ॥ जयति नयरा स्वग सा ।
 ननु न राजा गुण धार ॥ विजिया तनुजा तेहनी अतुल्य गुणागार ॥ २ ॥
 मरग मरु न तेहनी । रुचो अजय रंग डंग । राज राजेश्वर बहु मिल्या । घरता
 मरग मरु ॥ ३ ॥ मर्व राजा को परहरि । विजयावरी विजय तांय ॥ ह्ये स्यन्द
 मरग मरु ॥ ४ ॥ तत्त्वीण जाम्रत धाय ॥ ४ ॥ तत्त्वीण उठ बैठो हुवा । आश्चर्य
 मान मन लाय । कि हों विजीया किहां जयंतीपुर । किम स्वप्न यह मुक्त आय ॥ ५ ॥
 ॥ ५ ॥ न्यालेदे की देशी में ॥ सुणजो कया पुण्यशालीनी जी भाइ ।
 पुण्य भदा सुखदाय ॥ पुण्यवन्त ने पुण्यवन्त मिले जी । जो दूर देशे ही रहाय
 ॥ ६ ॥ चिन्ते अचिन्त स्वप्न आबीयो जी कांइ । यह तो सोदो नहीं धाय ॥
 ज्ञा भाइनी रत्ना लइ जी । लेंगू स्वप्न अजमाय ॥ सुण ॥ २ ॥ प्राते जणायो
 जय भर्णाजी भाइ । दी आत्मा तत्काल ॥ मणी प्रभावे स्वगति जी । गया जय-
 न्ति चाल ॥ सुण ॥ ३ ॥ चिन्ते इण रूप में मुक्करे जी कांइ । तामे आश्चर्य

काय ॥ करुणो वणुं जो मुजवरै जी । तो मलय स्वप्न जगाय ॥ सुण ॥ ४ ॥ मणी
 प्रसाये नव कयों जी भाइ । विद्रुप कुब्ज स्वरूप ॥ कृव मोटी उर प्रष्टो जी । डे-
 गणो नन मर्म्या ऊप ॥ सुण ॥ ५ ॥ एकण पंगे लंगडा वगया जी भाइ । पेट
 गयो पानान्न ॥ कर पग दुर्बल बौकडा जी । चालि डगमग चाल ॥ सुण ॥ ६ ॥
 चौबदा आग्यां घेटी नारीका जी कांड । श्लेपम ताभे मड्डाय ॥ दंत तीन मुख
 बाहरै जी । लांबा होट हलाय ॥ सुण ॥ ७ ॥ मस्तक मूंछ ने दाढ़िना जी कांड ।
 कवग विभव्या चाल ॥ फटे मलीन वस्त्र तन मजी जी । पंडे मुख मोहै से लाल ॥
 म० ॥ ८ ॥ जेष्टाका महाही कर विपे जी कांड । डगमग चल्या जाय ॥ शीशु
 पांछ देखवा जी । हंम आप ताम हंसाय ॥ सु० ॥ ९ ॥ मवरा मंडप में पैसीया
 जी । हंमरीया मव जन जोंय ॥ मव से ऊंच आसन कियो जी । कमलें डोन्ग्यो
 मांय ॥ सु० ॥ १० ॥ ता ऊपर विराजीया जी कांड । मूंछ देता ताव ॥ अक्को
 कता मव भूप को जी । जणाना परणण भाव ॥ सु० ॥ ११ ॥ हंमना लोक कहै

तेहनेजी कांड । थहो २ रूप प्रधान । परएन् आवा पद्मणीजी । वणकर वीदरा-
 जन ॥ सु० ॥ १२ ॥ ते हट कर कहे परणसूं जी कांड । निश्चय हूं विजीया तांय ॥
 हम मां मां रांमां घणजी । देखो थवी क्षीण मांय ॥ सु ॥ १३ ॥ राते कुलदेवी
 स्वप्न में जी कांड । चेतायो विजीया तांय ॥ वरजे कूरूप कूवडा भणी जी ।
 जो पूर्ण सुख चहाय ॥ सु ॥ १४ ॥ कुमरी रह्यो ध्यान में जी । न्हाइसजी
 मिणगार ॥ दासीयों घुन्दे परिवरीजी । नेपुरने भणकार ॥ सु ॥ १५ ॥ हरती
 मन नयन महतणजी कांड । पेठी मंडप मांय ॥ वेत्रधारणी दरसावतीजी । रूप
 नृप आदां मांमाय ॥ सु ॥ १६ ॥ नम अदि कीर्ती नृपों कीजी कांड । सुणाती
 आगे जाय ॥ कुमरी घरे नहीं कोयनेजी । कूवडों रही चित ध्याय ॥ सु ॥ १७ ॥
 आंय जिम नृप मन्मुखे जी कांड । हों दीये तस नूर ॥ तजीने आंगल संचरे जी ।
 तव शोकां होय उत्तरे ज्यों पुर ॥ सु० ॥ १८ ॥ तेतले बीजय कुब्ज आर्वीया जी कांड । वेत्र
 पदमणी चिन्ते पुर ॥ जो सन्ने नर्मी तमणस जी । जो पन्कि सँग लगे टोपन ॥ सु० ॥ १९ ॥

आर्क्षी स्वीजी हय ऊचरे जी वाह । मयमे अधिक गुणधाम ॥ वरनो तो वर ये कृपडो जी ।
 नीह मिले पेसा अन्ध ठाम ॥ सु ॥ २० ॥ दासी वेण देवी केणथी जी । कुञ्ज गले
 हुली वरमाल ॥ अपि अमोले आर्क्षयनीजी । कांइ । भास्वी यह वारवी डाल ॥ सु ॥ २१ ॥
 ॐ ॥ दोहा ॥ मय राय अमुरक्त भये । कहे मुख कन्या गेह ॥ मरोल मम महीपति
 नर्त्ता । वायम भिन्नु के धर्यो नेह ॥ १ ॥ पण जुगतो नही राय ने । देनी नीच जाति
 ने बान ॥ म्वागी लो कुञ्ज कने थकी शीघ्र ये वरमाल ॥ २ ॥ कोपातुर वदे नरवरा ।
 छोड कुञ्ज वरमाल ॥ तुझ जोगी कन्या नही । भाग्य प्रमाणे चाल ॥ ३ ॥ कुञ्ज उचर आयो
 नही । नव आनि लाइ रीम । कहरे अर्प वरमाल शीघ्र । नही तो छेदां सीस ॥ ४ ॥
 ममना माय भोलें कुञ्जजी । वदे नही एकवाच ॥ धर्य मे धोका टले । जरान
 लागे आंच ॥ ५ ॥ ॐ ॥ डाल २३ वी ॥ राघव आवीया हो ॥ गह ॥ राजिन्द आवीया
 हो । दोकर मवही शूर ॥ ६ ॥ लेहकर करवाल नार्गी । बोलें वचन विकराल ॥
 अरे थीटा हीये चीटा । छोट शीघ्र वरमाल ॥ ग ॥ १ ॥ गम्भीर वयण तव कुञ्ज

मान । धरों हन भार्गी राय ॥ निज देव पर रोश करो तुम । मुझ पर किया
 भ्या थाय ॥ रा० ॥ २ ॥ खोटा कर्म तुमारडा । न लगी पदार्णी हाथ ॥ फोकट
 गन म्या काम थाये । भरो वायु की वाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ यों दुर्गम वयण सुण
 भव । आन प्रज्वन्या अंग ॥ कुमरी को कर घर खेंची । चड्यो कुञ्ज को रंगा ॥
 रा० ॥ ४ ॥ थोपयी निज अनन में घर ॥ जेष्टिका दृढ कर सहाय कूटवा लगा
 मवा राय को । ज्यों नेरीयों को जपराय ॥ रा० ॥ ५ ॥ ते उलट खड्ग हणै
 सुन्न का । जरा न लागे वाय ॥ कुञ्जे मार्या पड्या घरणी । आश्चर्य घरे सव
 राव ॥ रा० ॥ ६ ॥ मृगपति देख मृग भागे । त्यों भग्या नृपाल ॥ केइक लंगडा
 लला भट्या । कंड़ डिग पहुँता काल ॥ रा० ॥ ७ ॥ खेदाश्चर्य घर कहे सुज्ञ
 नव । यह नर नहीं काँइ देव ॥ महा जोषा वीरे हराया । एकडले इण हेव ॥ रा०
 ॥ ८ ॥ मन्न अनितिनित चिन्ता घरता । घर २ अंग धराराय ॥ मान मर्या
 प्राहणा का । सरमाया नूर राय ॥ रा० ॥ ९ ॥ कन्या तान भया चिन्तानर ।

पुत्री देवे किम तांय कुञ्ज ने देतां राय कोपे । निद्या जग फैलाय ॥ रा ॥ १० ॥
राय को देतां कुञ्ज कोपे । कर मय मंदार ॥ दिग मुड मम होकर बैठो । मुचने
कोह विचार ॥ रा० ॥ ११ ॥ विन्न में मन्तोप करने । नमथी उतयो विमान ॥
नेहर्था उतर एक ग्वेचर नरमी । करजोड़ी बंद्याण ॥ रा ॥ १२ ॥ अहो विजय नरेन्द्र
जयवन्न । बनों मदर्हा आप ॥ राय भूषण मौली मर्णा मम । बडो तेज प्रताप
॥ रा० ॥ १३ ॥ कुञ्ज चिन्ते दान डुब्झक । बोलै विरुदावली दोय ॥ दान आपण
कर लेवायो । फिर नरमी कह मोय ॥ रा० ॥ १४ ॥ गिरी वेताह्यें दक्षिण श्रेणि में । राय क-
न्या महात्म्य ॥ प्रज्ञामि विद्या आगर्था । पूछे कर घर नृप ॥ रा० ॥ १५ ॥ मुर्गी स्वल्प
रु मोहमा आपकी । वरणी सुण हर्षागय ॥ तेडवा मुक्त बहां पठायां । पधारो
जात्र महागय ॥ रा० ॥ १६ ॥ यों विनंती बहु विव कस्तो । तवही तान मग्याय ।
दुमरा ग्वेचर आकर उतर्या । वाल्या विजय को वधाय ॥ रा० ॥ १७ ॥ उत्तर
श्रेणी विद्याधरनाथ की । कंन्य गुण रूप अपार ॥ रोहणी मुर्गी ने पूछा कर निज ।

आपे चमरणा अपार ॥ रा० ॥ १८ ॥ बोलाना में सचीव आयो । शीघ्र चलो
 रायनाथ ॥ कुञ्जजी रहे मोनघारी । सब देख अति अचंभात ॥ रा० ॥ १९ ॥
 यह नहीं कुञ्ज छे नरेन्द्र को ॥ विजय विधान प्रसिद्ध ॥ खेचर पत पुग सेव चहावे
 । तो नर हे को बिध ॥ रा० ॥ २० ॥ कौन कहाँ का कुञ्ज क्यों वने । संशयी
 आनन्द विशाल ॥ अपि अमोल पुण्य प्रताप की ॥ कहीं त्रीवीस ढाल ॥ रा० ॥
 २१ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ अचसर ओलखी विजयजी । कुञ्ज रूप कियो दूर ॥
 पुरेन्द्र सम मूल रूपे रह्या । दीपे भलहल नूर ॥ १ ॥ सर्व नरेन्द्र आइ नम्या ।
 अहो पुण्य कृपा निधान ॥ अजा जे गुनो हुबो माफ कर । वने रहो मेहरवान
 ॥ २ ॥ पुग खेचर करे विनंती । शीघ्र चलो महाराय ॥ विजिया तात प्रणमी
 केहे । परया विना न जयाय ॥ ३ ॥ मानी विजयजी अर्ज ते । नभचर रखे सा-
 दर ॥ परया विजीया ठाठ से । दम्पति आदि प्रेम भर ॥ ४ ॥ परसंसेय सब
 वाइ युद्ध । किया राजेन्द्र भरतार ॥ मुखे रहे विजयजी तहो । खेचर बात विमार

॥ ५ ॥ ॐ ॥ दान ०४ वी ॥ जिह्वा की देखी में ॥ तब तहाँ खंचर विजय ने
 विमयी जार्ण हो ॥ पुग्य फल सुखदाय ॥ तब तहाँ खंचर विजय ने विमयी
 जार्ण हो ॥ गर्जिन्द ॥ आया चेतदा नमी विजय मधु चार्ण हो ॥ पुग्य फल ॥
 आया चेतदा नमी चेतनं मधु चार्ण हो ॥ राजिन्द ॥ ? ॥ यहाँ आय मुन्वमें
 लब्धि दसन भल्या दर्जों स्वामी हो ॥ पुग्य ॥ यहा ॥ ग ॥ इम सुण विज-
 यर्जा चिन में गरम अति पामी हो ॥ पुग्य ॥ इम ॥ २ ॥ तम माथर्हा जावा
 जार्ण ही मन्त्र मो थाइ हो ॥ पुग्य ॥ तम ॥ ग ॥ पत्नी स्वमुर ने योग्य
 वचन म ममभाइ हो ॥ पुग्य ॥ पत्नी ॥ ग ॥ ३ ॥ बैठ विमाने अगमाने
 पन्थ में चाल्या हो ॥ पुग्य ॥ बैठ ॥ ग ॥ गीरी वेताइ रुया का पहाड
 निहाल्या हो ॥ पुग्य ॥ गिरी ॥ ग ॥ दक्षिण श्रृंगिये पचाम नगर लेणी
 जांस हो ॥ पुग्य ॥ द ॥ ग ॥ जगती चार्णिया गुगल खंचर देखी लेभि हो
 ॥ पुग्य ॥ ज ॥ ग ॥ ५ ॥ जयतीपुर जयन्त राज नभा आया हो ॥ पुग्य ॥

॥ ज० ॥ रा० ॥ उत्तर्या विमान से माधव समान शोभाया हो ॥ पुण्य० ॥ उ० ॥
 रा० ॥ ६ ॥ भ्रंचर पति सपरिवारे उधरंगे वधाया हो ॥ पुण्य० ॥ खे० ॥ रा० ॥
 धणैही मन्मान से ऊँचे आसन बैठाया हो ॥ पुण्य० ॥ धणे० ॥ रा० ॥ ७ ॥
 अति आडम्बर लभोत्सव को कराइ हो ॥ पुण्य० ॥ अति० ॥ रा० ॥ जयती
 नामे बाढ़ विजय ने परणाइ हो ॥ पुण्य० ॥ ज० ॥ रा० ॥ ८ ॥ कन्यादान सु-
 प्रमान देवन की बारे हो ॥ पुण्य० ॥ कन्या० ॥ रा० ॥ प्रज्ञाति महाविद्या दीवी
 सुवकांग हो ॥ पुण्य० ॥ प्रज्ञा० रा० ॥ ९ ॥ और यथा विवी सुसरे जमाइ स-
 न्मान्य हो ॥ पुण्य० ॥ और० ॥ रा० ॥ अपूर्व लाभ ले अनन्द विजय अति
 मान्या हो ॥ पुण्य० ॥ अपूर्व० ॥ रा० ॥ १० ॥ सर्व सुख में लीन स्वस्वकाल तहां
 रह हो ॥ पुण्य० ॥ सर्व० ॥ रा० ॥ दूसरे विद्याधर युत नृप सम्मती लेइ हो ॥ पुण्य०
 ॥ दृम० ॥ रा० ॥ ११ ॥ बैठ विमान में पुनः अममान में चाल्या हो ॥ पुण्य० ॥
 बैठ० ॥ रा० ॥ उत्तर श्रेणि साठ नगर का ठाठ निहालया हो ॥ पुण्य० ॥ उत्त० ॥

रा० ॥ १० ॥ चित्रगर्गनि नगर अद्धि भिद्धि भर में पधार्यो हो ॥ पुग्य० ॥ वि० ॥
 रा० ॥ चित्रगर्गन्न भणत दर्पत विजयजी ने जोड़ हो ॥ पुग्य० ॥ विज० ॥ राजि०
 ॥ १३ ॥ पुग्यान्म जमाह ने लियसो बधाह हो ॥ पुग्य० ॥ पुग्या० ॥ रा० ॥
 अति आहुचम चित्रगर्गनि बाह परणाह हो ॥ पुग्य० ॥ अति० ॥ रा० ॥ १४ ॥
 महाविद्या तम राहणा नाम मु दीनी हो ॥ पुग्य० ॥ महा० ॥ रा० ॥ अति आ-
 नन्द चित्रगर्गो गृहण तम कीनी हो ॥ पुग्य० ॥ अति० ॥ रा० ॥ १५ ॥ थोडे
 काल तहां रह पुनः कर्ग तैयारी हो ॥ पुग्य० ॥ थोडे० ॥ रा० ॥ निजपुर जाने
 भ्यममर्गादि रजा गृही जहारी हो ॥ पुग्य० ॥ निज० ॥ रा० ॥ १६ ॥ गजगाजी
 दास दामा मगन चार्ग दीना हो ॥ पुग्य० ॥ गज० ॥ रा० ॥ सब अद्धि से परि-
 चर्ग नभ मार्ग लीना हो ॥ पुग्य० ॥ सब० ॥ राज० ॥ १७ ॥ पुनः जयन्ति
 आया मुख में गहा या हो ॥ पुग्य० ॥ पुनः० ॥ रा० ॥ तहां से भी अद्धि अ-
 भिक ले आंग मिधाया हो ॥ पुग्य० ॥ तहां० ॥ रा० ॥ १८ ॥ जयन्ति विजन्ति

नारी अवग समानी हो ॥ पुण्य० ॥ रा० ॥ काम देव ने रति प्रीति
जाडा गो जानी हो ॥ पुण्य० ॥ काम० ॥ रा० ॥ १६ ॥ और मव
आदि नेज बल कर सोभे हो ॥ पुण्य ॥ और ॥ रा० ॥ ऐमे ठाठ से काम पुरे
बल आया हो ॥ पुण्य ॥ ऐमे ॥ रा० ॥ पुर बाहिर उत्तरीया खवर संचरी-
या हो ॥ पुण्य ॥ रा० ॥ लोक मव आश्रय भरीया देखन हरीया हो ॥
पुण्य ॥ २० ॥ जार्णी जयली सेना मंगल ताम सजाइ हो ॥ पुण्य ॥ जाणी ॥
रा० ॥ म मे आया लीना लघु बन्धव बधाइ हो ॥ पुण्य ॥ सा० ॥ रा० ॥ २२ ॥
नगरा गिणगार गोरडी गीन उचारी हो ॥ पुण्य ॥ नग ॥ रा० ॥ दोनो गज
आनट पैम्पा मव परिवारी हो ॥ पुण्य ॥ दोनों ॥ रा० ॥ २३ ॥ देखी खेचर भू-
चर अति विम्भाये हो ॥ पुण्य ॥ देखी ॥ रा० ॥ मोर्तीयो का मेह चर्पाडि राय बधा-
ये हो ॥ पुण्य ॥ मोनी ॥ रा० ॥ २४ ॥ आया मेहल मेहल मांही सुखे सहू साथ
रहाइ हो ॥ पुण्य ॥ आ० ॥ रा० ॥ बीती वास्ता आता ने बीजय मुनाइ हो ॥

लंठना ग्योमना त्रामना ठाकरा । जायजों खबर तात आवे अर्हिया ॥ १ ॥ आ-
नाप प्रनाप महा पुराय बलीया तणा । अरि हरी जय श्री वेग पावे ॥ टेरे ॥ शूर
ने वीर रणधीर राणा मिली । जोर को तोर अधिको जणावे ॥ आताप ॥ २ ॥
भार्गीया गर्जीया आया नरेन्द्रपे । दल बल बल रोंशे जगावे ॥ सुणी धर्मराय
भराय कोय अति । हे कोन दुष्टमुक्त सामे आवे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सजी सव फोज रख
चोज लड्या तर्णा । खोज खोवा दुष्ट अरी नर नो ॥ गज रथ पालखी भेट शूरा
मजी । शूर ज्यो गर्जीया मेघ भरनो ॥ आ० ॥ ४ ॥ मयंगल मद भर्या । सिणगारी
मज कर्या । श्याम घटा छाह ज्यों माघव आवे ॥ गुल गुलाट गर्जारव विद्युत होदा
चमक । लम्ब घगटा घोर नाद धाये ॥ आ० ॥ ५ ॥ तुरंग कुरंग ज्यों चपल पग
स्थिर नहीं । रंगमान चौफाल हणणाइ रहीया ॥ पालाण मजबूत रजपूत बैठा
मजी । शस्त्र मन्वन्ध कर सज थड्या ॥ आ० ॥ ६ ॥ रथ संग्रामी सजा । भण-
णाट अरि लजा । जरी खेल पचरंग नैजा फरके ॥ राणा बैठा मांय खेची धनुष्य

जमाय । पाँर अर्ग जग लोरे न सरके ॥ आ० ॥ ७ ॥ वक्कर संगीन रंगीन नयन
 गंज में । भूल भूल अस्मी न ली भाला कर में ॥ शूर रस में छके वके अरी
 जो भवों । सुर रस पर गणतूर रमें ॥ आ० ॥ ८ ॥ यों चतुरंगी बहजंगी सेना
 चर्न । धर्म राजा नर्गा चांज चाली ॥ आह्या कटक जहाँ प्रतिप्र कुमर का ।
 रग में चौगान विजाल भाली ॥ आ० ॥ ९ ॥ रणों गण भडावीया । सड चडा-
 रीया । निजाल कूगर्वीया दोनों राजा ॥ शस्त्र अस्त्र सजी अइ २ नाचें शूरमा ।
 चांजे नुजाचु रगनर बाजा ॥ आ० ॥ १० ॥ दयाल जय विजय यों देख चित्त
 चिन्नने । विन काम धमशाण महा अभी थावे ॥ महा पाप संग्रही निश्चय जावे
 मरी । नर्दा करुं गह अकूल भावे ॥ आ० ॥ ११ ॥ आपणी सेना को ना कही
 नटन की ॥ दोनों आह आगे ऊमा जो रहीया ॥ प्रति पक्ष तेन छेडेडी कू वेण
 कह । पक्ष बाजु मंत्राम चालूनी थह्या ॥ आ० ॥ १२ ॥ धर्मराय सेन रोग कर
 न्हाये शस्त्र कुमर पर ॥ औणधी महीमा कर नहीं लागे ॥ मेघ धारा ज्यों वों शस्त्र

मंन्या पर ॥ देख आश्चर्य सर्व मन जागे ॥ आ० ॥ १३ ॥ आये शस्त्र सब संग्रही
 ने टग कियो । नि शस्त्र हूइ पिता सेना जारे ॥ शूर मगदूर क्या करे शस्त्र बिना ।
 धर २ कमेंति इत उत सौ निहारे ॥ आ० ॥ १४ ॥ लेइ गदा दोनों बंधव लगे
 मारने । मंन्या निराधार ने भागी त्यारे ॥ धर्म राज लगे भागने कुमर जो लागने ।
 मन्मुख ऊभा अकर तारे ॥ आ० ॥ १५ ॥ अहो वृद्धि राजीया । बालसे भागीया
 लार्जिया कंगे देग जाने ॥ कौन गुने जय विजय अपमानीया । शीघ्र फरमावे ।
 यद्वाज महाने ॥ आ० ॥ १६ ॥ मो वीज बांये सौ फल अब आधीये । दोष जणावो
 कुमर कंगे ॥ दिन न्याय किये कयो रोपीय पुत्र मे । जानवा चाबे हमसोइ बेरो ।
 ॥ आ० ॥ १७ ॥ यौ बचन सुणी चमक्या तब धरा धणी । बेर लेवण येह कुमर
 आया ॥ उमंग्या प्रेम प्रेक्षी पुत्र यण निज । अजान अपराध हुवा कहे क्षमाया ॥
 आ० ॥ १८ ॥ मंक्षेप में बात दर्शाइ बीमा तनी । देवी कुरापात ये घात थाती ।
 तुम गया नन्तर जाणी खरी चरा सह । तब महारी घणा जली क्षाती ॥ आ० ॥

१६ ॥ चोक्कम करावी पावी नहीं तुम खबर । आरत घर आज तक रहीआ ॥
नम पुण्यान्म मिल्या चमत्कार कर । हों हीय न समाय भइया ॥ आ० ॥ २० ॥
हृदय चर्मी दोनों गर्क भया सुख में । मपूत पेखी सब हर्ष लावे । तो खुशी मा-
यित्र की केंमा बगणवी ॥ ढाल पञ्चीम अमोल गावे ॥ आ० ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥
जगन्ता पेखी तात की । हर्षा दोनों कुमार ॥ चरणे पडी अर्जी करे । हम
गुनगार अपार ॥ १ ॥ नाहक मताया आपने । कर अविनय भरपूर ॥ सब अप-
राध माफी करे । मायित्र मतिये भूर ॥ २ ॥ नृपति कहे संतोष ने । गुन्हो न हुवो
लगार । उज्जाल्यो कुल भोहरा । गाल्यो और अहंकार ॥ ३ ॥ महु पहचानी राज
पुत्र । हर्षित हुवा अपार ॥ मंगलतूर वजन लगे । परसरे सभी कुमार ॥ ४ ॥ खेचर
भचर पत भया । विद्या बलीया अपार ॥ ५ ॥ जीत्या प्रबल मेना ने । हिंसा न कीनी
लगार ॥ ६ ॥ ॐ ॥ ढाल २६ मी ॥ जीवो हो जीवो वीरा ॥ यह ० ॥ हर्षा हो
हर्षा मज्जन सहू घणा जी । प्रेक्षी जय विजय की रिद्धजी ॥ जोयो हो जोयो

प्रत्यक्ष चमत्कारन जा । विद्या घणा ब्रह्मसङ्गजा ॥ हृष्या ॥ १ ॥ अरा जन हा
अगी जन सुर्णनि लार्जीया जी । सज्जन पाया आणंद जी ॥ वाँटी हो वाँटी वधाइ प्रेम
की जी । आज मिल्या सुख सम्वन्ध जी ॥ हृष्या ॥ २ ॥ मुहूर्त हो मुहूर्त शुभ
तव आइयो जी । विबुद्ध कहे पुकार जी ॥ पेसण हो पेसण पुरमे अवी करोजी ।
मुहूर्त विजय श्रेयकार जी ॥ हृष्या ॥ ३ ॥ वेठा हो वेठा रायजी कुंजरे जी ।
दोड पाम कुमर वेठाइ हो ॥ मान हो माने सुख अति मन विषे जी । छत्र सिर
चमर वीजाय हो ॥ हृष्या ॥ ४ ॥ सेना हो सेन सब हुइ एकठी जी । खेचर चाले
स्वर्ग माय हो ॥ भूचर हो भूचर चाले भूचरे जी । ठाठ अनोखो देखाय हो ॥
हृष्या ॥ ५ ॥ बाजे हो बाजे अम्वर गर्जावीयो जी । हर्ष निशाण कर राय हो ॥
बोले हो बोले विरुदावली घणाली । बन्धीजन पुण्य सरसाय हो ॥ हृष्या ॥ ६ ॥
लीया हो लीया वधाइ गोरडीजी । शुद्ध द्रव्य गीत मिणगार हो ॥ चल्या हो
चाल्या मथ्य रथी जी । पस्वरी मद्ध परिवार हो ॥ हृष्या ॥ ७ ॥ निरखे हो नि-

रखे गोरय मे गोरडी जी । मर्गे श्री प्रज भवे हा ॥ दुःखी हो दुःखी हो ॥
विजय नीजी । गलीया शत्रु गर्व हो ॥ हर्षो ॥ ८ ॥ आयहो आय राज मगा
विपे जी । बेडा मो यया योग स्यान हो ॥ भस्त्रे हो भस्त्रे मचीन जग रायनो
जी । सुर्गा यो भव देह कान हो ॥ हर्षो ॥ ९ ॥ पुण्ययी हो पुण्ययी अद्रि पग-
पगे जी । पावे पुण्यय्य प्राण हो ॥ जयजी ने जयजी विजयजी राजीया जी ।
दुहाया किया प्रयाण हो ॥ हर्षो ॥ १० ॥ मांगे हो मार्गे यत्र मंनुया जी ।
दाया नीन रतन हो ॥ पाया हो पाया राज तिहु गोयका जी । बली संचयन
दामपन हो ॥ हर्षो ॥ ११ ॥ दानवी हो दाधी चर्ग भव दोइनी जी । सुर्गा मन
आश्रय पायहो ॥ आयुहो आयु सुख गिर्गना रहेहो । आर्गियाद सुखाय हो ॥
ह० ॥ १२ ॥ पहोता हो पहोता सहू निज २ घरे हो । अठाइ महोत्सव कराग हो ॥
दुःखीया हो दुःखीया सहू सुखीया कीया हो । दान धर्म फेलाय हो ॥ ह० ॥ १३ ॥
आया हो आया दोनों बन्धवा जी । निज २ माता ने पाम हो ॥ प्रणम्या हो प्र-

लभ्या गर्णाया मंग लेहो । चिरह दुःख कीया नाश हो ॥ १४ ॥ पूत्रज हो
पुत्र मपुता देखनां हो । जननी अति सुख पाय हो ॥ आशीर हो आशीरचंद्र
नार्याजी । हृदय सह ने लगा यहाँ ॥ १५ ॥ दीधा हो दीधा मेहल श्रेय
रहयाजी । मह मुम्य मामप्री मजाय हो ॥ परिवर्था हो परिवर्था हो । दोनो
रहं मुम्य माय हो ॥ १६ ॥ जोइहो जोइ रचना कुमर की हो । श्रीमति मन
सुगमाय हो ॥ आर्या हो आर्या राज नीय हो हुवा हो । सुफल्यर्थ गयो उपाय
हो ॥ १७ ॥ होनव हो होनव कोण दाली मके हो । पुण्यात्म सुख पाय हो ॥ यों
जाला हो यों जाला सुर्ता रही हो । मनही मन ममजाय हो ॥ १८ ॥
कुमरजी हो कुमरजी मर्णाद्र भाव दी हो । माये इष्ट सब काम हो ॥ तोपे हो तोपे
सब मज्जन भर्णा हो । पूरा इच्छित हाम हो ॥ १९ ॥ जाये हो जाये गगने
उड़ी कर्गजी । कर सह राज मुंभाल हो । रहने हो रहने पिना की झाँह में हो ।
मदोचित उजमाल हो ॥ २० ॥ बिलमे हो बिलमे मुख स्वर्गे ममा हो ॥

पुनः चोदयति ॥ पभोनेहो पभोने श्रुति समेन को हो । पुनः पुनः
विश्रुति हो ॥ ७ ॥ ८ ॥ दोहा ॥ निज अक्कर भुंइने । चोदय पुनः
अक्कर ॥ ९ ॥ १० ॥ मृनिवर नेगे । कम्पा परम उक्कर ॥ ११ ॥ नन्हेहो ॥
अक्कर ॥ १२ ॥ पडागत ॥ हय्या नृयादि मुर्ति । श्रुति भिन्नि नमुंइ जहाज
॥ १३ ॥ १४ ॥ अक्कर पर्यावर को । चालो गुणन व्याख्यान । भेसा चोदि
॥ १५ ॥ १६ ॥ अक्कर चत राजान ॥ १७ ॥ पुनन बहु उक्कर ॥ १८ ॥ पमिद चोदी भ-
॥ १९ ॥ २० ॥ अक्कर विरो ने चोदीये । उरे दजे अर्पा लोण ॥ २१ ॥ पमिद चोदी भ-
॥ २२ ॥ २३ ॥ अक्कर अक्कर अक्कर ॥ मने जीयो दिन कुराणे । मुनी मन्त्रोप हरमाण
॥ २४ ॥ २५ ॥ अक्कर अक्कर अक्कर ॥ मने जीयो दिन चोल ॥ यह ॥ नायो नेयो हो भय जीयो ।
॥ २६ ॥ २७ ॥ अक्कर अक्कर अक्कर ॥ निर्वान नाक मानन देही । पमा
अक्कर दन्नेन पाया हो ॥ नायो ॥ २८ ॥ निर्वान नाक मानन देही ॥ ना ॥ २९ ॥
नदेश भाया हो ॥ अर्पागधन मृत्र मुग्या । अर्पा ने सागयो हो ॥ ना ॥ ३० ॥
पुनः पुनः अक्कर परमाणनणा । मयादुधर हो जालो हो ॥ चीण भंगर ना मो-

धी पाइ । गुह मुरजाणो हो ॥ ला० ॥ २ ॥ यणी वक्रे जो चेत सुधारें । मामघ्री
 लभ्य लगाय हो ॥ तो जालभ दुःख क्षीण में गमाइ । अजयानन्द पावें हो ॥ ला ॥
 ३ ॥ इत्या ॥ ४ उपदेश सुणी । सहु सभा ध्यति हर्षाइ हो ॥ सम्यक्त्वं व्रत यया
 गात्र श्यामग । निज स्थान आइहो ॥ लावो ॥ ४ ॥ संवेगें भीना धर्म राजा ।
 कर नाही ॥ ५ ॥ राज पुत्र न देइ आसुं । संयम लेवा मरजी हो
 ॥ ला० ॥ ५ ॥ यथा सुम्ब करो सुनि फरमावें । धर्म में ढील न कीजो हो । वंदी
 गुह नृप राज म आया । धर्म मन भीजो हो ॥ ला० ॥ ६ ॥ जय विजय
 जय री रहें बोलाइ । राज ये तुम संभारो हो ॥ तुम सम सुपुत्र में पायो । फलं
 मधारा हो ॥ ला० ॥ ७ ॥ दोनों कहें आप पुण्य पसाये । राज सम्पत्त हम पाया
 हा ॥ यो राज देवों जयधीर ने । होवें मा चहाया हो ॥ ला० ॥ ८ ॥ तब नृप
 तीनों राणा बोलाइ । बैराग्य बात जणाइ हो । जन्म सुधारूं यणी वक्तु । तुम
 इन्हा फांद हो ॥ ला० ॥ ९ ॥ प्रभोजन चहुता हुआ नन्तर । तीनों राग्या बैरागी

हो ॥ कहे हय किमधिक करं रंही । आप जांचो त्यागी हो ॥ ला० ॥ १० ॥ तब
 नृपनि कहे रणधीर ने । राज मंभला भाइ हो ॥ जय विजय तो पाया राज अन्य
 । ये नुभ नांठ हो ॥ ला० ॥ ११ ॥ जयधीर कहे जयधीर पिता मम । हू तो राज
 न लेस्य हो ॥ विजय वरंगर भूत भक्ति में । मदाही रहस्युं हो ॥ ला० ॥ १२ ॥
 मव को मला मे विजय कुमार ने । जवरी मे गादी बैठाया हो ॥ तानमात का
 दीक्षा आंमव । जयजी मन्डाया हो ॥ ला० ॥ १३ ॥ मव परिवार वाग में आया
 । मंगारी वंश नजाया हो ॥ धारी मुनि वंश लीनी दीक्षा । जग दुःख छिटकाया
 हो ॥ ला० ॥ १४ ॥ मव परिवार चित्त आरत धरतो । फिर कर निज गृह आया
 हो ॥ मंगार गुण रहता सुख में । जगरूढ सहाया हो ॥ ला० ॥ १५ ॥ तीनों
 मनी रंही मनीयां मांठ । मुनि आचार्य ढिग रहा इहो ॥ प्रथम ज्ञान सीखे अति
 चंप । जे मिद दानाड हो ॥ ला० ॥ १६ ॥ नन्तर दुकर करणी करता । बाध्य
 अभ्यन्तर शुद्ध हो ॥ दृष्टि लगाइ निर्वाण पन्थे । जो दाखी शुद्ध हो ॥ ला० ॥

१७ ॥ धर्म ऋषि धर्म ध्यान से चढ़ाया । शुक्ल वरी शुक्ल भैया हो ॥ कर्म हटाइ
 केवल पाड । मुक्ति गया हो ॥ ला० ॥ १८ ॥ गतीयों ऊंचे स्वर्ग सिंघाड़ । थोड़े
 भेव मुक्ति पाड हो ॥ जन्म सफल जो आत्मा तरे । अवसरे भाइ हो ॥ ला० ॥
 १९ ॥ मर्मकित उन्मव जय विजय रासे । पुण्य अधिकार खण्ड पहलो हो ॥ ढाल
 मत्ताहम नाना रममय कानो मेलो हो ॥ गुरु प्रसाद कहें अमोलक । पुण्य का मंचय
 कर्माये हो ॥ तो जय विजय कुमार के जैसे । सुख शीघ्र वरीये हो ॥ ला० ॥ २१ ॥ ॐ
 ॥ हरी गीत छन्द ॥ श्रीममकितोत्सव सर्व सुखकर पुण्य फल दर्शाइया ॥ जय
 विजय दोने । पुण्य प्रनाये । अखूट अद्वि सुख पाइया ॥ ऐसा जाए सुखार्थि प्राण
 निर्वद्य पुण्य मंग्रह करे । कहें अमोलक तस पसाये, धर्मकर शिव सुख वरो ॥ १ ॥ ॐ ॥

पम पञ्च श्रीकटानजी ऋषिजी महाराज के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी

मुनिश्री अमोलक ऋषिजी महाराज रचित—समकितोत्सव—जय विजय

चरित्र का पुण्य अधिकार नामक पूर्वाधे खण्ड समाप्त ॥

श्री गुरुभ्यो नमः "समर्पितोत्सव" जयमेण विजयमेण चरित्र का सम्यक्त्व
 अधिकार नायक द्वितीय उत्तमार्थ खण्ड प्रारंभ ॥ दोहा ॥ प्राणमुं सिद्ध साधु चर-
 ण । नरमार्गन गुरु पाय ॥ विघन हरे मङ्गल करे । द्वितीय खण्ड वरणाथ ॥ १ ॥
 समर्पित मंगल धर्म वृत्त का । व्रत शान्त कीर्ती पान ॥ यश दुसुम फल मोक्ष दे ।
 आराध मान ॥ २ ॥ विजयमेण सम्यक्त्व द्रढ । पाली संकट मांय ॥ गृहेवासि
 कान्त देहा । पाय मुख शाश्वताय ॥ ३ ॥ अद्धि वृद्धि हुइ कहू । यशः सुख वि-
 र्णाग ॥ यमाद नत्रा विन चटक धर । कथा सुणो धर्म धार ॥ ४ ॥ जय नृपति
 चर रात्र चर । विजय अनुज्ञाय रेय ॥ प्रीति पयोदक सारस्वी । अन्तर छे फक्त
 देय ॥ ५ ॥ योना वहन काल वृत ते । पेमी तरह मुख पाय ॥ एकदा विजय
 कुमार ने । पश्चात मरण आय ॥ ६ ॥ राज देइ सचीव को । मेलुवा यहां आय ॥
 अत्र जात्र जाकर नहां । मंतोपु परजा तांय ॥ ७ ॥ छ ॥ ढाल ? ली ॥ सेयां ये
 मांय चुरंग लगो उम दिन को ॥ यह ० ॥ सुणोजी भाइ विजय चरित्र सुखकारी ॥

टेर ॥ प्रान ममय श्री विजय भूपति । करी शृंगार गोभारी ॥ सु० ॥ १ ॥ प्रेमो-
 त्मक चिनययुन कह जय से । कामपुरे रहवा हुइ इच्छारी ॥ सु० ॥ २ ॥ इच्छा
 होये सो दृकम परमायो । हूँ इच्छुं आझा तुभारी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जाण आतुर
 नय मधुग येद जय । कजि जो तुम सुखकारी ॥ सु० ॥ ४ ॥ सुणी हर्षाया ल-
 गकर मजाया । खचर भचर तेही वारी ॥ सु० ॥ ५ ॥ वन्धादि सव जन ने संतो-
 द्या । साथ लीनी लीनी नारी ॥ सु० ॥ ६ ॥ शुभ मुहूर्त प्रयाण कीया सव । सुखे
 मुकाम करतारी ॥ सु० ॥ ७ ॥ आया कामपुर ढिग जाणी प्रजा । हर्षित हुइ
 अपारी ॥ सु० ॥ ८ ॥ पुर मिणगारा स्वर्गपुरी सम । आये सन्मुख सज धारी ॥
 सु० ॥ ९ ॥ लेगये वधाइ विजय भूप तांइ । मोतीयन मेह वर्षारी ॥ सु० ॥ १० ॥
 मर्षागिवांग सुखे गंद विजयजी । कामही पुर के मझारी ॥ सु० ॥ ११ ॥ चन्धु वि-
 यांग स्वटक जयजी चित्त । मिलण मन उमंगारी ॥ सु० ॥ १२ ॥ नयधीर को
 राज मंभलाया । दर्दानी मव सुनवारी ॥ सु० ॥ १३ ॥ निज परिवार मम्पति सर्व

॥ १ ॥ ॥ १२४ ॥ आण फिरागी ॥ सु० ॥ २८ ॥ नाना विधी ऋद्धि सिद्धी ले ।
॥ २९ ॥ ॥ ३५ ॥ म् ॥ २६ ॥ उत्सवें आया काम पुरे सहू । महश्र सोलें
॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ कामपुर का नाम बदल कर । बिजयपुर नाम
॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ सब नृपन करिया विदा तब । यथा योग रीति सतकारी
॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ जाट दोनों की । कीर्ती जग विस्तारी ॥ सु० ॥ ३३ ॥
॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ अब कहूं धर्म कथारी ॥ सु० ॥ ३४ ॥ उत्तरार्ध
॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ अमोल उचारी ॥ सु० ॥ ३५ ॥ ॥ दोहा ॥ ते
॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ गण हर चूपि सर्वज्ञ ॥ लाभ स्थानक सो विचरते । तार ते
॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ भव्य पुण्यादय आवीषा । बिजयपुरी के बहार ॥ उत्तर
॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ बिजय उद्यान मभार ॥ २ ॥ माली हथों मज हुइ । नृपति
मेसा में शाय । अत्रिन युत वधाइ दे । छागे सर्वज्ञ महाराय ॥ ३ ॥ नृपादि गुण
आणिन्द्या । मिहामण मे अनुर ॥ तहां से चंदन करी मुनि भणी । प्रेमोत्तुक

हो २२ ॥ ४ ॥ अर्धवारं कोंड हीरण तणी । माली कों वक्साय ॥ चन्ना भूपणे
 नोंप नम । कोंधों नाम वीदाय ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल २ री ॥ चन्धव बोल मानो
 हो ॥ यह ॥ मयंज मुनि आगम लखी । दोनों भूप हर्षाया हो ॥ धन्य दिन हे
 आत्र को । गम २ विचमाया हो ॥ भविक ममकित आराधो हो ॥ आराधे सुर
 नर । त्रिम । आत्म कार्य माधो हो ॥ भविक ॥ १ ॥ मेना मज्जन महू मज किया ।
 विधी वंदन चाल्या हो ॥ पुरजन जनी बहु तंघहुवा । जतना मे हाल्या हो ॥ भ० ॥
 ० ॥ देव्दी मुनि वाहण तज्या । मुग्घ यत्ता कीनी हो । तिग्घुत्ता विधी वंदन कियो ।
 मनि गुण रंग भीनी हो ॥ भ० ॥ ३ ॥ यथा योग्य वेडा महू । ज्ञान सुणन का
 र्ग्याया हो ॥ परंपकारि सुनिवरा । बोधन तव चमीया हो ॥ भ० ॥ ४ ॥ अहो
 भव्या हुन आत्म ने । भव भ्रमण के मांही हो ॥ अनन्त पुद्गल परावृत्तीया । दुर्लभ
 देही पाड हो ॥ भ० ॥ ५ ॥ उपना क्षेत्र आर्य विपे । उत्तम कुल अवतारो हो ॥
 आयु दीर्घ पृगण इन्द्रिय । देही निर्विकारो हो ॥ भ० ॥ ६ ॥ मिल्या निर्ग्रन्थ

गुरु गिरवा । जिन वाणी सुणीज्यो हो ॥ श्रद्धो परतीतो रोचवो । करणी शक्ति
 धुणी जो हो ॥ भ० ॥ ७ ॥ धर्म मूल सम्यक्त्व है । शुद्ध श्रद्धा धारो हो ॥
 पगम दुर्लभ जिनवर कही । पाया भवो दधि पारो हो ॥ भ० ॥ ८ ॥ स्वल्प
 क्रिया श्रद्धा महिता होवे महाफल दाता हो । अभव्य तपी श्रद्धा बीना । अनन्त
 मंगारी रहाता हो ॥ भ० ॥ ९ ॥ नक्र विना चन्द्राननी । चन्द्र विन जिम
 रजनी हो ॥ रम वती सब रम विना । विन प्रीति ए सजनी हो ॥ भ० ॥ १० ॥
 जिम पना फीका लगे । तिम धर्म की करणी हो ॥ श्रद्धा विना निसार है ।
 नहीं पार उतरनी हो ॥ भ० ॥ ११ ॥ इण कारण धर्म इच्छु श्रो । प्रथम
 स्वेन सुधारो हो ॥ शुद्ध होइ समकित लइ । धर्म बीज फिर डारो हो ॥
 भ० ॥ १२ ॥ व्यवहारी समकिती पहिले बनो । सत सठ गुणवन्ता हो ॥ परमार्थिक
 परिचय करो । परमार्थ वरन्ता हो ॥ भ० ॥ १३ ॥ वमनी पाखण्ड संग तजो ।
 यह चउ श्रद्धा धारो हो ॥ छुधित भज कामी कामीनी । मेवे ज्ञानी ज्ञान वारो

नीम कण्डीयो । हाट भाजन जैमी हो । धर्म की समर्पित गिणे । छे स्थानक
 पंर्या हो ॥ भ० ॥ २३ ॥ आत्मा हे सदा शाश्वती । कम करती भुक्ति हो ॥ भा-
 वना निश्चय ये रम्य । त्रिरत्ने मुक्ति हो ॥ भ० ॥ २४ ॥ यह व्यवहार सम्यक्त्व
 के । मन मठ गुण पावे हो ॥ भावे अनन्तानुबन्धि चौकडी । त्रिमोह जपावे हो
 ॥ भ० ॥ २५ ॥ अर्हते देव निग्रन्थ गुरु । दया धर्म व्यवहारे हो ॥ देवात्म गुरु
 ज्ञान ने । धर्म शुद्ध भाव धारे हो ॥ भ० ॥ २६ ॥ सम्यक्त्व धर्म दृढावया । देशना
 ये फरमाड हो ॥ खण्ड दूजे ढाल दूमरी । ऋषी अमोलक गाइ हो ॥ भ० ॥ २७
 ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ श्रोता त्रप्त्या सम्यक्त्व सुधा । अत्यन्त ध्यानन्या मन ॥ अपूर्व
 भाव श्रवणे हुवा । आज दीहाडो धन ॥ १ ॥ राजेश्वर जय विजय युग । पाया
 दीये प्रकाश ॥ उन्मुक्त हो लुली २ नमी । प्रणम्या करे अरदास ॥ २ ॥ स्वामीजी
 कृपा करी । कहो भवन्तर विध ॥ संजोग वियोग हम किम लीयो । कैसे मिली
 यह रिट ॥ ३ ॥ उपकार कारण जाणके । श्री सर्वज्ञ भगवन्त ॥ पूर्व भव जय

विजय को । देखा जैमा कथन्त ॥ ४ ॥ करणी भरणी वश्यम । ल ५ ॥
 नाय ॥ प्रत्यक्ष देवीये पारखा । नृपादि सर्व सभाय ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल ३ री ॥
 जय जिनराया २ ॥ यह ० ॥ सुणो सुणो भाइ ३ । पूर्व भवों की सुकृत्य कमाइ ॥
 सुणो ॥ आं ॥ भूतिलकपुर नगर भलेरो । धन धान्य ऋद्धि सुख घणैरो ॥ सुणो
 ॥ १ ॥ अर्ग जय भूय रुधारणी राणी । बुद्धि विजय प्रधान गुण खाणी ॥ सु० ॥
 २ ॥ तहां गहे ऋद्धिवन्त व्यापारी । भानु भसर नामे भाग्य धारी ॥ सु० ॥ ३ ॥
 श्राद्ध पन्न पय एकदा आया । जीन व्यवहारं भुक्त निपाया ॥ सु० ॥ ४ ॥ तात
 निर्या होनी ते दाहांडे । मित्र स्वजन भिन्नक जैमांडे ॥ सु० ॥ ५ ॥ क्षीर पुरी
 रम्यनि जैमाये । तव श्यानी एक तहां चल आंय ॥ सु० ॥ ६ ॥ परमानन्दा भज-
 ने मन्त्र डाला । देखा दोनों भाइ शेषे हुवा काला ॥ सु० ॥ ७ ॥ जेटिक सजोर
 कम्मर मार्ग । धरणी पडी मूर्छित तेवारी ॥ सु० ॥ ८ ॥ तव एक भैंसा दोड तहां
 आया । दुर्बल थाक भूखे घवरायो ॥ सु० ॥ ९ ॥ पाडो कुत्ती दोनों रौने लगा ।

पूर्व भव या नेह तम जागा ॥ सु० ॥ १० ॥ नरवाणी से रहेसो उचार । देखे ताक
 मय आश्रय धारे ॥ सु० ॥ ११ ॥ मुणे पाण पूरी ममभ न पावे । भेद जाणन मवी
 के मन चावे ॥ सु० ॥ १२ ॥ भव्य भाग्ये श्रुत केवली आया । देखी सर्व अनि
 हारया ॥ सु० ॥ १३ ॥ भानु भसर लुली बंदना कीनी । शुद्ध भिन्ना उलट भाव
 मे दीनी ॥ सु० ॥ १४ ॥ फिर केह कृपा करी प्रकाशो । अर्प्य आज यह देखो
 तमामो ॥ सु० ॥ १५ ॥ पूर्व ज्ञाने उपयोग लगाइ । कहै मुनि तुनो कर्म कथाइ ॥
 सु० ॥ १६ ॥ पाडो पिता कुनि तुम मानी । जिमका आज यह श्राद्ध दियानी ॥
 सु० ॥ १७ ॥ मान मर्यो मे मीति इनरी जाणो । भयोभव पाइ तेमी हाणो ॥ सु०
 ॥ १८ ॥ महा मिथ्यात्व पाया विम्ववादो । हुवा दुर्धल बोज तुम लादो ॥ सु० ॥
 १९ ॥ निजक काम निज पीडाणो । सुणी नाम इहाणो लगाणो ॥ सु० ॥ २० ॥
 अकाम कर्म लहैयया । जानि स्मरण ज्ञान देखो लेया ॥ सु० ॥ २१ ॥
 कहै भगो कुनि नारी तांड । धिक्कार पडो ये पुत्र कमाइ ॥ सु० ॥ २२ ॥

आपणें नांम भोजन निपजाया । लोदी लाय मुक जरा न चखाया ॥ सु० ॥
 २३ ॥ ये जोग खाड कमर तोडाड । दोप ने किनका स्वकर्म कमाड ॥ सु० ॥
 २४ ॥ ये दाना गंगा का रक्षा जातां । रवे मंशय तुम जरा मन लाता ॥ सु० ॥
 २५ ॥ निधान वनांच पांडो तुम तांड । तो मलय ये ममक जो भाड ॥ सु० ॥
 २६ ॥ पांडू गोंजाला पग र्था कुचरे । खोदी देखे भानु द्रव्य निमरे ॥ सु० ॥ २७ ॥
 २७ ॥ नीत आट मलय चान जणाड । भानु मंतोल्या दोनों के तांड ॥ सु० ॥ २८ ॥
 दाना निरुच पिण्यान्वष्टिकाड । मुनि वोध मय्यकत्व पायाड ॥ सु० ॥ २९ ॥
 आर चणा जन धर्म ने धार्या । मुनि उपकार करीन पधार्या ॥ सु० ॥ ३० ॥ ढाल
 तीगरी प्रपोलक गाड । मन्मंगति महालाभ दाताड ॥ सु० ॥ ३१ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥
 भयर भानु दोतां मिली । कर तिर्यंच की मेव ॥ खान पान वत्थ भूम मे । पोये
 तय अटमव ॥ १ ॥ तीर्यंच दोतां ज्ञानवन्त । पाले सम्यक्त्व शुद्ध । यथा उचित
 करणी कर । धर्म में प्रेमी बुद्ध ॥ २ ॥ आयु अन्ते अणमण करी । प्रथम स्वर्ग

मभार ॥ देव देवी पणें ऊपना । जाणी ज्ञान मभार ॥ ३ ॥ तत्तर्जोणे आइ पुत्र
 प । दयाड निज रिद्ध ॥ सम्यक्त्व धर्म पमाये मे । ह्दया तिरे यह विध ॥ ४ ॥
 प्रत्यज फल देखा धर्म का । धर्मी हुवा घणा लोक । सुरसुरी स्वर्गें गया । भोगेवे
 पुण्य का नार ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल ४ चौथी ॥ मानव जन्म २ रत्न तेने पायेंरे ॥
 गृह ० ॥ मर्मकिन रत्न २ मदा मुग्धदाइजी । धारो भव्य हुलसाइ ॥ म० ॥ टेर ॥
 भमर भानु धर्म पाप फल देख्या । प्रत्यक्ष परिचय लेख्याजी ॥ अति चित्त हर्षाया ।
 भव्य २ मूर्तिनगाया । मुग्ध पन्थे लगाया ॥ म० ॥ १ ॥ अति दुर्लभ येह अक्सर
 पाया । लेगां लायां चित्त चायेजी ॥ यों घरी उत्साहो । शुद्ध सम्यक्त्व गाहो ।
 ले अनादि लाहो ॥ म० ॥ २ ॥ दान देवे पवें शील पाले । तय करे धर्म उजमा-
 लेजी । पण कर्म गति भारी । वक्के फिरे आडो थारी । देवे बुद्धि विगाडी ॥
 म० ॥ ३ ॥ मन गांहे धर्म जाणे साची । प्रमाद बध्यो पळ्या कानाजी । भोग
 सुखे ललचाड । रखा मोह मरमाड । करणी करी ढोलाड ॥ म० ॥ ४ ॥ मुनि

दृग्गण करवा न जवाह । तो धर्म श्रवण कैसे आइली ॥ हे मर्मकित सेठा रहा
 धर माह चेठा । कर अन्य में खेठा ॥ म० ॥ ५ ॥ दोनों भाइ के दो दो लुगाह ।
 नामही धर्म ममभाहरे ॥ सुमंगनि में लगाडी । धर्म ज्ञान मिखाडी । करी सम-
 चित्त में गाडी ॥ म० ॥ ६ ॥ उन २ दोनों बाइ के दो दो महेली । तास ते धर्म
 म महेली ॥ १ ॥ ते पण हांगह गारणी । मत्य जिन मार्ग को जाणी । धर्म आत्म
 में गारणी ॥ म० ॥ ७ ॥ एकदा कोइ पाखणडी आयो । भानु संग विवाद मचा-
 या ॥ ८ ॥ कपटी पंगे ॥ जेयो महंत को झुगे । करी चरचा कुरो ॥ स० ॥
 ९ ॥ चित्त चचन शंका भानू ने आइ । पण किमी को नहीं जणाइजी ॥ नहीं
 परजमें निन्दे । नहीं वन्दे निकन्दे । मन में रख्यो मन्दे ॥ म० ॥ ६ ॥ केताक
 काले ते निमगांठे । फिर जोग वग्यो तेमो आइजी । फिर शंका भराइ ॥ यों तीन
 बार भराइ । गया कर्म बन्धाइ ॥ म० ॥ १० ॥ एकदा जेष्ट भानुनी नारी । ऊभी
 यो धर दारजनी ॥ तहां आइ मेतराणी । बोलावे मेठाणी । कोइ कार्य प्रेराणी

॥ स० ॥ गुण शंठाणी गुमराइ भराणी । बोल जेहसे तार्णजी ॥ तूझे नीच
 जात नारी । हम मंग नहीं करां धारी । बोलत आवे लवारी ॥ स० ॥ १२ ॥
 नित्य लेजावे तूं अशुनि दुहारी । क्या करे बगोवरी म्हारी । इम बहु धिक्कारी ।
 मन मतार भराणी । नीच गोत्र बन्धारी ॥ म० ॥ १३ ॥ पाली समकित निर्मल
 सबही । आयु अन्त लयो जवहीजा ॥ प्रथम स्वर्ग मभारी । देव देवी अपनारी ।
 ऋद्धि पुगपानुमारी ॥ स० ॥ १४ ॥ आयुपत्योपम पूर्ण कराइ । यहां आइ सहू
 मिल्याइजी ॥ भानु जय नृब धइया । भमर विजय लवु भैया । पूर्व प्रेमे लुब्धैया
 ॥ म० ॥ १५ ॥ तीनों तत्व तुम शुद्ध आराधा । ता पुण्य त्रिलण्ड साध्याजी ।
 तीनों रत्न पायाइ ॥ मणी औपधी मंत्र तांइ । ए कुद्ध धर्म पल्यार्इ ॥ स० ॥ १६ ॥
 भानु जिन बचने शंक लाया । जयजी तीन वक्त दुःख पाया जी । भमर की शुद्ध
 अथा । तो नहीं पाइ वाधा । संन्या सम सुख लाधा ॥ स० ॥ १७ ॥ कुल मद
 कीनों स्वरूपां वाइ । तेहमे वेश्या घर जाइ जी । कामलता कहाइ ॥ पूर्व प्रेम

आकर्षाडि । मिल्या जयजी आह । हुड पकी मगाड ॥ स० ॥ १८ ॥ आर मञ्जन
 मिल्या मव आह । न्यारा २ दीना वताड जी । मुर्णियों जिन वाणी । इहायों करे
 मव प्राणी । दान मेन्दी लगाणी ॥ म० ॥ १९ ॥ मति ज्ञाना वरण कम श्रेया ।
 जाति स्मरण ज्ञान लेया जी ॥ सुणी लेमी जणाणी । अति हीयं हरीणी । द्रुड
 मग्गयत्त्व ग्रहाणी ॥ म० ॥ २० ॥ आवक का व्रत सब आदरीया । शुभा सांगन
 बहु कर्गया जी ॥ ढाल चतुर्थी थाड । ऋषि अमोलक गाड । धर्म सदा सुखदाड
 ॥ मम ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दाहा ॥ श्री जिनजी रहे तहां लगे । सेवी विजय राजान ॥
 तत्त्वार्थ धारण किया । निमंशय मतिमान ॥ १ ॥ जिनजी विचरे जिन पदे ।
 नन्तर विजय राजान ॥ अमरी पडह वजारीयो । तीनों खण्ड के म्यान ॥ २ ॥
 नवकार आंचे जेहेन ताम माफ कीयो दाण ॥ ज्ञान शाण्ड सहू स्यात कर । धर्मो
 नति मंडाण ॥ ३ ॥ धर्म अर्थ काम भवता अपना नन्दन तीन ॥ नन्द आनन्द
 मुन्दर श्री । कीया धर्मार्थ प्रवीन ॥ ४ ॥ धर्म जग मंडण करो । रहे सहू सुख

पाय ॥ अथ परिचा सम्यक्त्व की । जिनेन्द्र सुरेन्द्र कथाय ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल ५
मा ॥ अजनाजा के गम की देशी में ॥ तोजी महा विदेह क्षेत्र के विपे । बोथो
आगे मदा रघो वरतायतो ॥ विजय पुष्कलावति शोभती । तहां विचरे सिम-
न्धर जिनराय तो ॥ मंयल्ली सर्व दर्शनी । सुरेन्द्र नरेन्द्र मुनिन्द्रे पूजाय तो ॥ दे-
शना मुगलन को आर्वाया । सुधर्मा स्वर्ग पति एकदाय तो ॥ समकित की महिमा
मुगो ॥ १ ॥ शंकरेन्द्र दाहिण दिगपति । भरत क्षेत्र पर अति अनुराग तो ॥
प्रश्न पूछे नमन करी । मुक्त को फरमावो अहां वीतराग यतो ॥ इस काले को
भरत में । हे धर्मात्मा गंगो महा भाग्य तो । पाले सम्यक्त्व निर्मली । प्राणान्त
न लगावे जग दाग तो ॥ सम ॥ २ ॥ वागरे जिन विजय पुरपति । विजयराय
शुद्ध सम्यक्त्व जाणतो । देव दानव चला न सके । न लगावे दोष जावे कदा
प्राणतो ॥ कुंदय गुरु इच्छे नहीं । शंका कंखा कोइ न शके आण तो । यों सुणी
हर्ष्या दचिन्द्रजी । वन्दी स्वर्ग गया बैठ विमाण तो ॥ सम ॥ ३ ॥ सुधर्मा सभा

नांही सुर मुक्त नाम कहात तो ॥ यों अभिमान निश्रय करी । तत् जीण चल
 कर भरत में आत तो ॥ सम ॥ ७ ॥ समण भूत प्रतिमा घारी । चुलक श्रावक का
 रूप बनाय हो । निर्ममल्य अल्प परिग्रही । सर्व साम्र को जाण कहाय तो ॥ जाणें दुकर
 क्रिया तप करी । हाड पिंजर किगो नन सुकायतो ॥ आडम्बर अधिको करी ।
 "जेन पाँडित" नाम प्रसिद्धो प्राग तो ॥ सम ॥ ८ ॥ ग्रामादि में विचरता । बहू
 मगडाणें विजयपुर आय तो ॥ मुणो श्रावक घणा दर्पिया । चन्दे नमें धर्म स्था-
 नक लाय तो ॥ इयां सोधत चालता । आया नृप पोषध शाल माय तो ॥ लेइ
 रजा निहां उत्तरीया । दया जमा शील शुद्ध जणाय तो ॥ सम ॥ ९ ॥ लोलपी
 नही रमना तणा । भिजावृत्ति से लेवे लुप्त सुख आहार तो ॥ उदेशीक नित्य
 पिगड वर्जता । ऐषणा अधिक कठिण आचार तो ॥ सद्बोध करे विविध परे ।
 गहन शान्ति करे विस्तार तो ॥ हेतु कथा में रुचावइ । गावे रास रागे ललकार
 तो ॥ सम ॥ १० ॥ परिपद घणी अकर्पावइ । त्याग प्रभावना होवे उपकार तो ।

विजयगय गुण दर्शयो । मिलण आया पौपथ शाल मम्भार तो ॥ सुखशाता पूछ
विग जोया । न भी मुख पृच्छे मधुर उचार तो ॥ लोक प्रसंसा करे धणी । ते
नि ज्ञानमन देय धिक्चार तो ॥ मम ॥ ११ ॥ ज्ञान क्रिया व्यवहार शुद्ध । उपकारी
गर्वा नय नय ज्ञाण तो ॥ गच्छा तहां अग्रह करी । वृद्धि करण सुकृत्य धर्म ज्ञान
ता ॥ आप भी आय को अवमरे । धर्म चरचा करे करं पेछान तो ॥ बुगला
मार्ग धो जनयणा । मोहाया करं मेवा मन्मान तो ॥ मम ॥ १२ ॥ माया वीछले
मयन का । ना अन्य की क्या कथा कहाय तो ॥ गुणानुरागी रीजि गुण लखी ।
अज्ञान जना ज्ञाण तो ॥ पंचमी ढाल अमोलक कथी । श्रोता सुणो आगे
विन लगाय तो । अद्भुत रचना रंचे अमुर ते । विजय निकन्द भिश्चाकन्द तांय
ता ॥ मम ॥ १३ ॥ दाहा ॥ विजयराय निजवस्य करण । देवते रंचे उपाय ॥
गुप्त अत केवली दिग । रही ज्ञान धार आय ॥ १ ॥ गहन रेश शाम्भज
नर्मा । एकान्त नृपने ज्ञाय ॥ प्रश्नोचर करे रायजो । ते भी तैमी पूछ आय ॥ २ ॥

अपूर्व लाभ ज्ञान को लही । आनन्दे राजान ॥ अहोनिश तस सेवा करे । सुर
नहीं दे पहचान ॥ ३ ॥ काल वहुयों वीतीयो । प्रतीत्या भूपाल ॥ विनीत शिष्य
पर देवता । वचन करे अंगीकार ॥ ४ ॥ निज वस्य भयो जाणी रायने । साधन
इष्ट तेवार ॥ विरूधा चरण करे देवता । ते सुणो सुज्ञ नरनार ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल
६ टी ॥ आठ कृपा नव चावडी ॥ यह ॥ श्रावक कहें सुणो चित्त दे ॥ राजेश्व-
रजी ॥ जैनधर्म श्रेयकार ॥ अहो धरणी धरजी ॥ पण अनमिलती कथनी घणी
॥ राजेश्वरजी ॥ अत्र ते में कहें उचार ॥ अहो धरणी धरजी ॥ १ ॥ सिद्ध अन-
न्ता होंगया ॥ राजें ॥ हुवे हे होसी अनन्त ॥ अहो ध० ॥ जीवरासी संसारी
जी ॥ राजें ॥ कदापि नहीं घटन्त ॥ अहो ध० ॥ २ ॥ राय कहें तुम
माभलो ॥ ये श्रावकजी ॥ श्रीमत तहामेव सत्य ॥ अहो सुणो श्रावक
जी ॥ व्यवहार अन्यवहार रामजी ॥ सुणो आ० ॥ दोषरूपी जिन गत ॥
अहो सुणो ॥ ३ ॥ अन्यवहार रामी मे नीकली ॥ सुणो ॥ व्यवहार रामी

जो आय ॥ अहो ॥ ताम संख्या ए जिन कही ॥ सुणो ॥ ते कमी नहीं आय ॥
अहो ॥ ४ ॥ जितने जीव शिव पद लहे ॥ सुणो ॥ तितने व्यवहारी होय ॥
अहो ॥ अव्यवहार अनन्त सदा रहे ॥ सुणो ॥ सर्वज्ञ रहे सब जांय ॥ अहो ॥
५ ॥ भयभीती देवता कहे ॥ राजे ॥ माधु महाव्रत के धार ॥ अहो ॥ तीन करण
नान जांग भे ॥ राजे ॥ जीव हिंसा परिहार ॥ अहो ॥ ६ ॥ करे गमनागमन
नहीं ऊनरे ॥ राजे ॥ तहां निश्चय जीव हणाय ॥ अहो ॥ आशा दी जिन एह-
की ॥ राजे ॥ विरुद्ध प्रत्यक्ष यह देखोये ॥ अहो ॥ ७ ॥ भूय कहे नहीं संकीये ॥
मुणो ॥ प्रभु मन दोय प्रकार ॥ अहो ॥ उत्सर्ग रुपवाद छे ॥ सुणो ॥ उत्सर्ग
भे यह निवार ॥ अहो ॥ ८ ॥ अपवाद को प्रायश्चित लहे ॥ सुणो ॥ कारण रु
करण उपकार ॥ अहो ॥ अटका काम चालण कह्यो ॥ सुणो ॥ पण हिंसक आज्ञा
मधार ॥ अहो ॥ ९ ॥ जेमे पिता कहे पुत्र ने ॥ सुणो ॥ मत कर क्याल कि
नान ॥ अहो ॥ जो न रह्यो जावे तुम्हरी ॥ सुणो ॥ तो एक घडी पर मत बोल

॥ अहो ॥ १० ॥ यह हेतु जिन पिता परे ॥ सुणो ॥ समण पूत्र सम जाण ॥
 अहो ॥ नहीं निभे तो सो निभाववा ॥ सुणो ॥ अपवाद भास्यो भगवान ॥ अहो
 ॥ ११ ॥ भयघारी सुर किर कहे ॥ राजे ॥ लोटा घडा कूवा मांय ॥ अहो ॥ पाणी
 के जीव अमंस्य है ॥ राज ॥ सब वरोवर कैसे याय ॥ १२ ॥ तर्क करी भूधव
 कहे ॥ सुणो ॥ ज्यों लास औषधी का तेल ॥ अहो ॥ मासा तोला शेर मण
 विंय ॥ सु० ॥ लासही औषधी मेल ॥ अहो ॥ १३ ॥ अन्य हेतु वली यह है ॥
 सु० ॥ एक दश सत सहश्र लास ॥ अहो ॥ सब ही संख्याता सब कहे ॥ सु० ॥
 तेंम अमंन्याता भास ॥ अहो ॥ १४ ॥ सुर यह श्रद्धि सवे ॥ रा० ॥ पण पंचा-
 स्ति काय ॥ अहो ॥ तास आधार सब जीव ने ॥ रा० ॥ चल स्थिर चिकाश
 ज्ञाय ॥ अहो ॥ १५ ॥ तेतो दृष्टी आवे नहीं ॥ सु० ॥ ते कैसे तरह से म-
 नाय ॥ अहो ॥ नरेन्द्र कहे जिन वचन में ॥ सु० ॥ फरक पाव रति नाय ॥ अहो
 ॥ १६ ॥ अरुणी सो कहे सूत्रमें ॥ सुणो ॥ मो निजरे कैसे आय ॥ अहो ॥ पण

परधान ॥ शक्तिन काँजित न हूवे । लियो शुद्ध मस चीन ॥ ३ ॥ परन्तु प्रत्यक्ष
दाम्बर्वा । जैन का विपरीत रीत ॥ चलावूं जो इण भणी । तोही महारी हवे
जीन ॥ ४ ॥ मिःया वचन सुरेन्द्र को । किया बिना न जवाय ॥ यों द्रढ़ता फिर
चित्त धर्ग ॥ बोले सो सुणी वाय ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल ७ बी ॥ सखी पणीया भ-
रन के साजाण ॥ विणजाग के राग में ॥ तुम लुणीयो जी राय हमारी । कौन
जैन धर्म शुद्ध धार्ग ॥ टेर ॥ भेष धारी सुर कहें मधु बाणी । धन्य तुमने जैनागम
रहम्य जार्ण/जी । जाचू नुम बुद्ध की बलीहारी ॥ कौन ॥ १ ॥ जिन वचन सब
में अया । मुझ मंगय आप सब मरवाजी ॥ अपूर्व युक्ति जमारी ॥ कौ० ॥ २ ॥
जैन मन मत्त जग माँही । अन्य नहीं इण सहीजी ॥ पण कौन सामर्थ्य पाल-
वार्ग ॥ कौ० ॥ ३ ॥ राय कहें चौसंध अराधे । यथा शक्ति किया सब साधे जी ॥
देखो माधुजी शुद्ध आचारग ॥ कौ० ॥ ४ ॥ महा व्रतादि किया महा पाले । जि-
नाज्ञा प्रमाणे चालेजी । अन्यमत में न कोइ इसारी ॥ कौन ॥ ५ ॥ तब सुर

7

8

9

में मुनिवर नालेजी छत्ती त्यागी क्या करे इच्छारी ॥ कौ० ॥ १५ ॥ संयम निर्वाह
नो न पाये । केइ तपस्या कर तन शोषेजी । ज्ञानी ध्यानी वैयावची उपकारी ॥
कौ० ॥ १६ ॥ खोटी दृष्टि कर नहीं देखे । नारी मात्र मा बेनकर लेखेजी । हे
माधुर्मानि सच्चा ब्रह्मचारी ॥ कौ० ॥ १७ ॥ महासतीयों केई गुणवन्ती । सूत्रार्थ
गुरु मन्त्र मीम्वंतीजी । तासो आप तिरे पर तारी ॥ कौ० ॥ १८ ॥ जे श्राविका
ज्ञान गुणवन्ती । ते केइक संयम आचरन्ती जी । केइ देवे सती सन्त ने सातारी
॥ कौ० ॥ १९ ॥ ज्ञान से गुण वृद्धि पावे । यों जाण युनि पढावे सुणवे जी ॥
पार्या पाय धरे चित्त मझारी ॥ कौ० ॥ २० ॥ देव कहे में भी संयम पाव्यो ।
बद्धाभ्यान्नर भिन्न निहल्यो जी ॥ तहसे आवक भेष लीयो धारी ॥ कौ० ॥ २१ ॥
मे कदापि न बोलूं झूठो । नहीं साधु पर मैं रुठो जी । जैसी देखी तैसी उचारी
॥ कौ० ॥ २२ ॥ जो भेला रहे सो जाणे । भोला भेदन सके पैछाणे जी । जो
गखें शुद्ध व्यवहारी ॥ कौ० ॥ २३ ॥ प्रथम परिचा कीजे । फिर थोलेभो मुजेन

वाग्वर मग लीपाइ ॥ ध्याकज्जी भी मंग घाइ । आयं मव चाग मभारे । पंच
 अमगम पाय पारे ॥ जरा ॥ १ ॥ मच मुनिवरों के तांड । नृपादि मय वंद्याइ ।
 ते पावह रह्य रह्य । वेठा सव गण योग्य स्थाने । उमंग भुनि चारो सुणवाने
 ॥ २ ॥ ॥ आचार्य सद्वाप फरमावे । तत्वार्य गहन दर्शावे । ते सुगम करी
 ले गमावे । भ्राना तर्हीन होये सुणे के । आत्म हित लेवे तामे लुण के ॥ जरा
 ॥ ३ ॥ माधु रिरिया खूब दडडाइ । उत्तम एकान्त स्वपाइ । न अपवाद जरा
 लागै । श्राना सुण आचार्य पाया । कहे धन्य जग मुनिराया ॥ जरा ॥ ४ ॥
 जो महिग पार पर चले । सूदन ऐमा दोष टाले । मो दोतो क्यों करणी में घाले ।
 भवि फल ध्याति ही फरमाया । दान महात्म खूब दढाया ॥ जरा ॥ ५ ॥ आवक
 ही रिरिया पताइ । जो भय धारी पालताइ । ये उत्कृष्ट आक्क कहाइ ॥ सुणी
 मय धन्य २ तम कहता । भेषधारी भूमो देख्यो रहता ॥ जरा ॥ ६ ॥ फिर मम्क
 बल को मरमाइ । जो नृपत चिन में पाइ । केद रागनीयो भी सुणाइ ॥ इत्यादि ॥

मुन तो भरम भूत दरशाह ॥ जरा ॥ १३ ॥ तुष माने परिचा करसुं । जो शुद्ध
 दम्भग। छन्दसरसुं । तो चरण में मायो घरसुं । दिखते हैं मरीखे मणी और कांच ।
 मायम हाय लगे जब थांच ॥ जरा ॥ १४ ॥ राय कहे इतनो मत तानो । जो
 भर है रतन गुण ज्ञानो । दीया है तेसा ही व्याख्यानो । बोली से भेद सर्व
 लाज । विंशप परिचा क्या कीजे ॥ जरा ॥ १५ ॥ आवक कहे अभी
 गुनाभा । गुप्त राते इहां चल आधो । फिर आचार गोचार बताओ । तो
 माखम मही पड़ जानी । मानो इति बात मरी खासी ॥ जरा ॥ १६ ॥ ऐसी
 यातो सुर उनाइ । आयो सो उपाधय नांही । नृप निज मन्दिर यहां तांई ।
 थागे परिचा दिखावे गाइ । ढाल वसु अमोल ऋषि गाइ ॥ जरा ॥ १७ ॥ दो-
 हा ॥ जाबिनी जाम जदा गाइ । सुर भूषत ढिग आय । कहे चालो अत्र वाग
 में । देखल किरिया मुनिराय ॥ १ ॥ राय कहे क्या देखिये । देखे व्याख्यान
 मांय । पिट्र पे सते माइ के । पानक चात्म भराय ॥ २ ॥ देव कहे ये ही जाल

को नुम पालभो । गुप्त देख्यो पोल ॥ १ ॥ शरल स्वभाव है म्हारो । करण न
 जाणु कपट ॥ बाढ्याभन्तर एक सो । न रखु पाय दपट ॥ २ ॥ परभव को डर
 मुझ अति भयं न माया लगार ॥ पेखो जरा आगे बढी । वृद्ध मुनि आचार
 ॥ ३ ॥ सुण चित्त चमक्या महीपति । आवक कर धायो ताम । चलो देखे
 थगे बली । केम मुनि गुण धाम ॥ ४ ॥ वृद्ध छांय में छिपत सो । देखे
 थांग जाय ॥ अघाटन रेखी कृत्य को । एाश्चर्य अति चित पाय ॥ ५ ॥ ॐ ॥
 ढाल ॥ १० वी ॥ चेतनजी, वारणे मत्त जावोजी ॥ यह ॥ राजेश्वर द्रढ
 मग्यस्व के धाराजी । देखी देवमाया नडिग्यारी ॥ टेर ॥ एक साधुजी जूवा
 खेलें । चोक नकी दुर्फी डाव में लेरे । हार जीत में धन घणो देले ॥ राजे ॥
 १ ॥ एक मुनि आर्मिम रांधरे । घणा मशाला युक्त सवादेरे । करे परसंस्या कर्म
 बान्ध ॥ राजे ॥ २ ॥ एक मदिरा मीमी ले आया रे । सा आरोगी तबही मुर-
 आया रे । नाच गावे चंग बजाया ॥ राजे ॥ २ ॥ एक जति रघ्या बैस्या रमाहरे ।

तब नगर में चाल्या रायार । मन माह आति मुरभायार ॥ राजे० ॥ १३ ॥ तब
 श्रावक कहं फरमावारे । मे कबो सो देख्यो उपावारे । मुक्त बचने परतीत जरा
 लावो ॥ रा० ॥ १४ ॥ राय कहें आचार्य जो मोदारे । सो तो कधी न करे कर्म
 स्वांर । ये तो मिल्या कुमति घाल्या गोटा ॥ रा० ॥ १५ ॥ यों बोलता मेहल
 पास आयां । तिहां आचार्य निकलता देसायार । पैछाय्या प्रकाश के मांया ॥
 राजे० ॥ १६ ॥ सो तो अन्तेवर में से आवारे । एक राणी ने साथ खेजावारे ।
 देखी राय अति शरमावे ॥ रा० ॥ १७ ॥ पण मोनें नृपति तब राखेरे । कौन
 विष्टा में फल्यग न्हावरे ॥ विस्र पापी कृत कर्म पान्वे ॥ राजे० ॥ १८ ॥ अं व किन
 को जाय पूकारे । बलायु हुवा खूटारूरे । मय खोटा मिल्या कैसे वारू ॥ राजे०
 ॥ १९ ॥ यह ता टग की टोती देखाइरे । नहीं जेनें मुनिं निश्चय थाइरे ॥ कहूं
 उपावजों कुमन विगलाइ ॥ रा० ॥ २० ॥ ढाल दशभी अमोलक गांवरे । देवराजा
 को चित्त बलावरे । धन्य विजय वक्ते द्रुह रहावे ॥ राजे० ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥

श्रद्धे परतीत चित रुचे । आराधु में निज सत्व ॥ सत्य ॥ ४ ॥ कदा एक हीरो
 म्यांटा दिखे । मच म्यांटा जाणो नाथ ॥ खोटा सो तो म्यांटा ही है । खरा खोटा
 नही थाय ॥ मन्य ॥ ५ ॥ एक वक्क लुंटावे मार्गे । दूजी वक नहीं जाय । तो रस्ता
 मच वन्ध हुवे । जगरुंदी नाश पाय ॥ सत्य ॥ ६ ॥ परम मार्ग वीतराग को ।
 घणा पालाहाग ॥ यह टांला मिली पाखंडी की । दूजा नहीं इणसार ॥ सत्य ॥
 ७ ॥ महार्भुन घणा भरन में । शुद्ध पाले आचार ॥ तैसेही सतीयां घणा । उनको
 महारा नमस्कार ॥ मन्य ॥ ८ ॥ अवधि ज्ञान देखे देवता । नृपति स्थिर परिणाम
 ॥ पावगुट पेर्या दृढ़ घणा हुवा । देव विस्मय रयो पामे ॥ सत्य ॥ ९ ॥ प्रकट
 कहं मुणो रायजी । गर्ण अवगुण न जाय । थे तो फस्या हो दृष्टि राग-में ।
 शुद्ध मति कर्मा हांय ॥ मन्य ॥ १० ॥ जैमे कामी कामान्ध हो । न देखे नारी
 अवगुण । तिम जिन मन राचिया । विणगी मति जो निपुण ॥ सत्य ॥ ११ ॥
 कुपदी धर्म न गृहा मके । मुपदी सो ग्रह फट । अन्तर नेण खोली जोवो ।

1. The first part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".

१० ॥ गायत्री आया निज महल में । घरता चित्त चमत्कार (धूर्त साधु ने आव-
 क मो । मरुत के चित्त मभार ॥ सत्य ॥ २१ ॥ खेदाख्यय यह अति । ऊंच आत्म
 या आग । अद्वा विना रूले चउगते । सत्य श्री जिनवाय ॥ सत्य २२ ॥ यों भा-
 वे निर्मल भायना । धन्य विजय नृपाल । प्रत्यक्ष विपरीती जो दृढ रक्षा । अमो-
 ल गक दश ढाल ॥ सत्य ॥ २३ ॥ दोहा ॥ चित्त में चिन्ते अमुर ते । निष्फल
 हुवा मो उगाव । परपर कर सहू दाखन्या । तेह से स्थिर रक्षा भाव ॥ १ ॥ अथ
 बीनानु घर परे । न्दाम्बी शंकट पूर ॥ जोनुं फिर ब्रढ किम रहा कुमति ये चिन्ती
 यो पर ॥ २ ॥ मय मुगे सूता निशी विषे ॥ तब देव स्वप्न मभार । राय सची-
 व समन्त को । कहै दिव रूप निजधार ॥ ३ ॥ शीघ्र सावध होवो सहू तुमे ।
 जो इच्छो हो सुख ॥ तो वयल सत्य मानजो । तुम पुर पर आवे महा दुःख ॥
 ४ ॥ नाग कुमार कोपित हुवा । करेगा विघन अपार ॥ प्राते पूजो नाग मूरती ।
 तो चलमी चैनचार ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल २२ वी ॥ आचक श्रीवीरना चम्पाना

नहीं जी । स्पष्ट निमित्तक बात ॥ होणहार मो होवमी । जो जिनजी देख्यो
 मात्रात ॥ धन्य ॥ ८ ॥ शुभा शुभ कर्म उपाजिया । ते भोग्या ही छुटको होय ।
 क्षीणक सुख ने कारणे । कोन मूखं सम्यक्त्व विमोय ॥ ९ ॥ देव फस्या
 कर्म फाम में ते । मानव ने कैमे छोडाय ॥ इम निश्रय अवलम्बिने । निश्चिन्त
 रत्ना विजयराय ॥ धन्य ॥ १० ॥ सचीव सामान्त शाहजन मिली । करे नृप से
 नमी अरदाम ॥ पधारो नाग पूजवा । ज्यों उपद्रव होवे नाश ॥ ११ ॥
 राय कहे कर्मोदय । नहीं देव टालण सामर्थ्य ॥ सम्यक्त्व रत्न गमावबो । न करूं
 मे यह अनर्थ ॥ १२ ॥ दुःख सुख देव न दे सकेजी । कर्म संचित फल
 पाय ॥ यह अनुज्ञ शास्त्र की ते । येहीज वक्त काय आय ॥ १३ ॥ तत्त्वज्ञ
 घर्मी हुइ तुम । कैसी देवो मुक्त यह सीख ॥ माल संभालो आपणो । ज्यों आगे
 न पावे तीख ॥ धन्य ॥ १४ ॥ इत्यादि सुन सह चुप हुवाजी । निज २ स्थाने
 जाय ॥ तत्क्षीण राय भवन में । बहूत फणी घर प्रकट याय ॥ १५ ॥

मामन्त मिल । ममजावे वहू भांत ॥ सुन्न नृप अवसर लखी । स्वीकारो अवदात
॥ १ ॥ पूजा करो फणिन्द्र की । ज्यों होवे उपसर्ग दूर ॥ कारणे को दोषण नहीं ।
मानो केण हजूर ॥ २ ॥ कान न घरे नृप विनंती । तव सहू अति अकुलाय ॥
रीमा कहं धिक हट यह । अवसर औलखो नाय ॥ ३ ॥ समज्या समजावा किंसो ।
कीजा ऊंडो विमास । निजात्म सज्जन तणो । हाथे मत करो नाशा ॥ ४ ॥ महा
अनर्थ होवे जह से । ते तजो समझी मन ॥ संसारार्थ साधने । करो नाग पूजन
॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल १३ वी ॥ जिनेश्वर मोहणी जीत्याजी ॥ यह ॥ राजेश्वर सम-
कित धारी हो । के धन्य जीत्या उपसर्ग भारी हो ॥ देर ॥ सर्वाव सज्जन आदि
सहू मिली हो । ममभाया वहू भांत ॥ नहीं मानी राजिन्द्रजी हो । होणहार सो
धान ॥ राजे ॥ १ ॥ राज का रायन स्वप्न में जी । कहे सुर कोपित होय ॥ हे
भी हटांला भूपति । क्यों अभिमान ने घर खोय ॥ राजे ॥ भूत्यो सम्यक्त्व भ्रम
में । मुझसे मिथ्यात्वी देव बणाय ॥ सब माने तूं माने नहीं । छस्यो ऋद्धि गर्व के

॥ ११ ॥ अनन्त पुखे ममकिन मिली ।
 ॥ १२ ॥ इम निधाय कर स्थिर रखा । नहीं पूजा फणीन्द्र
 ॥ १३ ॥ दिवसोदय राय भवन में । एक दोघ मर्ष प्रगटाय ॥ श्याम
 ॥ १४ ॥ मर्ष जनने भय उपजाय ॥ रा० ॥ १३ ॥ जेष्ट पुत्र को डंकीयो
 ॥ १५ ॥ मञ्जन परिजन मिल करी । कर रुदन आक्रन्द अम-
 ॥ १६ ॥ कर धरी कहे राय को । अय गीत्र चलो महाराय ॥ पूजा
 ॥ १७ ॥ ना अनर्ध मोटो धाय ॥ रा० ॥ १५ ॥ राय न माने कोह
 ॥ १८ ॥ न दियो डक ॥ ते भी पडी मुरदाय के । रायजी तो बैठ नि-
 ॥ १९ ॥ । यानि ममजाये महू मिली । भूप कान धरे नहीं बात ॥ तब
 ॥ २० ॥ तेही पड्यो मुरदान ॥ रा० ॥ १७ ॥ तीनों राणी
 ॥ २१ ॥ पड्यो नाग कम्हर ॥ देखे पड्या मुरदाय ने । कुटुम्ब कोषित
 ॥ २२ ॥ धिक्कारण लग्या रायेने । राय कहे गमना रम्यो मन ॥

भाले माल कंठ में । बोले विश्वासु बोल ॥ २ ॥ कावड खन्घ है नाग की । पुंगी
 मधुरी बजाय ॥ भृजंग रमे तस तन परे । प्रत्यक्ष परिचय देखाय ॥ ३ ॥ दर्श देख
 गारुडी को । मंतोपाणा सब मन ॥ यह तो निश्चय टाल से । आपणा सर्व विधन
 ॥ ४ ॥ टाल १४ वी ॥ विणजारारं ॥ यह ॥ सुणो श्रोता हो ॥ सर्वजन सुशी
 अति होय । मन्कार कियो गारुडी तणो ॥ सुणो श्रोता हो ॥ सुणो श्रोता हो ॥ आवा
 ऊग महाभाग्य । तुम दीठा हमने आनन्द घणो ॥ सुणो ॥ १ ॥ सुणो ॥ कृपा करी इणवार ।
 कगदात देवविधेय ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ उतारो छेऊं को जेहर । हमारी चिन्ता गमा-
 वीय ॥ सुणो ॥ २ ॥ सुणो ॥ करस्यां सुशी तुम तांय । मांग सो सो देस्यां सही ॥ सु-
 णो ॥ सुणो ॥ उपकार होमी अगार । जीवित लगे भूलस्यां नहीं ॥ सुणो ॥ ३ ॥
 सुणो भाइ हो । गारुडी छेऊं ने देख । कहे यह विप विपम अति ॥ सुणो भाइ
 हो । सुणो भाइ हो । अमाद्य सो दिसे यह । तो भी यताबुं मुक्त शक्ति ॥ सुणो
 ४ ॥ सुणो ॥ मैं जाणूं अनेक उपचार । निर्विप निश्चय करस्युं सही ॥ सुणो ॥

गारुड । रंग नमस्कार । अत्यन्त नरमी अरजी करे ॥ सुणो ॥ नाग रायोहो ॥
 नम मय मामर्थ देव । भोटा सोही लमा घरे ॥ नाग० ॥ ११ ॥ नाग ॥ जो नमे
 गन्धगाग प्राय । तो अपराध भूले मवी ॥ नाग० ॥ जेष्ट तणी यह हे रीत । तेही
 प्राय नाग अर्थ ॥ ना० ॥ १२ ॥ नाग० ॥ फरमावो आप हुकम । सोही करावुं
 रण मन ॥ नाग० ॥ द्विये नजो मव रोम । चारम्बार सो इम भने ॥ सुणो ॥ १३ ॥
 गारुड ॥ भुवन नग्यो मव जगत । यह शुष्क काष्ठ ज्यों नमे नहीं ॥ गारु० ॥
 गारुड ॥ १३३० ॥ ना० ॥ नाग० ॥ तो मव दुःख हलं मही ॥ गारु० ॥ १४ ॥
 नग्या मयार ॥ गारुड ॥ गारुड ॥ कहे खग होय । नमन करो नाग रायने ॥ सुणो रायारे
 ॥ सुणो ॥ ॥ ना० ॥ नाग० ॥ अवी दुःख जावै चिरलायने ॥ सुणो रा० ॥
 १५ ॥ गारुड ॥ ना० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥
 गारुड ॥ ॥ ना० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥
 गारुड ॥ ॥ ना० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥ नाग० ॥

१ प्रभाइ मे रेलो ॥ अहो सुणो श्रोतार्जो । मुर पाम्यो
 २ नही अनुमै द्रुड ताइ मे रेलो ॥ १८ ॥ अहो ॥ द्रुड
 ३ मरही मम्यम्य धर्म आराधमोले ॥ अहो ॥ यह हुइ
 ४ अमोलरु नूर बनो मंजि माधवारं लो ॥ २० ॥ ॐ ॥
 ५ सुणो विजय ना वनन ॥ चीडायो अति चित मे ।
 ६ रं नुमति मोलीया । कदाग्रही दपार्हित ॥ निज हिता
 ७ रं प्रवेन ॥ २ ॥ ज्येयो भव्य गव्य ताहारे । होतो दीमे
 ८ चीजे अलि पंथल ॥ ३ ॥ रंगी लेह वयने । जो
 ९ गग मुट्टि दुवा । महा पीडा पावंत ॥ ४ ॥ तेमही नुके
 १० नगप ॥ ५ ॥ इम चड चडो गारु ॥ छोड कल्पो
 ११ न ॥ ६ ॥ मुक्त बिननडी अवधारो न्नि ॥ यह ॥
 १२ न ॥ ७ ॥ रंगी अचनट प्रालान्त ॥ ८ ॥ मारडी जलो

मम म्थानो नशा वन्धी जकडी । कीनो सर्व अंग डंस ॥ और अनेक लघु सर्प
 आट । वाट्यां नृप अवमेश ॥ देख ॥ ६ ॥ चूट २ नृप तन ने तोडी । करे रक्त
 मांग अहार ॥ मेरु ज्यों द्रुद्र ध्यानस्थ नृप हो । स्मरण करे नवकार ॥ १० ॥ महा
 विषे पमरा मव हो नन में । द्वाग्नि मा करूर ॥ जाने वज्र प्रहार करे हे । को-
 'या मवाव के अम्भु ॥ देखो ॥ ११ ॥ तीक्ष्ण शस्त्रे श्री तन काटे । त्यों फटने
 लगा तन ॥ महा भयानक भोगे जो जाने । के जाने भगवन ॥ देखो ॥ १२ ॥
 यग २ थग तन मव कम्प । तरर २ छूटे रक्त ॥ तड २ मव नाडी दूट । जेहर चढा
 अति गर ॥ देखो ॥ १३ ॥ प्रक्षक को बाले जेष्ट नागभो । देखो दुष्ट के हवाल ॥
 स्वजन पृगजन आदि जो रचना । दिग मुढ हुवे अमराल ॥ देखो ॥ १४ ॥ अति
 वेदन मे मरुआट पंड । पांडे भयानक चीम ॥ देखे सो अति त्रासित होये । देव
 कोप स्या जर्गाम ॥ देखो ॥ १५ ॥ हरीत वदन दर्शन कृष्ण भये । तडके जल
 चिन मान ॥ मात्तान नरकभी वेदन । अनुभवे जाणी ते दिन ॥ देखो ॥ १६ ॥

यम प्रपन्न न या मा समर्था । अहो मृत्य कथन भगवन्त । इममे अनन्त गुणी
 महा बदन् । भाग्यो चार अनन्त ॥ देखो ॥ १७ ॥ इन विचार में मन रमावे ।
 नयन मन मन(चार) ॥ गर्ण(पुत्रों छेही मृत्यु पाये । करो ले जा मंस्कार
 दया ॥ १८ ॥ नन अंग पर नार के जेसे । बीता नृप मन परीताप ॥
 न नो नर सम्यग्दर्शन मे । कं नयकार को जाप ॥ देखी ॥ १९ ॥ ज्यों २
 न न रीत पाय । न्या न्या भाव निर्मल ॥ अधिक २ अस्तिक जिनर्जी के । वचन
 दय मयन ॥ दया ॥ २० ॥ महा मंकट में महा स्थिर रहे । धन्य विजय नृपाल ॥
 इह समान नरनी या आत्म । यह पोटुशमी ढाल ॥ देखो ॥ २१ ॥ छ ॥
 दाहा ॥ ना समय नही गान्डी । धुणावतो निज मीश ॥ विजयराय दिग
 पायाना । दमना दया जर्गाम ॥ चासित मुद्रा मे कहे । अरे अब तो जरा
 दान नमन इर नाग देव ने । क्यों गमावे प्राण ॥ २ ॥ अति दुर्लभ
 दान पण्य न । अपुत्र वक्त यह पाय ॥ ले लावो दीर्घ आयु वर ।

॥ ११ ॥ तौ जानू ॥ हमसे भी कभी होय अनन्त गुणी । तो
 ॥ १२ ॥ दे मास तो काल बीतमी । धरै मेने
 ॥ १३ ॥ दुख भोग्युं । तो ही ने नृप धर्म को नातो ॥
 ॥ १४ ॥ दुख बृद्धि पावे । त्यों ज्यादा मुखकारक जाणुं ॥
 ॥ १५ ॥ हिचिन खेदन आणुं ॥ देखो ॥ १५ ॥ ज्यों
 ॥ १६ ॥ तौ ही मुख अधिको पाम्युं । पाही जो सर्व कर्म
 ॥ १७ ॥ देखो ॥ १६ ॥ इनमें अनन्त गुण ॥
 ॥ १८ ॥ नरक में नरक मांही ॥ नरक में दुख अनन्त गुण अधिका ।
 ॥ १९ ॥ मम्यख भङ्गे । नरक निगोद के भव
 ॥ २० ॥ मम्यख निर्मले किंचित दुःख सही । महा दुःख मेरी
 ॥ २१ ॥ पावश्य अनन्त दुःख मेहे जहां निर्जरा हुई
 ॥ २२ ॥ पावश्य ने जरा मत देखो ॥ देखो

१०८ ॥ १०८ ॥ नाद तेरे विजयराय को । हुंदावी रथो बजाइजी ॥ धन्य ॥ १ ॥
 १०९ ॥ १०९ ॥ यमद करीया । सुगंधी जल बर्शाइ ॥ रत्नाभूषण वस्त्र अत्युत्तम ।
 ११० ॥ ११० ॥ अगाइजी ॥ धन्य ॥ २ ॥ अनेक रूपकर विचित्र देव का । गगन
 १११ ॥ १११ ॥ प्रभारे विजय गुण गाँवे । चाजित्र विविध बजाइजी ॥
 ११२ ॥ ११२ ॥ अहो २ द्रुतना । जे विजयराय में पाइ ॥ ते नहीं पावे
 ११३ ॥ ११३ ॥ विजय जान भाइजी ॥ धन्य ॥ ४ ॥ कोंडोंरूप कर कोंडों
 ११४ ॥ ११४ ॥ गुण न कहाही ॥ आज पवित्र होतुं चरण भेटी । यों कही
 ११५ ॥ ११५ ॥ धन्य ॥ ५ ॥ महा दिव्य रूप वस्त्र भूषणघर । मुक मुगट पद
 ११६ ॥ ११६ ॥ समो देव मुक्त । महा अपराध कीघाइजी ॥ धन्य ॥ ६ ॥
 ११७ ॥ ११७ ॥ मनुज ऊमो । मत्त विरतन्त दर्शाइ ॥ भे परमंस्या किसी कर
 ११८ ॥ ११८ ॥ जिन मराइहो ॥ धन्य ॥ ७ ॥ प्रथम स्वर्गगति जिन चन्दन गये
 ११९ ॥ ११९ ॥ मीमन्थर में इन्द्र प्रभ किया । को मम्यवस्ती भरत

॥ १५ ॥ अतः नृप प्रत्यक्ष देसाइ ॥ प्रभाण जन्म जैन कुल धर्मेने । जे जगे तुम
 ॥ १६ ॥ ॥ धन्य ॥ १६ ॥ में महादुष्ट कुंदेव दयार्हीन । जुलम अति कीयाइ ॥
 ॥ १७ ॥ ॥ धन्य ॥ १७ ॥ मंताप्या कुटुम्ब सहाइजी ॥ धन्य ॥ १७ ॥ एण तुम
 ॥ १८ ॥ ॥ धन्य ॥ १८ ॥ देप जरा न लायाइ ॥ ऐमी द्रढता किंचित मुनि में । तो
 ॥ १९ ॥ ॥ धन्य ॥ १९ ॥ अहो नरेन्द्र धर्मेन्द्र कृपालु । मुक्त रंक
 ॥ २० ॥ ॥ धन्य ॥ २० ॥ स्वमो २ यह सर्व गुन्हाने । अप फिर करुंगा नाहीं हो ॥ धन्य ॥
 ॥ २१ ॥ ॥ धन्य ॥ २१ ॥ दो माफी दान सहाही ॥ एह उपकार न
 ॥ २२ ॥ ॥ धन्य ॥ २२ ॥ महर करो महाराइहो ॥ धन्य ॥ २० ॥ मुक्त लायक चाकरी कर-
 ॥ २३ ॥ ॥ धन्य ॥ २३ ॥ ढाल अष्टदश माहीं अमोलक । मानन्दाश्रय चर-
 ॥ २४ ॥ ॥ धन्य ॥ २४ ॥ ॥ ॥ ॥ संतुष्टी नृप कहे देव को । तुम अपराध
 न लगार ॥ मराग वन्ध्या भोगव्या । न करो कोइ विचार ॥ १ ॥ मुर तरु चि-
 न्नामर्ण्य भारी । अधिक जिनेभर धर्म ॥ मो फल्यों मुक्त हृदय विणे । इममे न

॥ १ ॥ अथ प्रति मोह घटाने । देह पुत्र को राज । मय प्रपंच को छोड़ो करी
 ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ जगत् का प्रत वागेही धाम् । त्यों सुधरे कुट्ट काज
 ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ पान नया पोषे पारी ने । चारो अहार निपजवाय । भाइ पुत्रना
 ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ अति प्रहृष्ट नन्दकुमार ने राज तख्त
 ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ फिर लेह मय की मो आजा । धर्म उपकरण लेये ।
 ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ अने धर्म कृता रेय । नर जगत् नाम प्रमाणे । करे नित्य
 ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ज निपेज निज कुटुम्ब के घर में । उनके निमित्त में
 ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ न नन्द तहाँ जाइ । भागवे धाँडे जे वार । ज्ञान ध्यान में म-
 ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ न करे लगाग्ही ॥ सुणो ॥ १८ ॥ एहो मन्था मय वि-
 ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ नो नो मनीष चिन्तवना ने दीना स्थिर ध्यान
 ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ते नरे एह ब्रह्म तरजी ॥ सुणो ॥ २३ ॥ अहो प्रभु
 ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ प्रहाम्यो जेन धर्म । विना कष्ट जट भल धाम्ने ।

अप जिव मुच्य पमं । तप जप किरिया की न जरूरत धरे ड्रड एकात्मा हो ॥
 तम ॥ अष्टादश दोषण रहित मो । अरिहंत देव कहाय । शुद्धाचारी निर्ममत्व धरी
 निग्रन्थ गुरु गिनाय । सर्व जीवों को एकान्त सुखदाई । धर्म जिनाज्ञा मांय हो ।
 ॥ मुणों ॥ ८ ॥ यह व्यवहारी धर्म तिहुं । तत्व को भव्य जीवों आराधे त्रिशल्य
 त्रिकरण में त्याग । जान जैन मत लाधे । यथा शक्ति वास किरिया निपाइ ।
 आन्मार्थ को मांय हो ॥ तुम ॥ १० ॥ निजात्म निज गुण में तस्त्रो न हो । सो
 ही निश्चय देव जानो । आत्मा ज्ञानानन्द रमण करे । गुरु तेही पहचानो । पर
 परिणति तज निज परिनि ये । रमे सोही धर्म मानो जी ॥ तुम ॥ ११ ॥ यह निश्च-
 यिक तीनों तत्व श्रद्धि । यथा शक्ति में पाल्या । परन्तु ममत्व शरीर की न घटी
 नामें भंगम न धार्या । धिक्कार होवो मेरे प्रमाद को । भव भ्रमण नहीं टाल्या हो
 ॥ तुम ॥ १२ ॥ अनित्य पदार्थ तन अशुचि । कुट्म्व स्वार्थी सारा । शरणदाता
 कोट होवें नाहीं । दुःख निवारण हारा ॥ पुद्गलानन्दी होकर आत्मा अपना भान

विमा ३१ ॥ तुम ॥ १३ ॥ इत्यादि चिन्तन करत अग्रमत स्थान पाई ॥ आगे
 अपर आर्ण पाटुयर्जा । कपाय लाय चुगाई ॥ स्त्रीण मोह को क्रियो विजय जी ।
 शत्रु ध्यान म गमाईयाजो ॥ तुम ॥ १४ ॥ घोर अन्धारी रात्री मांड । अनन्त भानु
 क माद ॥ इवलज्ञान और केवल दर्शन । विजय आत्मे प्रकटाई । जो वस्तु महा
 उष्ट्र न पाय । सो महजे हाथ आहजी ॥ तुम ॥ १५ ॥ पिता से पुत्र यो
 अधिपति निर्माजे । सो संयम ले केवल पाय । इनने तो गृहस्थाश्रम
 साही । ध्यान से केवल कमाया । यो पुण्य की उत्कृष्टता देखो । ध्यान बली
 कमा भाया हो ॥ तुम ॥ १६ साधुलिंग सामणपति देवता तत्क्षीण लाइ दीना ।
 गृही वंश परिहर विजयर्ज । ताहे धारन कीना । ढाल उन्नीसवी कही अमोलक
 विजयर्जा चिन्तन लीनाजी ॥ तुम ॥ १७ ॥ दोहा ॥ केवल महीमा करन को ।
 सुगण अति उमगाय । गगने बाजे देव दुंदुभी । जय २ शब्द गर्जाय ॥ १ ॥
 पुरजन कौतुक देखे ॥ अति आश्चर्य मन लाय । कौन पाये केवल इहां । दर्शने

नर गम धार ॥ २ ॥ आये पापघ जाल में । दिजय अलि चर देख । जाने यही
 देव बननी । पाये हरे विजय ॥ ३ ॥ दिन कर भी तव प्रगटा । मिले सज्जन स-
 च साय । पुरजन आदि परिपदा । बहुत ही तहां भराय ॥ ४ ॥ जग तारन जिन
 गायरी । धर्म देगना करमाय । सो सुणियो ओता सची । लेजो आत्मे रमाय ॥
 ५ ॥ ॥ गान २० मी ॥ मे सुख देखयो गोडो पारस को ॥ यह ॥ चेतो चतुर
 नर गमयक्य धारो । धर्म मे खेवा पारजी ॥ टेर ॥ चार अंग अति दुर्लभ जगमें
 प्रथम नर ययतागजी ॥ चेतो ॥ १ ॥ नव घाटी में अनन्त परावर्तन । किया जन्म
 मरग धारजी ॥ चेतो ॥ २ ॥ अनन्त पुण्ये नर हुआ । पिन सूत्र सुणवो हुकर
 धारजी ॥ चेतो ॥ ३ ॥ मिथ्या वाणी खोटी कहानी । सुण अनंतवारजी ॥ चेतो
 ॥ ४ ॥ धीरजनवाणी सुणके अद्भ । सोही सम्यक्त्व उचारजी ॥ चेतो ॥ ५ ॥ कुश्रदा और
 योग मिथ्या गल्य सोभमा अनन्त संसार जी ॥ चेतो ॥ ६ ॥ चोथा बोल अद्भ
 क मर्जना । यथा शक्तियानुसार जी ॥ चेतो ॥ ७ ॥ ज्ञान सहित चारित्र पाले

तो । हो जावे खेवा पार जी ॥ चेतो ॥ ८ ॥ समा मुक्ति अज्जु ने मारिब । ला-
 घव मन्य मेयम भार जी ॥ चे० ॥ ९ ॥ तप ज्ञान ब्रह्मचर्य धारे तो । निश्चय खेवा
 पार जी ॥ चे० ॥ १० ॥ ज्ञान दर्शन चरन त्रय रत्न यह । करे आत्म निस्तार
 जी ॥ चे० ॥ ११ ॥ आत्मिक गुण तज प्रणति रमणता । मोही . रत्नावनहार जी
 ॥ चे० ॥ १२ ॥ ममत्व बन्धे जो बन्धे जकडी । वो कैसे छुटकार जी ॥ चे० ॥
 १३ ॥ जो छेद अंगेहीत मच्छ पर । तम खुल्ला शिव द्वार जी ॥ चेतो० ॥ १४ ॥
 यह तन प्रत्यक्ष अशुचि का कूडा । धर्म करे तो होवे उद्धार जी ॥ चेतो ॥ १५ ॥
 अमार मे मार निकले मो निकाले । जो तुम हो होंशार जी ॥ चे० ॥ १६ ॥
 येही तन हे मोक्ष का कारण । कार्य हेतु सो लेवो धार जी ॥ चे० ॥ १७ ॥ अ-
 पूर्ण और महा लाभ दाता । यह अवसर श्रेयकार जी ॥ चेतो ॥ १८ ॥ अलभ्य
 लाभ लभ्य हुयो लुटो । मरणो अभी ही विचार जी ॥ चेतो ॥ १९ ॥ गढ़ बह्म

जी । एक लज वर्ष आयु पार ॥ अनसनी हो द्रढासनी । किया अधातिक कर्म
 द्यार जी ॥ पधार मोक्ष मन्हार जी । हुवे अजरापर अविकार जी ॥ अनन्त
 अजर मुक्त लैन मार जी । कृत कृतार्थता यही धार जी ॥ श्री ॥ ८ ॥ जय
 पुण्य अर्द्ध हृद्वा जी । पहेंता सर्वार्थसिद्ध मांय ॥ एकावतारी उत्कृष्ट सुखी ।
 महा विद्वद् मे मोक्ष भिधाय जो ॥ और सर्वो स्वर्ग जाय जी । अतुल्य महा सुख
 भुक्ताय जी ॥ थोडा ही भवन्तर मांय जी । पायसी शिव सुख सदाय जी ॥ श्री
 ॥ ९ ॥ आत्म मंदर्न विगुद्ध करी । तामे विनय बीज बोधाय ॥ शील कोट से
 धर कर । विविध ज्ञान वर्गाचा वनाय जी ॥ महाप्रत वाडी फूलाय जी । समता
 रूप होइ सुखदाय जी ॥ जमा रूप नीर भराय जी । वैराग्य रंग दे दोलाय जी
 ॥ श्री ॥ १० ॥ मट्ठबोध पिचकारी भर करी । सुमति गुप्ति सहेली संग ॥ सभाय
 चार्जित्र भाणहार मे । हुवे अनहद नाद मे चंगजी । खेले उत्सव विजय सुरंगजी
 पाये मो सुध अंभंगजी । वनो येही आत्म प्रसंगजी ॥ श्री ॥ ११ ॥ ज्यो विजय जी

जी । होवे सर्व लाभ दातारजी । येही प्राप्त पदार्थ सारजी ॥ श्री ॥ १५ ॥ श्रीवीर
 निर्वाण मंत्रमरा वीते चौवीस सो सप्तवीस । विक्रम उन्नीससो अठावने देश
 दर्शण सुपुर्नाश जी ॥ घोड नदी ग्राम धर्माधीश जी ॥ रहे चतुर मांस सु जगी-
 म जी । शुभ विजय दशमी के दीस जी । यह पूर्ण हुइ मुक्त जगीस जी ॥ श्री
 ॥ १६ ॥ मती शिरोमणी महास्ती जी । श्री रामकर जी जान । तस अनुज्ञ ए
 रच्यो । यह सम्यक्त्वोत्सव मण्ड जी ॥ सम्यक्त्व सब गुणों की स्नान जी ।
 चिन्नामर्णा काम कुंभ समान जी ॥ पूरे इच्छा देइ इष्ट दान जी । जय जय सदा
 अमोल धर्मवान जी ॥ श्री समकित उत्सव सुखदा सदा ॥ १७ ॥ ॐ ॥

॥ कळश ॥ हरीगीत छन्द ॥

ॐ नमो अर्ह सिध सहू । सर्वज्ञ प्रणित जैन धर्म जी ॥
 चारों शरण येह सदा मुम्ने । चाँदित सुख देवे परम जी ॥

•

•

